kanwhizztimes
@kanwhizztimes lucknow
@kanwhizztimes
www.kanwhizztimes.com

कैनविज टाइम्स

सिर्फ सच

वर्ष-13 | अंक-302 | सोमवार, 02 दिसम्बर 2024 | नगर संस्करण | लखनऊ से प्रकाशित एवं दिल्ली, पंजाब और उत्तराखंड में प्रसारित | मूल्य- ₹ 3.00 | पृष्ठ-12

सीमा सुरक्षा बल को उनके स्थापना दिवस पर हार्दिक शुभकामनाएं! बीएसएफ रक्षा की महत्वपूर्ण पंक्ति के रूप में खड़ा है, जो साहस, समर्पण और असाधारण सेवा का प्रतीक है। उनकी सतर्कता और साहस हमारे राष्ट्र की सुरक्षा और संरक्षा में योगदान करते हैं। नरेन्द्र मोदी

तेलंगाना मुठभेड़ में नक्सली नेता समेत सात माओवादी ढेर 11

उत्तराखंड की योग नीति से बदलेगी राज्य की तस्वीर 12

संक्षेप

बिजली निजीकरण के विरोध से कुंभ में विद्युत व्यवधान का डर

लखनऊ। यूपी में बिजली कंपनियों के निजीकरण के विरोध में कर्मचारी संगठनों की लामबंदी उत्तर प्रदेश पावर कारपोरेशन के लिए सिरदर्द बनता नजर आ रहा है। प्रबंधन को यह डर सता रहा है कि यदि कहीं कर्मचारी हड़ताल पर चले गए तो प्रयागराज कुंभ की बिजली व्यवस्था कैसे संभलेगी। बताया जाता है कि कुंभ में जिन विद्युत कर्मियों की ड्यूटी लगी है, उनसे यह लिखित में लिया जा रहा है कि वह हड़ताल होने पर भी उसमें शामिल नहीं होंगे। बिजली महकमे में पावर कारपोरेशन प्रबंधन का यह फरमान चर्चा का विषय बना हुआ है। विद्युत कर्मचारी संघर्ष समिति के चेयरमैन ने प्रबंधन के इस फरमान को सोशल मीडिया प्लेटफार्म पर डाला है। जिसमें उन्होंने लिखा है कि उत्तर प्रदेश पावर कारपोरेशन के चेयरमैन ने कुंभ मेले के भ्रमण के दौरान मुख्य अभियंता को निर्देश दिए हैं कि जितने लोग कुंभ मेले में लगे हैं, उनसे लिखित में ले लें कि वह हड़ताल में शामिल नहीं होंगे। जिसको हड़ताल में शामिल होना है, वह कुंभ मेला क्षेत्र से चला जाए। हड़ताल से निपटने की पूरी तैयारी की जा चुकी है।

सीएम का नाम तय, बस शीर्ष नेतृत्व की मंजूरी का इंतजार : रावसाहेब दानवे

मुंबई। भाजपा नेता रावसाहेब दानवे ने रविवार को अपने एक बयान में कहा कि महाराष्ट्र के नए मुख्यमंत्री का नाम तय हो गया है और अब बस पार्टी के शीर्ष नेतृत्व की मंजूरी का इंतजार है। पूर्व केंद्रीय मंत्री दानवे ने किसी का नाम लिए बिना कहा कि महाराष्ट्र के लोग जानते हैं कि अगला सीएम कौन होगा। गौरतलब है कि महाराष्ट्र भाजपा के अध्यक्ष चंद्रशेखर बावनकुले ने शनिवार को एक सोशल मीडिया पोस्ट के ज़रिए बताया था कि महायुति सरकार का शपथ ग्रहण समारोह पांच दिसंबर को दक्षिण मुंबई के आजाद मैदान पर होगा। हालांकि बावनकुले ने ये नहीं बताया कि सीएम पद की शपथ कौन लेगा। ऐसे में महाराष्ट्र के नए सीएम को लेकर संशय बरकरार है। मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार, महाराष्ट्र के अगले सीएम की रेस में देवेंद्र फडणवीस का नाम सबसे आगे है। वह दो बार राज्य के सीएम और पिछली सरकार में डिप्टी सीएम रह चुके हैं। चुनाव नतीजों के बाद एकनाथ शिंदे और देवेंद्र फडणवीस सीएम पद की रेस में थे, लेकिन कुछ दिन पहले एकनाथ शिंदे ने भी ऐसे संकेत दे दिए थे कि उन्हें भाजपा की मुख्यमंत्री मंजूर है। उसके बाद ऐसा माना जा रहा था कि जल्द ही देवेंद्र फडणवीस की ताजपोशी हो जाएगी, लेकिन दिल्ली में अमित शाह से मुलाकात के बाद जिस तरह से एकनाथ शिंदे अचानक से अपने सतारा स्थित गांव पहुंचे, उसके बाद अटकलों का दौर शुरू हो गया। ऐसा कहा गया कि एकनाथ शिंदे नई सरकार के गठन से खुश नहीं हैं। अपने गांव पहुंचकर शिंदे की तबीयत भी खराब हो गई। हालांकि अब शिंदे के रविवार शाम तक मुंबई लौटने की चर्चा है।

आबादी का घटना चिंता का विषय : भागवत

एजेंसी

दो या तीन बच्चे पैदा करना जरूरी, वृद्धि दर 2.1% से नीचे तो समाज नष्ट हो जाएगा

नागपुर। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक मोहन भागवत ने जनसंख्या नीति को लेकर अहम बयान दिया है। उन्होंने रविवार को महाराष्ट्र में आयोजित एक कार्यक्रम में कहा कि यह जरूरी है कि जनसंख्या की औसत वृद्धि दर 2.1 से नीचे न जाए। हमारे लिए यह जरूरी है कि दो या तीन बच्चे पैदा किए जाएं। ऐसा जनसंख्या विज्ञान कहता है और यदि औसत आंकड़ा 2.1 का ही रहा तो फिर बिना किसी खतरे के ही पृथ्वी से मानवता समाप्त हो जाएगी। आबादी यदि ऐसे ही कम होने की दर बनी रही तो फिर कई भाषाएं और सभ्यताएं खत्म होने के कगार पर पहुंच जाएंगी।

मोहन भागवत ने कहा, 'आबादी का घटना चिंता का विषय है। आधुनिक जनसंख्या विज्ञान कहता है कि जब जन्म दर 2.1 से नीचे जाती है तो फिर धरती से मानवता ही खत्म होने का खतरा पैदा हो जाता है। ऐसी स्थिति में समाज खत्म हो जाता है, जबकि उसके आगे कोई प्रत्यक्ष संकट नहीं होता। ऐसी स्थिति में कई भाषाओं और सभ्यताओं के खत्म होने का खतरा होता है। देश की जनसंख्या नीति 1998 या 2002 में तय हुई थी। जनसंख्या की औसत वृद्धि दर 2.1 से कम नहीं होनी चाहिए। हमारे लिए यह जरूरी है कि दो या तीन बच्चे हों। आबादी की जरूरत है क्योंकि समाज का अस्तित्व रहना चाहिए।'

आरएसएस की ओर से कई बार यह बात दोहराई जा चुकी है कि देश में जनसंख्या का असंतुलन बढ़ रहा है। खासतौर पर हिंदुओं की आबादी का प्रतिशत भारत में कम होने को लेकर मोहन भागवत कई बार चिंता जता चुके हैं। वह कहते रहे हैं कि भारत में हिंदुओं का बहुसंख्यक रहना जरूरी है और देश के मूल्य इसी के चलते सुरक्षित बने हुए हैं। गौरतलब है कि कई रिपोर्ट्स में यह कहा जा चुका है कि मुस्लिमों की आबादी का प्रतिशत आजादी के बाद से अब तक बढ़ा है, जबकि हिंदुओं की आबादी का प्रतिशत 80 के करीब आ चुका है, जो कभी 88 के आसपास था। गौरतलब है कि अक्टूबर 2021 में भागवत ने जनसंख्या दर में अंतर के कारण मुस्लिम आबादी बढ़ी विजयादशमी उत्सव के दौरान संघ प्रमुख ने कहा कि वर्ष 1951 से 2011 के बीच जनसंख्या वृद्धि शेष पेज 11 पर

आंध्र प्रदेश और तमिलनाडु के मुख्यमंत्रियों ने भी की थी लोगों से ज्यादा बच्चे पैदा करने की अपील

यूएन की रिपोर्ट पर चिंता जताते हुए तमिलनाडु और आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्रियों ने भी लोगों को ज्यादा बच्चे पैदा करने को कहा था। आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री चंद्रबाबू नायडू ने बूढ़ी होती जनसंख्या को लेकर चेतावनी देते हुए कहा था कि उनकी सरकार बड़े परिवारों को प्रोत्साहन देने और पुराने जनसंख्या रोधी उपायों को पलटने के लिए कानून बनाने पर विचार कर रही है। उन्होंने कहा कि बुजुर्ग आबादी में बढ़ोतरी के चलते राज्य की इकोनॉमी पर बोझ पड़ सकता है, जैसा कि जापान, चीन और यूरोप के कई हिस्सों में हो रहा है, जहां युवाओं से ज्यादा बुजुर्गों की संख्या है। नायडू ने यह भी कहा कि दक्षिणी राज्यों में प्रजनन दर 1.6 हो गई है, जो राष्ट्रीय औसत 2.1 से कम है। वहीं, तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एमके स्टालिन ने भी राज्य के लोगों को ज्यादा बच्चे पैदा करने को कहा। चेन्नई में एक शादी समारोह में उन्होंने कहा कि लोगों को 16 तरह के धन का संचय करने की जगह 16 बच्चे पैदा करने पर ध्यान देना चाहिए।

संभल हिंसा: घटनास्थल पर पहुंची न्यायिक आयोग की टीम, ढाई घंटे तक की जांच

एजेंसी

संभल। जामा मस्जिद सर्वे के दौरान हिंसा की जांच के लिए शासन द्वारा गठित न्यायिक आयोग की तीन सदस्यीय टीम सुबह 10:30 बजे संभल पहुंची। टीम ने घटनास्थल से अपनी जांच शुरू की। इस दौरान कड़ी सुरक्षा व्यवस्था रही। टीम ने उन सभी स्थानों पर जाकर जांच की जहां पथराव व आगजनी की घटनाएं हुई थीं। इसके बाद टीम शाही जामा मस्जिद पहुंची। यहां भी कमेटी के सदर से भी जानकारी की। जांच टीम ने संभल के डाक बंगले में मंडल एंव जिला स्तरीय अधिकारियों के साथ बैठक भी की। टीम करीब ढाई घंटे तक संभल में रही।

इसके बाद टीम मस्जिद के अंदर गई। करीब 15 मिनट मस्जिद के अंदर देखने के बाद बाहर आई और बाजार में पैदल भ्रमण करते हुए कोतवाली पहुंची। जिसके बाद टीम एकता चौकी, फिर एकता चौराहा देखने के बाद हिन्दुपुरा खेड़ा चौराहे पहुंची। जहां बलवा क्षेत्र का भ्रमण करने के बाद टीम पीडब्ल्यूडी गेस्ट हाउस आ गई। इस दौरान हर स्थान पर भारी संख्या में पुलिस बल मौजूद रहा। टीम को देखने के लिए लोगों की भीड़ लगी रही। दो घटने संभल में रहने के बाद जांच टीम वापस मुरादाबाद को शेष पेज 11 पर

अमेरिका को औपचारिक अनुरोध भेजेगी सीबीआई

नई दिल्ली। केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो (सीबीआई) जल्द ही बोफोर्स मामले में निजी जासूस माइकल हर्शमैन से जानकारी हासिल करने के लिए अमेरिका को एक औपचारिक अनुरोध भेजेगा। हर्शमैन ने 1980 के दशक में हुए 64 करोड़ रुपये के कथित बोफोर्स रिश्वत घोटाले के बारे में अहम जानकारी भारतीय एजेंसियों के साथ साझा करने की इच्छा जाहिर की थी। अधिकारियों ने रविवार को यह जानकारी दी। सीबीआई ने एक विशेष अदालत को इस घटनाक्रम की जानकारी दी है, मामले की जांच के लिए एजेंसी की याचिका पर सुनवाई कर रही है। अधिकारियों के मुताबिक, इस साल अक्टूबर में लेटर रोगेटरी (एलआर) की प्रक्रिया शुरू हुई और अमेरिका को औपचारिक अनुरोध भेजने में तीन शेष पेज 11 पर

सरकार ने प्रदेश को बनाया स्वस्थ्य प्रदेश, देश में पेश की मिसाल

कैनविज टाइम्स ब्यूरो

- प्रदेश के 352 सीएचसी को एफआरयू सुविधा से किया गया लैस, 72 स्वास्थ्य इकाइयों को सोलर से पहुंचायी जा रही बिजली
- पिछले एक वर्ष में 10 हजार उपकेंद्रों को बिजली की सुविधा से किया गया लैस, सभी जिलों में दी जा रही डायलिसिस की सुविधा

लखनऊ। योगी सरकार के पिछले साढ़े सात वर्षों के कार्यकाल में प्रदेश में हेल्थ सेक्टर के इंफ्रास्ट्रक्चर से लेकर वर्क फोर्स समेत अन्य सुविधाओं में काफी इजाफा हुआ है। साथ ही वर्तमान में प्रदेशवासियों को सुगम, सस्ता और गुणवत्तापूर्ण इलाज उपलब्ध कराया जा रहा है। सीएम योगी की मॉनीटरिंग का ही नतीजा है उत्तर प्रदेश, जो कभी 'बीमारू प्रदेश' के नाम से जाना जाता था, आज स्वास्थ्य सेवाओं के क्षेत्र में नई ऊंचाइयों को छू रहा है। वर्ष 2017 में सत्ता संभालने के बाद से, योगी सरकार ने प्रदेश के स्वास्थ्य ढांचे को मजबूत करने के लिए कई ऐतिहासिक कदम उठाए हैं। इन्हीं प्रयासों का नतीजा है कि प्रदेश में स्वास्थ्य सुविधाओं का अभूतपूर्व विस्तार हुआ है। राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन की मिशन निदेशक डॉ. पिंकी शेष पेज 11 पर

अजमेर दरगाह सर्वेक्षण

पूर्व नौकरशाहों ने मोदी को लिखा पत्र, 'अवैध' गतिविधियों पर रोक लगाने की मांग

एजेंसी

नयी दिल्ली। एक स्थानीय अदालत की ओर से अजमेर शरीफ दरगाह के सर्वेक्षण का आदेश देने के कुछ दिनों बाद पूर्व नौकरशाहों और राजनयिकों के एक समूह ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को पत्र लिखकर उन सभी ''अवैध और हानिकारक'' गतिविधियों को रोकने लगाने के लिए हस्तक्षेप की मांग की है, जो भारत की सभ्यतागत विरासत पर ''वैचारिक हमला'' हैं और एक समावेशी देश के विचार को विकृत करती हैं।

समूह ने दावा किया कि सिर्फ प्रधानमंत्री ''सभी अवैध, हानिकारक गतिविधियों'' को रोक सकते हैं। उसने मोदी को याद दिलाया कि उन्होंने खुद 12वीं शताब्दी के संत ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती के वार्षिक उर्स के अवसर पर शांति और सद्भाव के उनके संदेश को सम्मान देते हुए चादर भेजी थी। समूह में दिल्ली के पूर्व उपराज्यपाल नजीब जंग, ब्रिटेन में भारत के पूर्व उच्चायुक्त शिव मुखर्जी, पूर्व मुख्य चुनाव आयुक्त एसवाई कुरैशी, सेना के पूर्व उप-प्रमुख लेफ्टिनेंट जनरल जमीरुद्दीन शाह और भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) के पूर्व डिप्टी गवर्नर रवि वीरा गुप्ता शामिल हैं। उन्होंने 29 नवंबर को प्रधानमंत्री को भेजे पत्र में कहा कि कुछ अज्ञात शेष पेज 11 पर

'वक्फ की कितनी संपत्तियों पर है कब्जा'

एजेंसी

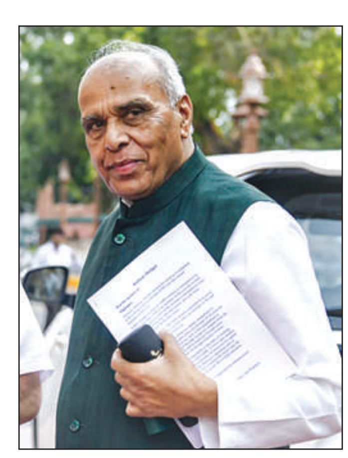

- वक्फ विधेयक: संसदीय समिति ने राज्य सरकारों के 'अनधिकृत' कब्जे वाली संपत्तियों की जानकारी मांगी

नई दिल्ली। वक्फ (संशोधन) विधेयक पर विचार कर रही संसदीय समिति ने विभिन्न राज्य सरकारों से वक्फ संपत्तियों की प्रामाणिकता और अद्यतन विवरण के बारे में जानकारी मांगी है। जिन्हें सच्चर समिति ने अनधिकृत कब्जे वाली संपत्ति बताई थी। आपको बता दें कि, संसदीय समिति का कार्यकाल लोकसभा द्वारा अगले बजट सत्र के आखिरी दिन तक बढ़ा दिया गया था। समिति ने वक्फ अधिनियम की धारा 40 के तहत राज्यों से वक्फ बोर्ड द्वारा दावा की गई संपत्तियों का विवरण भी मांगा है।

2013 में कांग्रेस के नेतृत्व वाली संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन (यूपीए) सरकार के दौरान धारा 40 को संशोधित किया गया था। जो मौजूदा कानून के सबसे विवादास्पद पहलुओं में से एक है, क्योंकि इसने वक्फ बोर्डों को यह तय करने की शक्ति दी गई है कि कोई संपत्ति मौजूद है या नहीं। वक्फ का है या नहीं। प्रस्तावित कानून मौजूदा कानून में कई अन्य बदलाव करके इस अधिकार को सीमित करने का प्रयास करता है।

सूत्रों की ओर से बताया गया है कि संसदीय समिति ने सच्चर समिति द्वारा उन वक्फ संपत्तियों के बारे में उठाए गए बिंदुओं पर अद्यतन जानकारी मांगने का निर्णय लिया है, जो राज्य सरकारों या उनकी आधिकारिक एजेंसियों के कथित तौर पर अनधिकृत कब्जे में हैं। सच्चर समिति को 2005-06 के दौरान विभिन्न राज्य वक्फ बोर्ड द्वारा कथित अनधिकृत कब्जे के बारे में सूचित किया गया था। संसदीय समिति केंद्रीय अल्पसंख्यक कार्य मंत्रालय के माध्यम से राज्यों से जानकारी एकत्र कर रही है। सूत्रों ने बताया कि भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) सांसद जगदम्बिका पाल की अध्यक्षता वाली समिति ने पाया है कि 2005-06 में सच्चर समिति को दी गई रिपोर्ट में दिल्ली में 316, राजस्थान में 60 और कर्नाटक में 42 ऐसी संपत्तियों के बारे में बताया गया था। इनमें से 53 मध्य प्रदेश में, 60 उत्तर प्रदेश में और 53 ओडिशा में थे। सूत्रों ने बताया कि समिति ने इन सभी छह राज्यों से अद्यतन जानकारी मांगी है। उन्होंने बताया कि समिति को कई अन्य राज्यों से भी जानकारी मिली है। एक सूत्र ने पत्र का हवाला देते हुए बताया कि, उपर्युक्त राज्यों के शेष पेज 11 पर

'यूपी के गौरव' का सम्मान करेगी सरकार

लखनऊ। योगी सरकार की तरफ से विश्व दिव्यांग दिवस (3 दिसंबर) को लोकभवन सभागार में राज्य स्तरीय पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया जाएगा। इस विशेष आयोजन में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहेंगे। कार्यक्रम का उद्देश्य दिव्यांगजनों के सशक्तिकरण और समाज में उनकी भूमिका को प्रोत्साहित करना है। इसमें दिव्यांगजन सशक्तिकरण विभाग के राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) नरेंद्र कश्यप की भी उपस्थिति रहेगी। समारोह में 19 लोगों को सम्मानित किया जाएगा।

कार्यक्रम में उत्कृष्ट दिव्यांग व्यक्तियों, दिव्यांगता के क्षेत्र में कार्य करने वाले विशिष्ट व्यक्तियों, स्वैच्छिक संगठनों और दिव्यांग खिलाड़ियों को राज्य स्तरीय पुरस्कार प्रदान किए जाएंगे। इस वर्ष वाराणसी जिले को पुनर्वास सेवाएं प्रदान करने में सर्वश्रेष्ठ जिला चुना गया है। इसके लिए वहां के जिलाधिकारी को सम्मानित किया जाएगा। मुख्य विकास अधिकारी मुरादाबाद सुमित शेष पेज 11 पर

डॉलर इस्तेमाल नहीं करने पर लगेगा 100% शुल्क

ट्रंप की ब्रिक्स देशों को चेतावनी

एजेंसी

वाशिंगटन। अमेरिका के नवनिर्वाचित राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने अमेरिकी डॉलर की जगह किसी दूसरी मुद्रा के इस्तेमाल को लेकर ब्रिक्स देशों को चेतावनी दी।

ट्रंप ने भारत, रूस, चीन और ब्राजील समेत नौ देशों के समूह ब्रिक्स से यह वादा करने को कहा कि वे ऐसा नहीं करेंगे। साल 2009 में स्थापित ब्रिक्स एकमात्र बड़ा अंतरराष्ट्रीय समूह है, जिसमें अमेरिका शामिल नहीं है। ब्रिक्स के अन्य सदस्य दक्षिण अफ्रीका, ईरान, मिस्र, इथोपिया और संयुक्त अरब अमीरात हैं। बीते कुछ वर्षों में ब्रिक्स देश, विशेष रूप से रूस और चीन, अमेरिकी डॉलर के विकल्प के तौर पर ब्रिक्स की अपनी मुद्रा लाने की कोशिश कर रहे हैं। हालांकि भारत अभी तक ऐसे किसी कदम में शामिल नहीं रहा है। ट्रंप ने शनिवार को ब्रिक्स देशों को ऐसे किसी भी कदम को लेकर आगाह किया। ट्रंप ने सोशल मीडिया मंच 'ट्रुथ सोशल' पर लिखा, ब्रिक्स देश डॉलर से दूर जाने की कोशिश करें और हम मूकदर्शक बनकर देखते रहें, वह दौर अब समाप्त हो चुका है। उन्होंने कहा, हम चाहते हैं कि ये देश वादा करें कि वे न तो नयी ब्रिक्स मुद्रा बनाएंगे, न ही शक्तिशाली अमेरिकी डॉलर की जगह किसी अन्य मुद्रा का समर्थन करेंगे, अन्यथा उन पर 100 प्रतिशत शुल्क लगाया जाएगा और उन्हें अद्भुत अमेरिकी बाजारों में अपना सामान बेचने की उम्मीद छोड़ देनी होगी।

अब तक सात 3 लाख 84 हजार शादियां करा चुकी सरकार : मुख्यमंत्री

दहेज प्रथा पर प्रहार सामूहिक विवाह कार्यक्रम

एजेंसी

उपलब्धि

- सामूहिक विवाह समारोह में सम्मिलित हुए मुख्यमंत्री, नव दम्पतियों को दिया आशीर्वाद
- मुख्यमंत्री सामूहिक विवाह कार्यक्रम में 1200 जोड़े बंधे विवाह के पवित्र बंधन में

गोरखपुर। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि प्रदेश सरकार के समाज कल्याण विभाग की तरफ से होने वाला मुख्यमंत्री सामूहिक विवाह कार्यक्रम एक तरफ सामाजिक समता का प्रतीक है तो वहीं दूसरी तरफ यह समाज की बड़ी विकृति दहेज प्रथा पर प्रहार भी है। सामूहिक विवाह कार्यक्रम में जाति, मत, मजहब, क्षेत्र, भाषा का कोई बंधन नहीं है। हिंदू, मुस्लिम या अन्य मतावलंबी, सभी अपनी-अपनी परंपरा के अनुरूप विवाह के पवित्र बंधन में जुड़ रहे हैं। साथ ही यह कार्यक्रम दहेज, बाल विवाह और अस्पृश्यता के खिलाफ सरकार द्वारा शुरू की गई एक लड़ाई और अभियान भी है।

सीएम योगी रविवार को हिंदुस्तान उर्वरक एवं रसायन लिमिटेड (खाद कारखाना) के परिसर में 1200 जोड़ों के मुख्यमंत्री सामूहिक विवाह समारोह को संबोधित कर रहे थे। कार्यक्रम में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि कई बार दहेज के कारण योग्य कन्याएं विवाह बंधन से नहीं जुड़ पाती थीं, ऐसे में सामूहिक विवाह कार्यक्रम से जुड़ने वाले सभी युवक-युवतियों ने दहेज न ले-दे कर समाज में आदर्श प्रस्तुत किया है। उन्होंने बताया कि प्रदेश सरकार मुख्यमंत्री सामूहिक विवाह योजना के तहत वर्ष 2017 से अब तक सात साल में 3 लाख 84 हजार शादियां करा चुकी है। यह सत्र संपन्न होने पर यह संख्या 4 लाख से अधिक हो चुकी होगी। सीएम योगी ने कहा कि गरीब बेटियों को दहेज के भेड़ियों से बचाने के लिए मुख्यमंत्री सामूहिक विवाह के कार्यक्रम हर जिले में हो रहे हैं। सरकार की मंशा है कि कोई बेटी दहेज के कारण अनव्याही न रहे। इसके लिए ही सामूहिक विवाह कार्यक्रम को अभियान रूप में चलाया जा रहा है।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि जब अच्छी सरकार होती है तो अच्छे कार्य होते हैं। 2014 में जब नरेंद्र मोदी प्रधानमंत्री बने तो उन्होंने अच्छे कार्यों की श्रृंखला खड़ी कर दी। महिलाओं के लिए बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ जैसी योजना चलाई, नारी गरिमा की रक्षा के लिए गांव-गांव, घर-घर व्यक्तिगत शौचालय बनवाए। मुफ्त रसोई गैस कनेक्शन दिए, मुफ्त राशन और जिनके पास आवास नहीं तेज उन्हें आवास दिए। बीमारी के उपचार के लिए पांच लाख रुपये तक के इलाज लिए आयुष्मान कार्ड दिए। जबकि पहले घरों में शौचालय न होने से नारी गरिमा पर आंच आती थी। लकड़ी और कोयले के धुंए से निकलने वाली खतरनाक गैस से महिलाओं की आंख और फ़ेफड़े खराब होते थे। आज हर घर सिलेंडर होने से यह दिक्कत दूर हो ही गई है, साथ ही सरकार दिवाली और होली में मुफ्त सिलेंडर दे रही है। सीएम ने कहा कि सरकार हर तबके को लाभान्वित कर रही है। श्रमिकों के बच्चों की मुफ्त शिक्षा के लिए अटल आवासीय विद्यालय चल रहे हैं, निराश्रित, दिव्यांगजन आदि 1 करोड़ लोगों को 12 हजार रुपये सालाना पेंशन दिया जा रहा है। कन्या सुमंगला योजना के तहत 20 लाख बेटियों के स्वावलंबन के शेष पेज 11 पर

उपचुनाव में करारी हार के बाद बौखलाए हुए हैं अखिलेश यादव : केशव प्रसाद मौर्य

❒ यूपी में सपा होगी सफा : केशव प्रसाद मौर्य

कैनविज टाइम्स संवाददाता

लखनऊ। उत्तर प्रदेश के उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने विपक्ष पर हमला बोलते हुए कहा कि सपा मुखिया अखिलेश यादव और उनके समर्थक उपचुनाव में करारी हार के बाद पूरी तरह से निराश और बौखलाए हुए हैं।

जनता ने उनके सत्ता के सपने तोड़ दिए और 'सत्ताइस का सत्ताधीश' बनने का उनका दावा पूरी तरह ध्वस्त कर दिया। उप मुख्यमंत्री ने सोशल मीडिया एकाउंट एक्स पर लिखा कि राजनीतिक आधार खोने के बाद अब सपा ने प्रदेश में अशांति फैलाने और अराजकता पैदा करने की साजिशें शुरू कर दी हैं।

संभल में हुआ दंगा सपा की इसी साजिश का हिस्सा है, जिसके असली सूत्रधार और 'फर्जी पीडीए' के संचालक स्वयं अखिलेश यादव हैं। अपनी चुनावी विफलता छुपाने के लिए इस तरह के प्रयास कर प्रदेश के शांतिपूर्ण माहौल को बिगाड़ने और प्रगति को बाधित करने की कोशिश की जा रही है। लेकिन सपाई गुंडों और दंगाई तत्वों को यह समझ लेना चाहिए कि उनकी चालें अब सफल नहीं होंगी। केशव प्रसाद मौर्य ने कहा कि योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व वाली भाजपा सरकार में कानून-व्यवस्था से खिलवाड़ करने वालों के खिलाफ सख्त क़ानूनी कार्रवाई होगी। भाजपा सरकार उत्तर प्रदेश को विकास, सुरक्षा और समृद्धि की ओर अग्रसर कर रही है। अराजकता फैलाने वालों के लिए यहां कोई स्थान नहीं है। ललसपा होगी सफा, और प्रदेश प्रगति के मार्ग पर निर्बाध रूप से आगे बढ़ेगा।

यातायात नियमों की उड़ रही धज्जिया

❒ ग्रामीण क्षेत्रो मे नहीँ रह गया कोई कार्रवाही का खौफ

❒ ओबर लोड के चलते आयेदिन होती है दुर्घटना

कैनविज टाइम्स संवाददाता

कोरांव प्रयागराज। कोरांव पुलिस द्वारा समय समय पर डग्गामार वाहनों पर चालान जुर्माना की कार्रवाही किया जाता रहता है साथ ही ओबरलोड सवारी बैठाकर न चलने के लिए हिदायत दिया जाता है इसके बावजूद कोरांव क्षेत्र मे डग्गामार वाहन के चालक मालिक चोरी छुपे ओवर लोड सवारी आगे पीछे ऊपर लटका व बैठाकर चल रहे है जब पुलिस की गुजरते गाडी को देखते है तो वाहन रोक कर सवारी को कार्रवाही सें बचने के लिए उतार देते है यहीं मुख्य वजह है की क्षमता सें ज्यादा सवारी बैठाकर चलने सें आयेदिन दुर्घटना होती है न मालूम कितने घरो का परिवार उजड़ चूका है इसके बावजूद खुद मोटर मालिक या चालक के अंदर समझदारी का जु नहीँ रेग रहा वही दूसरी तरफ गांव गिराव सें जीप, ई रेक्सा, बस आदि छोटे बड़े वाहन कोरांव कस्बा के मुख्य मार्ग जैसे गोपाल विद्यालय के पास, मोती नगर नहर के पास, मांडा वाली रोड स्टेट बैंक के आसपास, कोरांव कोहडार रोड नगर पंचायत कोरांव कार्यालय के आसपास वाहन खड़ा करके सवारी बैठाने का काम करते है जिससे कस्बा कोरांव मे जाम की स्थिति आयेदिन बना रहता है साथ ही वाहन बगल करने को लेकर भी मारपीट की नौबत आ जाती है इसी प्रकार कोरांव बड़ोखर , रत्योरा, देवघाट रामगढ़ आदि स्थानों सें गुरजने वाले अधिकांश बस मे प्रेसर हार्न लगा हुआ है जिससे स्थानीय लोगो मे काफी तेज ध्वनि के कारण नाराजगी है जबकि योगी सरकार का सख्त फ़रमान है की कोई भी डग्गामार वाहन मुख्य मार्गो पर खड़ा होकर जाम न लगाये साथ यदि प्रेसर हार्न लगा है तो उसे तत्काल उतरवा दे यह निर्देश सरकार पहले सें पुलिस को दे रखी है इतना ही नहीँ बहुत सारे ऐसे वाहन है जिनके आगे नंबर प्लेट है तो पीछे अधिकांश नहीँ लगा रहता जिससे यदि किसी को दुर्घटना ग्रस्त कर दे तो पीछे सें कोई नंबर गाड़ी का न नोट कर पाये ऐसी चालाकी जानबूझकर करते है इसके साथ गैर फिटनेस प्रपत्र मानक बिहीन वाहन धड़ल्ले सें चल रहे है स्थानीय लोगो ने प्रभारी निरीक्षक थाना कोरांव का ध्यान आकृस्ट कराते हुये कार्रवाही कराने की माँग की है ।

हिन्द साम्राज्य पार्टी की हुई बैठक मे अहम बिंदुओं पर हुई चर्चा

लखनऊ। जानकीपुरम को स्थित होटल शौर्य इन में हिन्द साम्राज्य पार्टी की कोर कमिटी की आधिकारिक बैठक संपन्न हुई। पार्टी के उद्देश्यों और कार्यशैली को लेकर लोगों में भरपूर उत्साह एवं प्रसन्नता थी और उपस्थित लोगों ने एकमत से इसका समर्थन किया। राष्ट्रवाद, हिंदुओं की एकता, भारत की अखंडता और सुरक्षा की विचारधारा को प्रखरता से आगे बढ़ाने के साथ साथ आम हिन्दू जनमानस को आर्थिक रूप से सशक्त करने पर चर्चा हुई और इसके लिए एक इकोसिस्टम तैयार हो इस पर भी मंथन हुआ।हिन्द साम्राज्य पार्टी पंजीकृत के राष्ट्रीय अध्यक्ष कुलदीप तिवारी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई बैठक में पुनीत साहनी,मोहित सिंह सहदेव सिंह बैसवारा देवेंद्र सिंह,विनोद सिंह,सुसील कुमार सिंह,हंसराज मौर्य,संदीप यादव,मनीष सिंह राकेश श्रीवास्तव,अंकित कुशवाहा,रमेश सिंह संतोष सिंह आदि सदस्य उपस्थित रहे।

सपा भ्रष्टाचार, लूट और वंशवाद की पार्टी है: स्वतंत्रदेव सिंह

एजेंसी

जालौन। जो देवबंद से आवाज आती, वही अखिलेश यादव बोलते हैं। जब सपा सरकार थी तब भर्तियों में मंत्री अपनी सूची भेजते थे। उन्हीं सूचियों से लोग नौकरी पा जाते थे। प्रदेश में जब सपा की सरकार थी, तब मुसलमान दामाद के रूप में सरकार चलाते थे। यह बातें जिले के दौरे पर पहुंचे जल शक्ति मंत्री स्वतंत्र देव सिंह शनिवार को देर शाम संबोधित करते हुए कही। उन्होंने कहा कि जब से भाजपा सरकार आई है। सबका साथ सबका विकास पर काम किया जा रहा है। राज्य सरकार के जल शक्ति मंत्री स्वतंत्र देव सिंह यहां पर एक दिवसीय दौरे पर थे, जहां उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि 2014 और 2017 के पहले राज्य की क्या स्थिति थी। पिछली सरकार गुंडों को महत्व देती थी, सिमी और जिन्ना की वकालत करने वालों को महत्व देते थे। जिन्ना की तुलना सरदार पटेल से करते थे, वह सत्ता में रहे हो या न रहे हो उन्होंने हमेशा जो समाज को तोड़ने का काम किया। उनका वह सम्मान करते हैं, इसीलिए जनता ने उन्हें नकार दिया। उप चुनाव में नकार दिया है और 2027 में भी नकार देगी। सपा भ्रष्टाचार और लूट व परिवार और वंशवाद की पार्टी है। उन्होंने कहा कि भाजपा एक मिशन के लिए काम करती है, राजनीति उसका व्यापार नहीं है। एक गरीब को अपने पैरों पर खड़ा करना ही भारतीय जनता पार्टी का लक्ष्य है।

इस दौरान माधौगढ़ विधायक मूलचंद्र निरंजन, सदर विधायक गौरीशंकर वर्मा, जिला पंचायत अध्यक्ष डॉ. घनश्याम अनुरागी, भाजपा जिलाध्यक्ष उर्विजा दीक्षित, पालिकाध्यक्ष प्रदीप गुप्ता, प्रदीप धनौरा, पूर्व विधायक नरेंद्र सिंह जादौन, पालिकाध्यक्ष प्रतिनिधि उरई विजय चौधरी, मंत्री प्रतिनिधि अरविंद चौहान, ब्लॉक प्रमुख जालौन रामराजा निरंजन, रानी देवी, संजीव उपाध्याय, मनोज राजपूत, रामेंद्र सिंह, जगदीश तिवारी, हरेंद्र सिंह, उदयन पालीवाल आदि लोग उपस्थित रहे।

हेट स्पीच पर चंद्रधारी सिंह का रिकॉर्ड ख़राब, प्रदेश का मुख्य न्यायाधीश बनने से नफरत फैलाने वालों का बढ़ेगा मनोबल : शाहनवाज़

कैनविज टाइम्स संवाददाता

लखनऊ। चंद्रधारी सिंह ने दिल्ली हाईकोर्ट में जज रहते हुए अनुराग ठाकुर को 'गोली मारो सालों को' जैसे हिंसा उकसाने वाले मुकदमे में अपराधी मानने से इनकार कर दिया था। उनका तर्क था कि यह नारा उन्होंने मुस्कुराते हुए लगाया था इसलिए इसे धमकी और हेट स्पीच नहीं माना जाएगा। ऐसे विवादित फैसले देने वाले चंद्रधारी सिंह को इलाहाबाद हाईकोर्ट का मुख्य न्यायाधीश नियुक्त किए जाने से जनता में गलत संदेश जायेगा। ऐसी स्थिति बनती जा रही है जहाँ प्रदेश की शांति व्यवस्था को न्यायपालिका से ही खतरा उत्पन्न होता दिख रहा है। ये बातें अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के सचिव और बिहार सह प्रभारी शाहनवाज़ आलम ने साप्ताहिक स्पीक अप कार्यक्रम की 171 कड़ी में कहीं। शाहनवाज़ आलम ने कहा कि अनुराग ठाकुर मामले में दिल्ली हाईकोर्ट के जज रहते हुए उन्होंने कहा था कि ''चुनाव के दौरान दिए गए भाषण अलग होते हैं। अगर यही भाषण किसी और वक्त दिया होता तो ये भड़काने के लिए होता।'' शाहनवाज़ आलम ने कहा कि उनकी इस व्याख्या से यही निष्कर्ष निकलता है कि चुनाव के समय कोई भी नफरत और उकसाने वाली भाषा बोलेगा तो न्यायाधीश महोदय उसपर कोई कार्यवाई नहीं करेंगे। शाहनवाज़ आलम ने कहा कि उत्तर प्रदेश हेट स्पीच का केंद्र बना हुआ है जिसकी अगुवाई ख़ुद मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ कर रहे हैं। इसीलिए सुप्रीम कोर्ट द्वारा हेट स्पीच पर जारी गाइडलाइन का भी पालन प्रदेश में नहीं हो रहा है। ऐसे में हेट स्पीच को अपराध न मानने वाले मुख्य न्यायाधीश के आने के बाद प्रदेश में नफरत फैलाने वालों का मनोबल बढ़ जाएगा। जो समाज और प्रदेश के लिए बुरा साबित होगा। शाहनवाज़ आलम ने कहा कि इस समय उत्तर प्रदेश के जिला और हाई कोर्ट में ऐसे कई जज हैं जिनकी सांप्रदायिक भाषा वाले फैसलों और टिप्पणीयों को खुद हाई कोर्ट और सुप्रीम कोर्ट फैसलों से निकालने का निर्देश दे चुका है। ऐसे में इलाहाबाद हाईकोर्ट के मुख्य न्यायाधीश चंद्रधारी सिंह के कार्यकाल में ऐसे जजों का मनोबल भी बढ़ने का खतरा रहेगा। यह सब स्थितियां प्रदेश में शांति व्यवस्था के लिए अच्छे संकेत नहीं हैं।

राष्ट्रीय युवा वाहिनी गौ प्रकोष्ठ ने फूंका बांग्लादेश के प्रधानमंत्री का पुतला

फिरोजाबाद। राष्ट्रीय युवा वाहिनी गौ प्रकोष्ठ के पदाधिकारियों ने रविवार को बांग्लादेश में हो रहे अल्पसंख्यक हिन्दुओं पर अत्याचार व धर्म गुरु चिन्मय कृष्ण दास की गिरफ्तारी के विरोध में बांग्लादेश के प्रधानमन्त्री डॉ. मुहम्मद युनुस का पुतला दहन किया। इस दौरान बांग्लादेश मुर्दाबाद के नारे भी लगाए गए।हिंदूवादी पंडित हृदेश शर्मा ने कहा कि बांग्लादेश में शेख हसीना की सत्ता पलटने के बाद डॉ. मुहम्मद यूनिस की सरकार ने अल्पसंख्यक हिन्दुओं को टारगेट कर रखा है। अल्पसंख्यक हिन्दुओं पर लगातार अत्याचार करके उनके आवास व हिन्दू स्थलों के साथ तोड़फोड़ व आगजनी करके उन्हें भयभीत करके धर्मान्तरण करने का दबाब बनाया जा रहा है। उनमें भय व्याप्त करके बंगलादेश छोड़ने को मजबूर किया जा रहा है।धर्मगुरु चिन्मय कृष्ण दास इस्कोन मंदिर के प्रमुख थे। वहां के सनातन धर्म के प्रवक्ता भी थे। उनके द्वारा हिन्दू रैली निकाली गयी। रैली से बौखलाकर व डरकर बांग्लादेश सरकार के ईशारे पर धर्मगुरु चिन्मय कृष्ण दास के बांग्लादेश के राष्ट्रीय धवज का अपमान किया गया साथ ही मुस्लिम वकील की हत्या में झूठा षड्यंत्र रचकर उन्हें जेल भेज दिया है। जिससे हिन्दू समाज में आक्रोश है।चिन्मय कृष्ण दास की रिहाई को लेकर व अल्पसंख्यक हिंदुओं की सुरक्षा को लेकर लगभग 86 सेवानिवृत्त आईपीएस व आईएएस व हाईकोर्ट के जज द्वारा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को भी पत्र लिखे गए हैं। इस दौरान बटेंगे तो कटेंगे, एक रहोगे तो सेफ रहोगे के भी नारे लगाये गए।पुतला दहन करने वालों में अभय पाठक, विजय कुमार, राहुल गर्ग, नेकपाल राठौर, संतोष पाठक, सोनू दिवाकर, वीरेंद्र राठौर, बनी सिंह, सचिन राठौर, सतेन्द्र शर्मा, जितेन्द्र कुमार, अंकित, विनोद,आदि।

गैस सिलेंडर से भरा लोडर पेड़ से टकराया, चालक की मौत

बांदा। बांदा जनपद में उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश की सीमा पर एक दर्दनाक हादसे में गैस सिलेंडर लदा लोडर सड़क छोड़कर 300 कदम दूर एक नीम के पेड़ से जा टकराया। हादसे में लोडर बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गया। घटना की सूचना सुबह मॉर्निंग वॉक के दौरान पास के गांव के लोगों ने कालिंजर पुलिस को दी। पुलिस ने मौके पर पहुंचकर बड़ी मशक्कत के बाद लोडर चालक को बाहर निकाला और पास के रनखेरा गांव में तैनात चौकीदार रजोल की मदद से उपचार के लिए सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र (सीएचसी) भिजवाया। सीएचसी में मौजूद डॉक्टर माया ने चालक को मृत घोषित कर दिया। हादसे में जान गंवाने वाले चालक की पहचान मध्य प्रदेश के सतना जिले के खमरिया थाना अंतर्गत कोलगांवा निवासी 40 वर्षीय पुरुषोत्तम दाहिया के रूप में हुई। मृतक के पिता शिवशरण दाहिया ने बताया कि उनका बेटा कानपुर से गैस सिलेंडर लोड कर सतना जा रहा था।

जन सुनवाई पोर्टल पर दर्ज शिकायत निस्तारण पर शिकायतकर्ता ने दर्ज कराया असंतुस्ट फीडबैक

❒ जांच पहुंची संभागीय खाद्य वितरण अधिकारी के पास

❒ गुणवक्ता पूर्वक निस्तारण न होने पर जताई नाराजगी

कैनविज टाइम्स संवाददाता

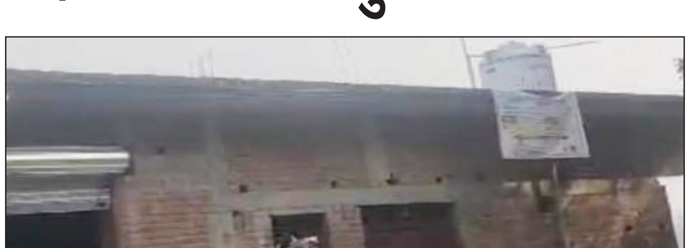

क्षेत्र सें लगातार शिकायत मिलने पर मै कोरांव क्षेत्र मे खुद निरीक्षण हाल ही मे किया है क्रय केंद्र स्थान का चुनाव खुद अच्छा किया जाता है और स्थान उपयुक्त है जिससे किसानो को किसी प्रकार की परेशानी न उठाना पड़े वी सी गौतम संभागीय खाद्य विररण अधिकारी प्रयागराज मंडल प्रयागराज

कोरांव प्रयागराज। कोरांव तहसील क्षेत्र के मिश्रपुर गांव के रहने वाले प्रमोद मिश्र पयासी ने आरोप लगाते हुये जनसुनवाई पोर्टल पर शिकायत की है की बढ़वारी कला मे धान क्रय केंद्र न बनाकर एक नीजी मकान मे अनुचित लाभ लेने व जांच टीम न पहुँच पाए इस उद्देश्य सें मिश्रपुर पूरा (महादेव टोला) मे एक नीजी मकान मे क्रय केंद्र बनाया गया है।

जो स्थान उपयुक्त नहीँ है साथ ही यह भी आरोप है आने जाने मे रास्ता काफी सकरा है बड़े वाहन केंद्र तक नहीँ आ जा सकते साथ ही दूर क्रय केंद्र होने सें लगभग दो दर्जन किसानो को काफी दूर आना जाना पड़ रहा है जनहित की पीड़ा दर्द को समझकर प्रमोद मिश्र पयासी ने इस मुद्दे की शिकायत जिले सें लेकर तहसील तक कर दिया है लेकीन सारे अधिकांश अधिकारी क्रय केंद्र के पक्ष मे आख्या प्रेषित कर शिकायत का निस्तारण कर दिया जा रहा है इस तरह के निस्तारण सें शिकायतकर्ता संतुस्ट नहीँ है यहीं वजह है की जनसुनवाई पोर्टल पर पुअर रेटिंग दर्ज कराकर अपना असंतुस्ट फीडबैक दर्ज कराया है जिससे शिकायत पुनर्वजीवित होकर जांच हेतु खाद्य विपरण विभाग ऊपर के उच्चाधिकारी संभागीय खाद्य वितरण अधिकारी प्रयागराज के पास पहुँच गई है शिकायतकर्ता का कहना है की यदि किसानो को न्याय नहीँ मिला तो उक्त मामले की शिकायत शासन स्तर सें भी किया जायेगा इस मामले मे क्रय केंद्र के एमआई सें संपर्क किया गया लेकीन फोन रिसीव नहीँ हुआ ।

केदारनाथ मणि त्रिपाठी की पुण्यतिथि मनाई गयी

एजेंसी

देवरिया। समाज के वंचित तबके में अपना कार्यक्षेत्र चुन कर अपना सम्पूर्ण जीवन समाज एवं शिक्षा के उन्नयन में आहूत कर देने वाले विभूति पण्डित केदारनाथ मणि त्रिपाठी थे । ये बातें पूर्व प्रदेश अध्यक्ष,पूर्व सांसद डॉ. रमापति राम त्रिपाठी ने रविवार को कहीं ।

उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के संघचालक और पूर्व जिलाध्यक्ष भाजपा केदारनाथ मणि त्रिपाठी की पुण्यतिथि पर ब्लॉक सभागार बैतालपुर में आयोजित कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए कही।उन्होंने कहा कि आज उनके यशस्वी एवं सर्वग्राही व्यक्तित्व का अनुकरण कर कई हजार कार्यकर्ता समाज के विभिन्न क्षेत्रों में योगदान दे रहे हैं।

उन्होंने कहा कि वे व्यक्ति नही विचार थे।वे व्यक्ति नही व्यक्तित्व थे , हम सभी उनके विचारों और आदर्शों को आत्मसात कर समाज में सकारात्मक योगदान देने का प्रण लेते हुए उन शत-शत नमन करते हैं। सदर विधायक डॉ.शलभ मणि त्रिपाठी ने कहा कि शिक्षक के रूप में अपनी अपनी सेवा देते हुए वह शुरू से ही राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ से जुड़े रहे।

शिक्षा एवं शिक्षण से इतर केदारनाथ मणि ने अपने सामाजिक कार्यों का भी बखूबी निर्वहन किया। अनुसूचित वर्ग आयोग के उपाध्यक्ष बेचन राम ने कहा कि केदारनाथ मणि कार्यकर्ताओं से अभिभावक की भांति व्यवहार करते थे।

वह कार्यकर्ताओं के सुख-दुःख में बराबर के भागीदार रहते थे। पूर्व विधायक डॉ.सत्यप्रकाश मणि त्रिपाठी ने कहा कि केदारनाथ मणि एक कुशल संगठनकर्ता एवं ओजस्वी वक्ता थे।

वह बहुत ही मृदुभाषी एवं मिलनसार व्यक्ति थे। अतिथियों का उनके पुत्र वीरेन्द्र मणि त्रिपाठी, जयप्रकाश मणि त्रिपाठी एवं ओमप्रकाश मणि त्रिपाठी ने अंग वस्त्र एवं स्मृति चिन्ह देकर सम्मान किया। उनके पौत्र अंशुल मणि त्रिपाठी ने सभी के प्रति आभार ज्ञापित तथा संचालन धनुषधारी मणि त्रिपाठी ने कही । इस दौरान प्रमुख प्रतिनिधि प्रभाकर राय, डॉ.अजय मणि त्रिपाठी,डा.मधुसूदन मिश्रा,गिरिजेश मणि,आशीष मणि त्रिपाठी,अम्बिकेश पाण्डेय,अजय दूबे वत्स,वृद्धिचंद विश्वकर्मा,रमेश तिवारी,सिद्धार्थ मणि, नंदलाल यादव,रामाशीष यादव,दुर्गविजय यादव, रंजन मणि,नीलरतन जायस वाल, सर्वेश मणि, जयराम पासवान,सुरेन्द्र नाथ त्रिपाठी, अरविंद पाण्डेय,डॉ.राजेश मिश्रा, रघुवंश सिंह,हरिलाल यादव,अनिल मणि, राधेश्याम शुक्ला,सतीश तिवारी,मिथिलेश मणि रहें।

हीवेट पॉलिटेक्निक में हुआ टैबलेट वितरण कार्यक्रम का आयोजन, 462 छात्र छात्राओं को मिला टैबलेट

❒ प्रदेश में अब तक 50 लाख टैबलेटों का वितरण हो चुका है – संजय सेठ, राज्यसभा सांसद

कैनविज टाइम्स संवाददाता

लखनऊ। महानगर स्थित हीवेट पॉलिटेक्निक में रविवार को टैबलेट वितरण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें इस मौके पर उत्तर प्रदेश सरकार की स्वामी विवेकानंद युवा सशक्तिकरण योजनान्तर्गत सत्र 2023-24 के प्रथम एवं द्वितीय वर्ष के 462 छात्र छात्राओं को टैबलेट वितरित किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि राज्यसभा सांसद संजय सेठ मौजूद रहे। जिन्होने छात्र छात्राओं में टैबलेट का वितरण किया। वहीं इस मौके पर हीवेट पॉलिटेक्निक के द्वारा मुख्य अतिथि राज्यसभा सांसद संजय सेठ से छात्रहित में विभिन्न लैब उपकरण संस्था को सांसद निधि से उपलब्ध कराने की मांग की गई। जिसमें उनकी मांग पर राज्यसभा सांसद ने 25 लाख रूपये की स्वीकृति प्रदान की। इस मौके पर मुख्य अतिथि राज्यसभा सांसद संजय सेठ ने कहा कि 2021 से शुरू हुई योजना के अन्तर्गत अब तक 50 लाख टैबलेटों का वितरण पूरे प्रदेश में किया जा चुका है। उन्होने छात्र छात्राओं को सम्बोधित करते हुए कहा कि उत्तर प्रदेश को उत्तम प्रदेश बना सके यही हमारा लक्ष्य होना चाहिए। टैबलेट वितरण पर उन्होने विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुए कहा कि इसका उपयोग करेंगे तो भविष्य निखरेगा और यदि इसका दुरपयोग करेंगे तो भविष्य बर्बाद होगा। उन्होने कहा कि हमारा लक्ष्य है कि हर युवा के हाथ में टैबलेट हो। हर युवक को रोजगार मिले व युवक आत्मनिर्भर बनकर खुद रोजगार पैदा करें, जिससे वह औरों को भी रोजगार मुहैया करा सकें।

इन उपकरणों की हुई मांग

डेस्कटॉप कम्प्यूटर(लेटेस्ट कान्फीग्रेशन) 30, यूनिवर्सल टेस्टिंग मशीन 01, सी0एन0सी0 टर्नर मशीन 01, सी0एन0सी0 माइलिंग मशीन 01, इम्पैक्ट टेस्टिंग मशीन 01, सेन्ट्रल लेथ 02, डबल मेट्रोलाजिकल पालीसिंग मशीन 02, रफनेश टेस्टर 02, आटोकाली मीटर 02 व मल्टी सिलेण्डर पेट्रोल इंजन 01 उपकरण की मांग की गई।

छात्रवृति और पेपर लीक के मुद्दे पर प्रदेशभर में कार्यक्रम करेगा आप छात्र विंग

कैनविज टाइम्स संवाददाता

लखनऊ। आम आदमी पार्टी की छात्र विंग (सीवाईएसएस) उत्तर प्रदेश की प्रदेश कार्यकारिणी की बैठक प्रदेश कार्यालय लखनऊ में सम्पन्न हुई। बैठक में आम आदमी पार्टी के मुख्य प्रवक्ता और यूपी सीवाईएसएस प्रभारी वंशराज दुबे ने संगठन को मजबूत करने के लिए कई महत्वपूर्ण मुद्दों पर चर्चा की। उन्होंने कहा कि भा.ज.पा. देश और प्रदेश में नफरत फैलाने के लिए सोशल मीडिया को एक हथियार के रूप में इस्तेमाल कर रही है। वे जरूरी मुद्दों से ध्यान हटाकर समाज में जहर घोलने का काम कर रहे हैं, लेकिन हम प्रदेश के छात्रों और युवाओं के मुद्दों को न केवल जमीन पर, बल्कि सोशल मीडिया पर भी उठाकर भाजपा को एक्सपोज करेंगे। वंशराज दुबे ने कहा कि आम आदमी पार्टी का उद्देश्य प्रदेश में शिक्षा, रोजगार और स्वास्थ्य जैसी बुनियादी समस्याओं को प्राथमिकता देना है। नवनियुक्त छात्र विंग प्रदेश अध्यक्ष अरुण वर्मा ने कहा कि आने वाले दो माह के अंदर उत्तर प्रदेश के सभी जनपदों में आम आदमी पार्टी की छात्र विंग का संगठन और ज्यादा मजबूत करने का काम किया जाएगा। उन्होंने कहा कि उत्तर प्रदेश में छात्रवृत्ति के नाम पर जबरदस्त घोटाले हो रहे हैं चाहे पेपर लीक का मामला हो या युवाओं से जुड़े अन्य मामले हो भाजपा सरकार पूरी तरह से मौन है। बैठक में मुख्य रूप से छात्र विंग प्रदेश महासचिव अनीत रावत, अंशुल यादव, जुबैर, रघुकुल, कुलदीप, नीलेश आदि लोग मौजूद रहे।

आप बुद्धिजीवी प्रकोष्ठ ने किया संगठन विस्तार

लखनऊ। आप बुद्धिजीवी प्रकोष्ठ के संगठन विस्तार हेतु एक बैठक शनिवार को प्रदेश कार्यालय में आयोजित हुई। इस दौरान, नवनियुक्त पदाधिकारियों को नियुक्ति पत्र दिया गया।

बुद्धिजीवी प्रकोष्ठ के प्रदेश अध्यक्ष बी.एन.खरे द्वारा संगठन को मजबूत करने के लिए कई महत्वपूर्ण मुद्दों पर चर्चा की गई। श्री खरे ने कहा कि महंगाई और बेरोज़गारी लगातार बढ़ रही है इसका कारण केंद्र सरकार और उत्तर प्रदेश सरकार है। प्रदेश अध्यक्ष ने सभी प्रदेश पदाधिकारियों से अपील की कि वे पार्टी की नीतियों को जन-जन तक पहुँचाने के लिए हर संभव प्रयास करें और समाज में बुद्धिजीवी व्यक्तियों के बीच चर्चा करें और समाज में जागरूकता फैलाने का काम करें। उन्होंने कहा कि आम आदमी पार्टी का उद्देश्य प्रदेश में शिक्षा, रोजगार और स्वास्थ्य जैसी बुनियादी समस्याओं को प्राथमिकता देना है।

क्रिएटिव कॉन्वेंट कॉलेज में वार्षिक उत्सव कार्यक्रम का आयोजन

शिक्षा सबसे शक्तिशाली हथियार जिसका उपयोग भविष्य बदलने के लिए कर सकते हैं : अरुण कुमार सिन्हा

कैनविज टाइम्स संवाददाता

सरोजनीनगर। शान्ति नगर स्थित क्रिएटिव कॉन्वेंट कॉलेज में वार्षिक उत्सव (कारवां) एवं मेधावियों के बीच पुरस्कार वितरण समारोह बहुत धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर चेयर मैन इ0 योगेंद्र सचान एवं उनकी मां और आये हुए अथितियों अरुण कुमार सिन्हा (सेवानिवृत्त आईएएस), डॉ0 राजेश प्रजापति (आईएएस). डॉ0 श्रेया प्रजापति, बी0आर0 वर्मा (सेवानिवृत्त डी0आइ0जी0), आर एल निरंजन (सेवानिवृत्त डिप्टी एस0पी0), मुनीश गंगवार (सेवानिवृत्त सी जी एम् नाबार्ड) ने दीप प्रज्वलित कर समारोह का शुभारंभ किया उन्होंने छात्र छात्राओं को संबोधित करते हुए कहा कि शिक्षा सबसे शक्तिशाली हथियार है जिसका उपयोग आप दुनिया और स्वयं के

भविष्य को बदलने के लिए कर सकते हैं। छात्र छात्राएं अपना लक्ष्य निर्धारित करें और उन्हें प्राप्त करने के लिए कड़ी मेहनत करें। यदि अपने चुने हुए लक्ष्य को हासिल करने के लिए समर्पण, अनुशासन और पूरे दिल से करेंगे तो निश्चित ही लक्ष्य में सफलता जरूर मिलेगी। इस अवसर पर डॉ0 राजेश प्रजापति (आईएएस) ने छात्रों का उत्साह वर्धन करते हुए बताया कि शिक्षा जीवन को कई तरीकों से बदल देती है यह व्यक्ति के ज्ञान, समझ और अनुभव को विस्तारित करती है। कॉलेज के चेयर मैन इ0 योगेंद्र सचान मेधावियों को प्रेरित करते हुए कहा कि छात्रों के लिए अपने गहन और सफल करियर बनाने के समय अर्जित ज्ञान, कौशल और योग्यता का पूरा उपयोग करना आवश्यक है। विपरीत परिस्थितियों में भी छात्रों को कभी निराश नहीं होना चाहिए। इस मौके पर बच्चों ने शानदार प्रस्तुतियां दी। कॉलेज की निर्देशिका ऋषिका सचान आए हुए अतिथियों को धन्यवाद दिया। विद्यालय परिवार के अध्यापक एवं उनके अभिभावकों ने कार्यक्रम के दौरान बच्चों का उत्साह वर्धन किया।

दो दिवसीय सीमेंट व्यापार संघ की बैठक संपन्न

लखनऊ ईकाई के नये पदाधिकारी हुए मनोनीत

कैनविज टाइम्स संवाददाता

लखनऊ। रविवार को उ प्र सीमेंट व्यापार संघ के पदाधिकारियों की बैठक इंदिरा नगर के भूतनाथ स्थित नरेश जैन के कार्यालय पर दो दिवसीय बैठक संपन्न हुई , लखनऊ ईकाई के पुनर्गठन पर चुनाव अधिकारी एवं वर्तमान अध्यक्ष दीपक सिंहल द्वारा विभिन्न पदों पर प्राप्त नाम रखे गए तथा किसी भी पद पर कोई दूसरा नाम नहीं होने से सभी की सहमति से निर्विरोध घोषणा के लिए प्रदेश अध्यक्ष श्याममूर्ति गुप्ता से आग्रह किया जिस पर लखनऊ ईकाई के अध्यक्ष पद पर अभिषेक मंसानी व वरिष्ठ महामंत्री जिम्मी अग्रवाल व कोषाध्यक्ष निर्मल कुमार गुप्ता , वरिष्ठ उपाध्यक्ष अर्पित जैन एवं अन्य पदों के लिए सक्रिय सदस्यों में आकाश हूजा, अंकुर जैन, आयुष मूर्ति गुप्ता, महेंद्र गोयल, अमित गुप्ता, मनीष अग्रवाल, भास्कर गुप्ता, शशि प्रताप जायसवाल, सुयश मोदी, शैलेन्द्र सिंह, धन्नजय गिरी, कमल अग्रवाल, सार्थक जैन, मुद्दसर नजर निर्विरोध निर्वाचित घोषित हुए। प्रदेश अध्यक्ष श्याममूर्ति गुप्ता ने लखनऊ ईकाई के सभी निर्वाचित प्रतिनिधियों को हार्दिक बधाई दी। नयी कार्यकारिणी के पदाधिकारियों का दीपक सिंहल ने माला पहनाकर अभिनन्दन किया और आगे हमेशा साथ रहने का विश्वास दिलाया तथा अपना त्यागपत्र प्रदेश वरिष्ठ महामंत्री मनीष मोदी जी को दिया। प्रदेश वरिष्ठ महामंत्री मनीष मोदी जी ने इसी दिसम्बर के अंतिम सप्ताह में शपथग्रहण समारोह आयोजित करके विधिवत नयी कार्यकारिणी को दायित्व प्रदान करने की घोषणा की है जिससे नये कलेंडर वर्ष के साथ ईकाई अपना संगठन विस्तार के साथ सीमेंट व्यापार की समस्याओं पर ध्यान दे सकेंगी ।

हर्षोल्लास से मनाया गया सीएल वर्मा जी का जन्म उत्सव

कैनविज टाइम्स संवाददाता

काकोरी लखनऊ। समाजवादी पार्टी के पूर्व लोकसभा प्रत्याशी सी एल वर्मा में सपा कार्यकर्ताओ ने जन्मदिन बड़े ही धूमधाम से मनाया। समाजवादी पार्टी के गद्दावर नेता जय सिंह यादव की अध्यक्षता में काकोरी के इमाम बाग चौराहे पर कार्यकर्ताओं ने केक काटकर उनके दीर्घायु होने की कामना की।और फूल मालाओं से लादकर उन्हें बधाई दी गई। रविवार को काकोरी के इमाम बाग पर जन्मदिन बड़े हर्ष उल्लास के साथ मनाया गया। कार्यकर्ताओ में सीएल वर्मा के पहुंचते ही जोश भर गया। लोग समाजवादी पार्टी जिंदाबाद सीएल वर्मा जिंदाबाद के नारे लगाते रहे। इस दौरान सपाईयों ने इमाम बाग चौराहे के पास दिखते नजर आए। इसके बाद कार्यकर्ता का मुंह मीठा करा कर जन्मदिन की बधाई देते रहे।और कहा कि आने वाले समय में समाजवादी सरकार बनना तय है।

क्योकि जिस तरह से व्यापारी किसान से लेकर मजदूर तक सभी परेशान हो उठे है। लोगों की रोजी रोटी तक वर्तमान सरकार ने छीन ली है। तो जनता ने भी सही समय आने पर करारा जवाब देने को तैयार बैठी है।इस कार्यक्रम लोकसभा सांसद आर के चौधरी, जिला महासचिव शब्बीर खान, पूर्व लोकसभा प्रत्याशी सीएल वर्मा,

समाजवादी पार्टी के वरिष्ठ नेता अभय मुलायम यादव,रंजीत कश्यप ,जय सिंह यादव, ज्ञान सिंह पत्रकार, ललित यादव, अज़ीम रेहान, सलमान नफीस ,हिमांशु यादव ,लाल जी ,रेहान अहमद ,इशाक गाजी ,कुलदीप महेंद्र यादव ,गुड्डू मुशीर ,रमीज़ ख़ान ,सहित सैकड़ो की संख्या में कार्यकर्ता मौजूद रहे।

महीनों से बंद पड़ी सीवर का गन्दा पानी घरों में घुसा

कैनविज टाइम्स संवाददाता

लखनऊ। शहर में सीवर की साफ़ सफाई की ज़िम्मेदारी उठाने वाली सुएज इंडिया प्राइवेट लिमिटेड अपने काम में घोर लापरवाही बरत रही है। सुएज इंडिया प्राइवेट लिमिटेड के काम पर नज़र रखने वाले जलकल विभाग के अवर अभियंता व अधिशाषी अभियंता भी अपनी ज़िम्मेदारी को ठीक ढंग से नहीं निभा रहे हैं जिसके चलते सुएज़ इंडिया कंपनी के कर्मचारी बेलगाम है। कन्हैया माधवपुर द्वितीय के लाला बाग़ इलाके में ऐसा ही एक मामला सामने आया है यहाँ सीवर ब्लॉक पड़ी है जिसके चलते सीवर का पानी प्लॉट पर व लोगों के घरों में भर रहा है। यहाँ बीरिज धाम चौराहे पर सड़क पर लगातार सीवर का पानी भरा रहने से सड़क भी जगह जगह से उखड़ रही है उसमे गड्ढे हो रहे हैं। प्लॉट में लगातार पानी भरा रहने से इलाके में मच्छरों की भरमार है लोगों का कहना है कि इससे

बीमारियां भी फैल रही हैं। रिंग रोड से लालबाग पेट्रोल पंप के पास से होकर गुजरने वाली रोड पर कुछ मीटर अंदर जाते ही ओम प्रकाश यादव का घर है सीवर ब्लॉक होने से सीवर का पानी उनके घर में भरा हुआ है। ओम प्रकाश यादव कहते हैं कि जब से यहां सीवर पड़ी है तब से सीवर ब्लाक है जिस कारण सीवर का पानी उनके घर में वापस जाता है जिस घर में मच्छरों की भरमार है तथा तरह-तरह की बीमारियों से भी उनके परिवार को सामना करना पड़ता है। वह कहते हैं कि के सुएज इंडिया प्राइवेट लिमिटेड द्वारा सुनवाई न उन्होंने सीएम हेल्पलाइन 1076 पर भी शिकायत की थी उसमें भी सुएज इंडिया प्राइवेट लिमिटेड द्वारा बिना समस्या का समाधान किये ही निस्तारण की फर्जी रिपोर्ट लगा दी।उन्होंने बताया सुएज इंडिया प्राइवेट लिमिटेड के कर्मचारी ऐसे तो सीवर समस्या का हल निकालने आते नहीं हैं जब उनको पैसे दो तब आकर सफाई कर जाते हैं सीवर सफाई के बाद कुछ दिन तो आराम रहता है किंतु कुछ दिन बाद ही फीवर फिर से भर जाता है और घरों में पानी भरने लगता है। ऐसे में अब ये सवाल उठता है कि यदि सुएज इंडिया प्राइवेट लिमिटेड द्वारा शिकायतों का फर्जी निस्तारण किया जा रहा है और क्षेत्र में फैली सीवर की समस्या को दूर भी नहीं किया जा रहा है तो आखिर जलकल विभाग के संबंधित अधिकारी क्या कर रहे हैं संबंधित अवर अभियंता और ज़ोन 6 के अधिशासी अभियंता सुएज इंडिया प्राइवेट लिमिटेड के लोगों पर नियंत्रण कर पाने में पूरी तरह से फ़ेल हो रहे हैं।

किड्ज़ी स्कूल ने हर्षोल्लास के साथ मनाया स्पोर्टस डे सेलिब्रेशन

लखनऊ, कैनविज टाइम्स संवाददाता। सीतापुर रोड पर राम राम बैंक चौराहा स्थित किड्ज़ी स्कूल के द्वारा एबीआई कॉलोनी में बड़े हर्षोल्लास के साथ स्पोर्टस डे सेलिब्रेशन मनाया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के तौर पर पार्षद मानसिंह यादव मौजूद रहे। इस मौके पर किड्ज़ी स्कूल की तरफ से कोऑर्डिनेटर अंजू सिंह, आदित्य सिंह व स्वाति रस्तोगी के साथ अध्यापक अराधना द्विवेदी, नेहा शुक्ला, स्मृति सिंह, अमिता सिंह व कल्पना यादव समेत स्कूल के बच्चे मौजूद रहे।

सलेमपुर अचाका में नाली विवाद को लेकर चले लाठी-डंडे , चार घायल

नगराम, लखनऊ कैनविज टाइम्स संवाददाता । रविवार की सुबह घर के सामने नाली की सफाई को लेकर दो पक्षों में मारपीट हो गई , इसमें दोनों पक्षों से चार लोग घायल हो गए घायलों को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र नगराम ले जाया गया , जहां घायलों का इलाज चल रहा है । मामले में दोनों पक्षों की तरफ से महिला समेत एक दर्जन लोगों के विरुद्ध मामला दर्ज किया गया है। नगराम थाना क्षेत्र अंतर्गत सलेमपुर अचाका निवासी आशिक अली की पत्नी रविवार सुबह घर के सामने नाली की साफ सफाई कर रही थी , घर के पास से निकली नाली की सफाई करने को लेकर पड़ोसी सिरताज से उसकी कहा सुनी हो गई । इसी बीच दोनों पक्षों से लोग इकट्ठा हो गए और मारपीट शुरू हो गई एक पक्ष से महरून , आशिक अली व जाहिद अली व दूसरे पक्ष से सिरताज घायल हो गए। घायलों को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र ग्राम ले जाया गया जहां औपचारिक इलाज के बाद घर भेज दिया गया। नगराम थाना प्रभारी विवेक चौधरी ने बताया कि दोनों पक्षों की तहरीर पर महिला समेत लगभग एक दर्जन लोगों के विरुद्ध मुकदमा दर्ज कर मामले की जांच की जा रही है।

समाज कल्याण के निदेशक ने खेलकूद प्रतियोगिता का किया उद्घाटन, प्रदेश 84 विद्यालयों के विद्यार्थी कर रहे प्रतिभाग

लखनऊ कैनविज टाइम्स संवाददाता। लखनऊ के केडी सिंह बाबू स्टेडियम में शुरू हुई सर्वोदय विद्यालयों की तीन दिवसीय राज्य स्तरीय खेलकूद प्रतियोगिता का उद्घाटन समाज कल्याण निदेशक कुमार प्रशांत ने किया। उद्घाटन समारोह में उन्होंने खिलाड़ियों से परिचय प्राप्त किया और गुब्बारे उड़ाकर खेलों का शुभारंभ किया। पहले दिन बालक और बालिका वर्ग में दौड़, कबड्डी और वॉलीबॉल के मुकाबले हुए, जिनमें खिलाड़ियों ने अपना उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। समाज कल्याण विभाग द्वारा संचालित होने वाले जयप्रकाश नारायण सर्वोदय विद्यालयों की खेल प्रतियोगिता में खेलों के दौरान छात्रों में जोश और उत्साह देखने लायक था। प्रतियोगिता में बालकों के 6 जोन बनाए गए हैं, जिसमें आगरा, मेरठ, प्रयागराज, मिर्ज़ापुर, गोरखपुर और लखनऊ मंडल शामिल हैं। इसी प्रकार बालिकाओं के 4 जोन में बरेली, प्रयागराज, गोरखपुर एवं लखनऊ मंडल शामिल हैं। बालक वर्ग में 100, 200 और 400 मीटर दौड़ के साथ ही बालिका वर्ग की कबड्डी और वॉलीबॉल प्रतियोगिताओं ने दर्शकों का ध्यान खींचा। समाज कल्याण विभाग के निदेशक, कुमार प्रशांत ने खेल भावना और टीम वर्क की महत्ता पर जोर देते हुए कहा कि खेल न केवल शारीरिक विकास का माध्यम हैं, बल्कि आत्मविश्वास और नेतृत्व क्षमता भी विकसित करते हैं। प्रतियोगिता के दौरान खिलाड़ियों और टीम प्रबंधकों के ठहरने और भोजन की विशेष व्यवस्था की गई है। समाज कल्याण विभाग की ओर से यह आयोजन छात्रों के सर्वांगीण विकास के लिए एक सराहनीय पहल है। अगले दो दिनों में लंबी कूद, ऊंची कूद, भाला फेंक और बैडमिंटन जैसे खेलों के रोमांचक मुकाबले आयोजित किए जाएंगे। प्रतियोगिता के आयोजन के दौरान समाज कल्याण विभाग के संयुक्त निदेशक, आरके सिंह, उपनिदेशक, जयराम एवं अमरजीत सिंह के साथ ही टीमों के साथ सर्वोदय विद्यालयों के शिक्षक, टीम मैनेजर आदि उपस्थित रहे।

सेन्ट्रल पब्लिक स्कूल ने धूमधाम से मनाया खेल उत्सव, द ग्रैंड फिनाले खेल उत्सव में प्रतिभाग करने वालें विद्यार्थी हुए सम्मानित

कैनविज टाइम्स संवाददाता

लखनऊ, कैनविज टाइम्स संवाददाता। रजनीखंड स्थित सेंट्रल पब्लिक स्कूल में शुक्रवार को खेल उत्सव द ग्रैंड फिनाले कार्यक्रम का भव्य आयोजन किया गया। इस मौके पर मुख्य अतिथि डॉ मुकेश कुमार सिंह डिप्टी डायरेक्टर समग्र शिक्षा विभाग, सुधाकर त्रिपाठी फॉर्मर अध्यक्ष व डॉ महेंद्र सिंह विधान परिषद सदस्य कैबिनेट मिनिस्टर यूपी गवर्नमेंट मौजूद रहे। जिन्होने कबूतर उड़ाकर कार्यक्रम की शुरूआत की। खेल उत्सव में प्रतिभाग करने वाले बच्चों को मेडल और स्कूल का स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। इस मौके पर स्कूल के संस्थापक जगत नारायण पांडे ने कहा कि खेल उत्सव में शामिल हुए बच्चों को और उनके द्वारा दिखाई के प्रतिभा के लिए उन्हें बधाई देता हूं स्कूल हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी खेल उत्सव

को मना रहा है और बच्चों को खेल के प्रति जागरूक कर रहा है।

स्वयंसेवकों का शारीरिक प्रधान कार्यक्रम सम्पन्न

कैनविज टाइम्स संवाददाता

लखनऊ, कैनविज टाइम्स संवाददाता। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ लखनऊ पूर्व भाग के द्वारा शालीमार पार्क में संघ के चयनित स्वयंसेवकों का शारीरिक प्रधान कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम में लखनऊ पूर्व भाग के सभी चौदह नगरों एवं इकाइयों से चयनित स्वयंसेवकों ने अभ्यास कर शारीरिक विषयों दंड, दंड युद्ध, पद विन्यास, नियुद्ध, समता, यष्टि, योग आसन आदि का प्रदर्शन किया। मंच पर कार्यक्रम के मुख्य वक्ता पूर्वी उत्तर प्रदेश के क्षेत्र प्रचारक अनिल, विभाग संघचालक अरविंद जैन व भाग संघचालक प्रभात मौजूद रहे। इस मौके पर मुख्य वक्ता क्षेत्र प्रचारक अनिल ने कहा कि संपूर्ण विश्व आज भारत और हिंदू समाज की ओर आशावान दृष्टि से देख रहा है। धरती पर जितने भी महापुरुषों ने अवतार लिया, सभी ने समाज का संगठन एवं व्यक्ति निर्माण का कार्य ही श्रेष्ठ बताया है।

बीबीडीयू में लुमिनरी कॉन्क्लेव 2024 का आयोजन

कैनविज टाइम्स संवाददाता

लखनऊ, कैनविज टाइम्स संवाददाता। बीबीडी युनिवर्सिटी के स्कूल ऑफ लीगल स्टडीज द्वारा लुमिनरी कॉन्क्लेव-2024 द फ्यूचर ऑफ ओसीआर ऑनलाइन कॉनफ्लिकट रिजॉल्यूशन एंड मीडिएशन का आयोजन हुआ। इस अवसर पर बीबीडी एजुकेशनल ग्रुप की चेयरपर्सन अलका दास गुप्ता, बीबीडी ग्रुप के प्रेसिडेंट विराज सागर दास एवं वाइस प्रेसिडेंट देवांशी दास, विशिष्ट अतिथि अरुणेश्वर गुप्ता, सीनियर एडवोकेट सुप्रीम कोर्ट, निर्मल सेठ, सीनियर एडवोकेट, हाईकोर्ट लखनऊ, संथान कृष्णन लाइफ प्रेसिडेंट, कॉमनवेल्थ लायर एसोसिएशन, प्रह्लाद शर्मा, प्रेसिडेंट राजस्थान हाईकोर्ट बार एसोसिएशन जयपुर अखिलेश कालरा, सीनियर एडवोकेट, हाईकोर्ट लखनऊ, मनोज कुमार द्विवेदी, जनरल सेक्रेटरी अवध बार एसोसिएशन हाईकोर्ट लखनऊ एवं बीबीडीयू के प्रो वाइस चांसलर प्रो एस सी शर्मा, डीन स्टूडेंट वेलफ़ेयर,प्रो एस एम के रिजवी आदि उपस्थित रहे। सीनियर एडवोकेट अरुणेश्वर गुप्ता ने ओसीआर निर्णय समाधान और मध्यस्थता सहित विषयों पर ज्ञानवर्धक जानकारी दी। आर संथानम ने मध्यस्थता के भविष्य और समाधान के विषय में विस्तार से बताया।

भक्तमाल कथा के चौथे दिन संत नरसी मेहता के चरित का हुआ गुणगान, आज नानी बाई का मायरा के साथ होगा कथा का समापन

कैनविज टाइम्स संवाददाता

लखनऊ, कैनविज टाइम्स संवाददाता। भक्तमाल कथा के चौथे दिन रविवार को संत नरसी मेहता के चरित का गुणगान हुआ। राधा स्नेह दरबार के तत्वावधान में गोमती तट स्थित खाटूश्याम मन्दिर परिसर में चल रही कथा में श्रद्धालुओं को संबोधित करते हुए आचार्य रमाकान्त गोस्वामी ने कहा कि जो भगवान की शरण में आते हैं उनके सभी ऋण भगवान अदा करते हैं। भक्त नरसी भोलेनाथ से कहते हैं कि आपको जो सबसे प्रिय है वह मुझे दे दीजिए। भोलेनाथ को कृष्ण भक्ति प्यारी है। वर देते हैं और नरसी कृष्णभक्ति व उसके प्रचार में लीन हो जाते हैं। घर से निकाले जाने पर भी नरसी विचलित नहीं होते। कथा के मध्य राधा स्नेह दरबार की मीरा गोयल, शशि अग्रवाल, मृदुला अग्रवाल, आभा अग्रवाल, अंजना अग्रवाल, कुसुम बोरा, राखी अग्रवाल, दीपा चन्द्रा आदि

सखियों ने बांस की बांसुरिया पर धनौ इतरावै पर मनमोहक नृत्य किया। संगीतमय भक्तमाल कथा में ढोलक पर कृष्णा शर्मा, कीबोर्ड पर मुकेश शर्मा, तबला पर राजेंद्र शर्मा और आक्टोपैड पर हरिओम शर्मा निरंतर संगत कर रहे हैं। राधा स्नेह दरबार की अध्यक्ष बिन्दू बोरा ने बताया कि सोमवार को भक्तमाल कथा पूर्वाह्न 11 बजे से नानीबाई का मायरा के साथ शुरु होगी तथा अपराह्न दो बजे भण्डारे के साथ समापन होगा। कथा में मनकामेश्वर मंदिर की महन्त देव्या गिरि महाराज, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रांत प्रचारक कौशल, उत्तर प्रदेश सरकार के जलशक्ति मंत्री स्वतंत्रदेव सिंह, औद्योगिक विकास मंत्री नंदगोपाल गुप्ता नंदी, परिवहन मंत्री दयाशंकर सिंह, भाजपा प्रदेश महामंत्री संजय राय, डॉ. जयलक्ष्मी शर्मा, विधानपरिषद सदस्य पवन सिंह चौहान, विधान परिषद सदस्य मुकेश शर्मा, विधायक डा. नीरज बोरा, विधायक ओ.पी. श्रीवास्तव, भाजपा के पूर्व महानगर अध्यक्ष मनोहर सिंह, समाजसेवी सुधीर हलवासिया, डीसीपी नार्थ आर.एन. सिंह, राधा स्नेह दरबार और श्याम परिवार के सदस्यों के साथ बड़ी संख्या में श्रद्धालू मौजूद रहे।

प्रशासकीय काल में पूर्व एडीओ आइएसबी व सचिव ने लाखों डकारे

कैनविज टाइम्स संवाददाता

सकरन सीतापुर। सकरन विकास खंड क्षेत्र में प्रशासक के तौर पर जिम्मेदारी लेने वाले पूर्व सचिव व एडीओ आईएसबी पर बगैर काम कराए साढ़े 16 लाख की धनराशि हड़पने का आरोप है उनके ऊपर लगे आरोपों की जांच डीपीआरओ ने की है। सूत्र बताते हैं कि मूल्यांकन में आरोपो की पुष्टि होती मिली है।

ऐसी चर्चा सकरन विकासखंड क्षेत्र में है सकरन विकासखंड की ग्राम पंचायत सकरन में वर्ष 2021 में मार्च महीने में हुए पंचायत चुनाव की आदर्श चुनाव आचार संहिता लगी थी आचार संहिता नवंबर 2020 में चुनाव आयोग द्वारा लगा दी गई थी तब ग्राम पंचायत के प्रशासक तत्कालीन एडीओ आईएसबी जितेंद्र कुमार रस्तोगी जो वर्तमान में ब्लाक रामपुर मथुरा में तैनात है तथा पंचायत सचिव अर्पित

गुप्ता जो वर्तमान में ब्लॉक बेहटा में तैनात है को बनाया गया था दोनों लोग संयुक्त रूप से ग्राम पंचायत के खाते का संचालन करते थे। प्रशासकीय काल के दौरान ग्राम पंचायत में दिसंबर 2020 से मई 2021के बीच ह्यूम पाइप डलवाने के नाम पर 11 लाख 76 हजार 820 रुपए तथा दिसंबर 2020 से मई 2021 के बीच हैंड पंप रीबोर के नाम पर 4 लाख 85 हजार 954 रुपए की धनराशि का भुगतान प्रशासक व सचिव द्वारा बगैर काम करवाये ही करवा लिया गया ।ऐसा आरोप ग्राम निवासी रामचंद्र यादव ने लगाया है रामचंद्र यादव ने जिला अधिकारी से शिकायत की। जिलाधिकारी के आदेश पर गुरुवार को डीपीआरओ ने ग्राम पंचायत की जांच की पंचायत चुनाव के दौरान बगैर काम करवाए ही निकल गई धनराशि के बारे में ना तो ग्राम प्रधान को पता है और ना ही वर्तमान पंचायत सचिव को ही इसकी जानकारी है ।जांच अधिकारियों ने बताया कि टीम गठित कर कार्यों का मूल्यांकन करवा कर दोषी लोगों के विरुद्ध विभागीय करवाई की जाएगी। डीपीआरओ निरीश चंद्र साहू ने बताया कि चुनाव के दौरान कराए गए भुगतान की जांच आख्या जिला अधिकारी को सौंप दी गई है उनके आदेशानुसार अग्रिम कार्यवाही की जाएगी। विकासखंड सकरन में चर्चाएं तेज है कार्यवाही होगी कि मिलेगा इनको अभयदान बना चर्चा का विषय।

भाजपा संगठन पर्व के तहत संगठनात्मक चुनाव संबंधी बैठक संपन्न

कैनविज टाइम्स संवाददाता

सीतापुर। भारतीय जनता पार्टी जिला कार्यालय पर संगठन पर्व के तहत संगठनात्मक चुनाव संबंधी बैठक आहूत की गई बैठक की अध्यक्षता जिला चुनाव अधिकारी व पूर्व जिला अध्यक्ष जालौन नागेंद्र गुप्ता द्वारा की गई इस अवसर पर जिला चुनाव अधिकारी नागेंद्र गुप्ता जिला अध्यक्ष राजेश शुक्ला व सह चुनाव अधिकारी सुधाकर शुक्ला द्वारा दीनदयाल उपाध्याय व श्यामा प्रसाद मुखर्जी के चित्र पर पुष्पाजलि अर्पित की।

जिला अध्यक्ष राजेश शुक्ला ने पुष्प गुच्छ भेंट कर जिला चुनाव अधिकारी नागेंद्र गुप्ता का सम्मान किया।संगठन चुनाव की प्रक्रिया को समझाते हुए जिला चुनाव अधिकारी नागेंद्र गुप्ता ने उपस्थित पार्टी पदाधिकारी से मंडल चुनाव के संबंध में चल रही कार्य विधि की समीक्षा की साथ ही साथ मंडल चुनाव प्रक्रिया के विषय में विस्तार से अवगत कराया उन्होंने आए हुए सभी पदाधिकारी से व्यक्तिगत तौर से बात करके चल रही चुनाव प्रक्रिया का फीडबैक भी लिया इस अवसर पर सभी को संबोधित करते हुए जिला अध्यक्ष राजेश शुक्ला ने कहा भारतीय जनता पार्टी स्वच्छ एवं निष्पक्ष संगाठनिक चुनाव प्रक्रिया का पालन करते हुए संगठन के दिशा निर्देशों पर कार्य कर रही ह।

इसके लिए प्रत्येक पदाधिकारीयों एवं जिम्मेदार कार्यकर्ताओं को निष्पक्ष भाव से अपना कार्य करना है।

जिला अध्यक्ष ने आगामी कार्यक्रमों पर भी उपस्थित पदाधिकारीयों से विस्तार से बात की। कार्यक्रम का संचालन सह चुनाव अधिकारी सुधाकर शुक्ला द्वारा किया गया। आए हुए अतिथियों का आभार जिला सह चुनाव अधिकारी जया सिंह द्वारा किया गया। इस अवसर पर विधायक मिश्रिख रामकृष्ण भार्गव विधायक बिसवां निर्मल वर्मा पूर्व एमएलसी राकेश सिंह निवर्तमान विधायक सुनील वर्मा महिला मोर्चा क्षेत्रीय अध्यक्ष डॉक्टर गोदावरी मिश्रा, विश्राम सागर राठौर संजय मिश्रा,नैमिष रत्न तिवारी, विश्राम सागर राठौर, इंदू सिंह चौहान,उदित बाजपेई, जितेंद्र मल्होत्रा कंचन प्रभा पांडे, सचिन मिश्रा आकाश अग्रवाल, संदीप अवस्थी, विष्णु मौर्य, अजय विश्वकर्मा, अमित दीक्षित रोहित सिंह सहित पदाधिकारी उपस्थित रहे।

मनरेगा में फर्जी बाड़ा रुकने का नाम ही नहीं ले रहा

कैनविज टाइम्स संवाददाता

बेहटा सीतापुर। इन दिनों ब्लॉक बेहटा के ग्राम पंचायतों में मनरेगा में फर्जी बाड़ा बड़े पैमाने पर चल रहा है।

कही पर 50 श्रमिकों की जगह 5 लेवर ही काम करते पाए जाते है तो कही पर बिना काम के ही मस्टर रोल जारी कर दिए जाते हैं ऐसा ही कुछ मामला ब्लॉक बेहटा की ग्राम पंचायत लखना पुर में देखने को मिला जहां पर इटौवा सरहद से पुत्ती के खेत तक बिना काम के ही पंचायत स्तर से पद नाम मेट शिवपति के द्वारा 46 लोगो की फर्जी उपस्थिति दर्शा दी गई जहा पर योगी सरकार जीरो टॉलरेंस

की नीति पर चहुमुखी विकास के लिए सतत प्रयास रत है वही पर विकास से संबंधित जिम्मेदार सरकार की मंशा पर पलीता लगाने का काम कर रहे है ।

विकास कार्य व मनरेगा में जमकर किया जा रहा फर्जीवाड़ा , जिम्मेदार मौन

- मनरेगा के तहत गरीबो के हक पर भी डाल रहे डाका , लगा रहे फर्जी हाजरी
- कागजों पर भरे जा रहे नाम, धरातल पर नहीं दिख रहा काम ,
- तीन की जगह अठ्ठारह की हाजरी

कैनविज टाइम्स संवाददाता

सीतापुर मछरेहटा। जनपद के विकासखंड मछरेहटा की ग्राम पंचायत राजपुर प्रताप, जो कभी विकास के सपनों से परिपूर्ण थी, आज भ्रष्टाचार के दलदल में फंसी हुई है।

यहां के ग्रामीणों का आरोप है कि ग्राम पंचायत के विकास कार्यों के लिए सरकार द्वारा भेजी गई धनराशि का दुरुपयोग हो रहा है। ग्राम पंचायत में बना प्राथमिक विद्यालय बच्चों के आने जाने के रास्ते में व स्कूल के गेट के सामने लगी झाड़िया व गंदगी डेंगू

, मलेरिया जैसी घातक बीमारियों को दावत दे रही है । सरकार द्वारा स्वच्छता अभियान के ऊपर पूर्णतया पानी फ़ेरा जा रहा हैं। वही ग्राम पंचायत में चल रहे मनरेगा के तहत कार्य में भी जमकर फर्जीवाड़ा किया जा रहा है। कार्य कर रहे एक मजदूर ने नाम न छापने की शर्त पर बताया कि कार्य तीन चार दिन से चल रहा है। यहा पर केवल तीन ही लोग कार्य कर रहै है। जब कि ऑनलाइन अठ्ठारह लोगो की फर्जी हाजरी भरी जा रही है। योगी सरकार की महत्वपूर्ण महात्मा गांधी गारंटी योजना को पलीता लगाने एवं देश की आर्थिक स्थित को रसातल में पहुंचाने का काम कर रहे हैं। प्रधान व सचिव की मिलीभगत से मानक विहीन कार्य करवाकर पंचायत के खातों से बड़ी मात्रा में धन निकाला जा रहा है।पंचायत में रहने वाले ग्रामीणों का कहना है कि जो ग्राम पंचायत में विकास को लेकर वादा किया गया था, वह केवल कागजों पर ही सीमित रह गया है। न तो कोई सड़क बनी है, और न ही कोई सुधार कार्य हुआ है। ग्रामीणों ने आरोप लगाया है कि जूनियर विद्यालय दुघरा में टाइलीकरण के नाम पर 15 मार्च 2024 को 381127 रुपये व पुनः उसी मद में 9 अक्टूबर 2024 को 163099 रुपयो का भुगतान कराया गया। व जूनियर विद्यालय दुघरा में शौचायल व टाईल कार्य के नाम पर 23 मार्च 2023 को 72000 रुपयो का भुगतान कराया गया है जिसमे काफी अनिमिताये बर्ती गयी है। यही नही आर.सी.सी. रोड से प्राथमिक विद्यालय तक खड़ंजा मरम्मत व हियूम पाइप कार्य के नाम पर चार बार मे लगभग 345000 रुपयो का भुगतान कराया गया है। ग्रामीणों का कहना है कि मानक विहीन कार्य करवा कर भुगतान कराया गया है। यही नही ग्राम पंचायत में ठेलिया मरम्मत के नाम पर 16 अगस्त 2024 को लगभग 29000 रुपयो का भुगतान कराया गया है जिस पर ग्रामीणों ने निष्पक्ष जांच की मांग की है।

स्वच्छ भारत मिशन सिर्फ कागजों में शौचालयों का धन डकार गए पंचायत सचिव

- खुले में शौंच से कैसे मिले मुक्ति जब शौचालयों की अनुदान राशि ही हजम कर गए जिम्मेदार पंचायत सचिव

कैनविज टाइम्स संवाददाता

सकरन(सीतापुर)। स्वच्छ भारत मिशन के तहत ग्रामीण क्षेत्रों में शौचालयों का निर्माण हेतु सरकार द्वारा गई जाने वाली 12 हजार रुपए की रकम ही पंचायत सचिव कर गए हजम।खुले में शौंच से मुक्ति के लिए शासन के द्वारा किए गए सभी प्रयास सकरन में हो गए ।

धराशाई,आज क्षेत्र की समस्त ग्राम पंचायतों की अवाम खुले में शौंच जाने को मजबूर है जबकि प्रति परिवार लक्ष्य को निर्धारित करते हुए मिशन के तहत समस्त लाभार्थियों को अनुदान राशि शासन के द्वारा उपलब्ध करवाई गई पर शातिर दिमाग के पंचायत सचिवों ने पूरी रकम को चेक भुगतान के जरिए हजम कर ली और लाभार्थियों को कानोंकान खबर तक नहीं लगी।ब्लॉक मुख्यालय से सटी ग्राम पंचायत शाहपुर, किरतापुर, रेवान ,उल्लहा, पटनी, मोहारी, नसीरपुर,कम्हरिया खुन खुन,मडोर में दर्जनों नहीं सैकड़ों शौचालयों की रकम तो डकार ली गई पर ग्रामीणों को आज तक नहीं नसीब हुआ।

एक अदद शौचालय।भ्रष्टाचार के इस खेल में सरकार की लचर व्यवस्था ये रही कि उस समय शौचालयों की रकम पंचायत सचिव अपने खाते में जमा धनराशि से चेकों के माध्यम से निकाल तो लाए पर लाभार्थी को कानों कान खबर नहीं रही कि उसे इस योजना का लाभ मिला है इसी के चलते समूचे ब्लॉक क्षेत्र में हजारों शौचालयों की करोड़ों रूपयों की धनराशि हजम कर ली गई और कागजों का पेट भर शासन को भेज दिया गया।

आज यदि जमीनी हकीकत की डोर टू डोर इस महाघोटाले की कर ली जाए जांच तो एक आध नहीं दर्जनों पंचायत सचिव पीसेंगे जेल की चक्की और खुल जाएगी स्वच्छ भारत मिशन की पोल। पंचायतीराज के पूर्व कार्यकाल के 2016 से 2020 तक के वो समस्त ग्राम प्रधान व पंचायत सचिव जल्द ही आएंगे जांच के दायरे में जिन्होंने ग्रामीण महिलाओं बुजुर्गों को आज भी खुले में शौंच जाने को किया है मजबूर।

आजादी के लिए क्रांतिकारियों का योगदान

कैनविज़ टाइम्स संवाददाता

महमूदाबाद सीतापुर। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के क्रांतिकारियों द्वारा ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध भयंकर युद्ध छेड़ने और हथियार खरीदने के लिए ब्रिटिश सरकार का ही खजाना लूट लेने की ही ऐतिहासिक घटना काकोरी कंाड थी। देश की आजादी के लिए इस घटना को अंजाम देने वाले 10 क्रांतिकारियों को कई वर्षों तक जेलों में यातनाएं झेलने के साथ अपना जीवन देना पड़ा। भारत माता की रक्षा हित सर्वस्व न्यौछावर करने वाले इन वीर सपूतों के कृतित्व एवं व्यक्तित्व से प्रेरणा लेते हुए हमें भी देश की रक्षा हेतु सर्वस्व न्यौछावर करने का संकल्प लेना होगा।काकोरी कंाड शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में सीता ग्रुप ऑफ एजूकेशन के शास्त्री सभागार में आयोजित व्याख्यानमाला की श्रृंखला में आयोजित कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्वलन एवं मां शारदे व भारत माता के चित्रों माल्यार्पण करते हुए मुख्य अतिथि सुप्रसिद्ध साहित्यकार, इतिहासकार जयराम सोनी ने उक्त बातें विद्यार्थियों व शिक्षकों को संबोधित करते हुए कही। उन्होंने कहा कि क्रांतिकारियों द्वारा चलाए जा रहे स्वतंत्रता आंदोलन में सहयोग हेतु धन की आवश्यकता थी।राम प्रसाद बिस्मिल, अशफाक उल्ला खान, राजेंद्र नाथ लाहिड़ी, मुकुंदी लाल ने अपने 10 साथियों के साथ काकोरी में पैसेंजर ट्रेन से सरकारी खजाना लूट लिया। इस घटना में शामिल सभी क्रांतिकारियों पर सरकारी खजाने को लूटने के तहत मुकदमा चलाया गया।

और छह अप्रैल को जस्टिस हेमिल्टन ने आईपीसी की विभिन्न धाराओं में राम प्रसाद बिस्मिल, अशफाक उल्ला खान, ठाकुर रोशन सिंह, राजेंद्र नाथ लाहिड़ी को फांसी की सजा सुनाई।

इसके साथ कुछ क्रांतिकारियों को आजीवन कारावास और कुछ को कई कई वर्षों के कारावास की सजा मिली। कार्यक्रमध्यक्ष के रूप में निराला साहित्य परिषद के उपाध्यक्ष इंग्लिश लेक्चरर विनोद गुप्त ने भी काकोरी कंाड से जुड़े क्रांतिकारियों की स्मृतियों को जीवंत किया। सीता ग्रुप ऑफ एजूकेशन के चेयरमैन आरके वाजपेयी, डिप्टी मैनेजर वागीश दिनकर वाजपेयी, वाइस प्रिंसिपल आरजे वर्मा, यशपाल वर्मा, राकेश शुक्ल सहित अन्य ने मुख्य अतिथि सहित अतिथियों पूर्व नगर पालिका अध्यक्ष सुरेश वर्मा, जूनियर वर्ग के प्रबंधक रमेश वर्मा, पूर्व जिला प्रभारी हियुवा केके सिंह का स्वागत बैज अलंकरण, माल्यार्पण एवं अंग वस्त्र एवं स्मृति चिन्ह भेंट कर किया। इस अवसर पर सभी शाखाओं के प्रधानाचार्य, उप प्रधानाचार्यों को भी सम्मानित किया गया। वंदे मातरम के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ। संचालन शिशु भारती प्रमुख प्रतिभा सिंह द्वारा किया गया। इस अवसर पर समस्त शिक्षक-शिक्षिकाओं सहित बड़ी संख्या में विद्यार्थी मौजूद रहे।

हाईवे हैवेन रेस्टोरेंट का हुआ उद्घाटन

कैनविज़ टाइम्स संवाददाता

सिधौली सीतापुर। जनपद से लगभग 32 किलोमीटर पहले लखनऊ सीतापुर राष्ट्रीय राजमार्ग पर निकट जनता ढाबा के पास स्थित हाईवे हैवेन रेस्टोरेंट स्वर्गीय रामकरन रावत के पुत्र अंकुर रावत द्वारा रेस्टोरेंट का शुभारंभ किया गया।

उद्घाटन में विशिष्ट अतिथि दैनिक जागरण ब्यूरो चीफ जगदीप शुक्ला एवं मुख्य अतिथि के रूप में अमर शहीद कैप्टन मनोज पांडे जी के चाचा कौशल किशोर पांडे जी उपस्थित हुए। अंकुर रावत ने बताया रेस्टोरेंट पर किसी भी तरह की पार्टी बर्थडे पार्टी , मांगलिक कार्यक्रम आदि हेतु बेहतर सुविधा उपलब्ध करने का पूरा प्रयास रहेगा।

आगंतुक ग्राहकों के लिए स्वच्छता एवं गुणवत्ता का पूरा ध्यान रखा जाएगा। इस अवसर पर उपस्थित मीडिया बंधुओ एवं संभ्रांत लोगों को माल्यार्पण व अंग वस्त्र देकर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर भाजपा जिला प्रकोष्ठ डॉक्टर अभय पांडे जिला अध्यक्ष अनुसूचित मोर्चा रामस्वरूप भार्गव पिंटू रावत देवेंद्र कश्यप निडर जी व तमाम भाई बंधु उपस्थित रहे ।

हजरत गुलजार शाह मेले में बेखौफ दबंगो ने दिनदहाड़े मेला सचिव पर किया जानलेवा हमला

बिसवां सीतापुर कैनविज़ टाइम्स संवाददाता । मेला हजरत गुलजार शाह मे उस समय अफरा तफरी मच गयी जब बेखौफ दबंगो ने दिनदहाड़े मेला सचिव पर जानलेवा हमला कर दिया। दबंगो ने सरेआम तीन गोलियां चलाई गनीमत रही कि गोलियां मेला सचिव के नही लगी। गोली चलाते हुए दबंगो की वीडियो भी सोशल मीडिया पर वायरल हो गयी है।इस घटना से क्षेत्र मे दहशत बनी हुई है। मौके पर पहुंची पुलिस ने मामले की जाँच पड़ताल शुरू कर दी है। मेला सचिव सय्यद हुसैन कादरी ने बताया कि रविवार दोपहर करीब 1 बजे वह मेला पंडाल मे जाकर खड़े ही हुए थे कि पीछे से आबिद घोसी पुत्र अजीज घोसी, सलमान घोसी सईद घोसी, अरशद उर्फ मानु घोसी पुत्र अजीज घोसी व एक अज्ञात निवासी थवई टोला बिसवां ने असलहे से फायरिंग करते हुए तीन गोलियां चला दी। सय्यद हुसैन ने बताया कि उन्होंने किसी तरह भागकर अपनी जान बचाई। हमलावर जान से मारने की धमकी देते हुए भाग गए। सभी हमलावर असलहे से लैस थे। उन्होंने बताया कि ये लोग अवैध वसूली करने का प्रयास कर रहे थे तथा रंगदारी न देने पर जानलेवा हमला किया गया है। सूचना पाकर मौके पर कोतवाली पुलिस पहुँच गयी और मामले की जाँच पड़ताल मे जुट गयी है। सीओ बिसवां सतीश चंद्र शुक्ला ने बताया कि तहरीर के आधार पर मुकदमा पंजीकृत कर कार्यवाही की जा रही है।

मिशन शक्ति अभियान के अन्तर्गत परिवार परामर्श केन्द्र में 05 जोड़े आपसी मतभेद को छोड़कर एक साथ रहने को हुए राजी

सीतापुर कैनविज़ टाइम्स संवाददाता। पुलिस अधीक्षक सीतापुर चक्रेश मिश्र के निर्देशन एवं अपर पुलिस अधीक्षक ळउत्तरीङ्क श्री प्रकाश कुमार के पर्यवेक्षण में मिशन शक्ति अभियान के अन्तर्गत परिवार परामर्श केंद्र पुलिस लाइन सीतापुर में पति-पत्नी से संबंधित पारिवारिक विवादों को प्रभारी परिवार परामर्श केन्द्र एवं काउंसलर के द्वारा शिकायतकर्ता व विपक्षीगणों को सुनकर काउंसलिंग की गई। काउंसलिंग के दौरान 05 जोड़े 1.सरोजनी पत्नी नितिन कुमार निवासी ग्राम संदना थाना रामपुरकलां सीतापुर 2.कोमल देवी पत्नी शैलेन्द्र कुमार निवासी ग्राम घूरखेरा थाना इमलिया सुल्तानपुर सीतापुर 3.सोमवती पत्नी अभिषेक निवासी आंट थाना मिश्रित सीतापुर 4.फूलमती पत्नी उमेश कुमार निवासी ग्राम रामनगर थाना हरगांव सीतापुर 5.नीतू पत्नी सूरज निवासी ग्राम इस्माइलपुर थाना कोतवाली देहात सीतापुर ने आपसी मतभेद दूर कर एक साथ रहने को राजी हुए एवं परिवार परामर्श केंद्र द्वारा 05 लोगों की विदाई कराई गई। काउंसलिंग के दौरान प्रभारी परिवार परामर्श केन्द्र प्रभारी मधु यादव, महिला आरक्षी गीता, आरक्षी शिवा ढाका, काउंसलर श्री विकास वर्मा, सुश्री मांडवी मिश्रा, श्रीमती शशिकला मिश्रा आदि मौजूद रहे।

आर्थिक रूप से कमजोर बच्चों ने विभिन्न खेलों में प्रतिभाग कर अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाया

मुरादाबाद। पराग ह्यूमन फाउंडेशन ट्रस्ट की ओर से रविवार को गरीब, असहाय बच्चों के लिए स्पोर्ट्स मीट का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मुरादाबाद की परिवर्तन द चेंज, सेवा दा सर्विंग, उम्मीद एक संस्था, आओ हाथ बढ़ाएं, पराग ह्यूमन फाउंडेशन ट्रस्ट, श्री संतराम एंपावरिंग लाइफ, बीडी पब्लिक स्कूल, अल्पाइन पब्लिक स्कूल, गंगा आरोग्यधाम, बढ़ते कदम एनजीओ ने संयुक्त रुप से प्रतिभाग किया। कार्यक्रम में करीब 150 बच्चों को विभिन्न खेलों में अपनी प्रतिभा प्रदर्शन का अवसर मिला। मुख्य अतिथि के रूप में रानी प्रीतम स्कूल की प्रिंसिपल भावना दयाल, विशिष्ट अतिथि समाजसेविका कोमल गांधी एवं सोनिया खन्ना ने दीप प्रज्जवलित कर कार्यक्रम की परंपरागत शुरुआत की और सभी बच्चों को मेडल पहनाकर उनका उत्साहवर्धन किया। सभी अतिथियों ने कहा कि जरूरतमंद बच्चों को खेलकूद के लिए एक मंच प्रदान करना है एवं उनकी छुपी हुई प्रतिभा को निखारकर सभी के समक्ष प्रस्तुत करना हैं एक सराहनीय व प्रेरणादायक कदम है। पराग ह्यूमन फाउंडेशन ट्रस्ट संस्था की संस्थापिका गरिमा सिंह ने कहा कि झुग्गी झोपड़ियों एवं आर्थिक रुप से कमजोर, गरीब, असहाय बच्चों को व्यायाम एवं खेलों के प्रति प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से पराग ह्यूमन फाउंडेशन संस्था हर वर्ष स्पोर्ट्स मीट का आयोजन करती है। जिससे ऐसे बच्चों को न केवल एक प्लेटफार्म मिलता है बल्कि उनमें आत्मविश्वास भी बढ़ता है। उन्होंने आगे बताया कि सेक रेस, 100 मीटर, हर्डल रेस, लेमन एवं स्पून रेस, रस्सा कशी आदि खेलों में बच्चों ने प्रतिभाग किया। निर्णायक मंडल में क्रिप्टन पब्लिक स्कूल की एथलीट कोच रिंपी सिंह एवं फिटनेस कोच अपूर्वा शर्मा मौजूद रहीं। गरिमा सिंह ने आगे बताया कि 8 से 12 वर्ष के वर्ग में 100 मीटर रेस में सेल्फ एन जी ओ के मास्टर कमल और उमंग विजयी रहे। लेमन रेस में बीडी पब्लिक स्कूल की मानवी, सैक रेस में बीडी पब्लिक स्कूल की रौनक, सेव द सर्विंग से वशिका प्रथम स्थान पर रहीं। हर्डल रेस में मास्टर्स रॉबिन अल्पाइन पब्लिक स्कूल से प्रथम स्थान पर रहे। 13 से 17 साल वर्ग में लेमन रेस में गंगा आरोग्यधाम की खुशी, सेक रेस में सेल्फ की मानवी, 100 मीटर रेस में अल्पाइन स्कूल से अनुराग, हर्डल रेस में उम्मीद संस्था से लक्ष्मी और रस्साकशी में सेव द सर्विंग की सना प्रथम स्थान पर रहीं। कार्यक्रम में विमल राठौर ने कोच की भूमिका अदा की, पीएचएफ विद्यापीठ की निक्की, नीलिमा एवं साक्षी बंसल का विशेष सहयोग रहा।

खबर का असर

स्वास्थ्य विभाग ने ओम हॉस्पिटल के संचालन पर लगाई रोक

कैनविज़ टाइम्स संवाददाता

सीतापुर। जनपद की कोतवाली देहात थाना क्षेत्र के अंतर्गत लखीमपुर रोड पर स्थित नैपालपुर चौराहे पर संचालित ओम हॉस्पिटल में नौव्वा महमूदपुर के नेवादा गांव निवासी 35 वर्षीय मालती की इलाज के दौरान मौत हो गयी थी। परिजनों ने हॉस्पिटल के डॉक्टर पर लापरवाही का आरोप लगाते हुए अस्पताल के बाहर जमकर हंगामा काटा था। जिसकी खबरे समाचार पत्र में प्रकाशित हुई थी प्रकाशित समाचार को स्वास्थ्य विभाग के मुखिया सीएमओ हरिपाल सिंह ने संज्ञान में लेते हुए

कार्यवाही हेतु टीम का गठन करते हुए एडिश्नल सीएमओ मनोज मणी के नेतृत्व में कार्यवाही करने के निर्देश दिए, एडिश्नल सीएमओ मनोज मणी के द्वारा ओम हॉस्पिटल का निरीक्षण करते हुए ओम हॉस्पिटल के संचालन पर रोक लगाते हुए जांच के पूर्ण होने तक हॉस्पिटल को बंद करने के निर्देश दिए है।

इस सम्बंध में एडिश्नल सीएमओ मनोज मणी से जब बात की गई तो उनके द्वारा बताया गया कि समाचार पत्र के माध्यम से जानकारी प्राप्त हुई थी कि एक महिला की ओम हॉस्पिटल में डॉक्टरों की लापरवाही के चलते मौत हो गयी थी जिसका संज्ञान लेते हुए हॉस्पिटल का निरीक्षण कर संचालन पर रोक लगा दी गयी है, जांच की जा रही है अगर लापरवाही से महिला की मौत का मामला प्रकाश में आया तब हॉस्पिटल का रजिस्ट्रेशन निरस्त करने की कार्यवाही की जाएगी।

जीवन में हमेशा बड़े सपने देखें : डॉ. विनोद कुमार

मुरादाबाद। आरएसडी अकेडमी इंस्टीट्यूट आफ मेडिकल साइंसेज के तत्वावधान में रविवार को एक समागम कार्यक्रम का भव्य आयोजन किया गया जिसका मुख्य उद्देश्य बीएससी नर्सिंग में नव प्रवेशित छात्र-छात्राओं का स्वागत एवं बीएससी नर्सिंग 2024 में शिक्षा संपूर्ण कर चुके स्टूडेंट्स को विदाई देना था। कार्यक्रम का शीर्षक 'विविधता-2024' जो कि दर्शाता है हम सभी को जानने की जिज्ञासा को सदैव बनाए रखना चाहिए। आरएसडी समूह के अध्यक्ष डॉ. विनोद कुमार ने कहा कि जीवन में हमेशा बड़े सपनें देखें और उनको ईमानदारी, कर्मठता, लग्न, कर्तव्यनिष्ठा आदि के मार्ग पर चलते हुए पूरा करें। इससे निश्चित है कि कि सफलता आपके कदम चूमेगी।

उच्च अधिकारियों के आदेशों को भी दबाकर बैठ गए अधीनस्थ अधिकारी

कैनविज़ टाइम्स संवाददाता

लहरपुर सीतापुर। पुलिस विभाग में जनता की आवाज को दबाना तो आम बात है लेकिन यहां तो उच्च अधिकारियों के आदेशों को भी अधीनस्थ दबाकर बैठ गए, स्थानीय कोतवाली में स्थानांतरण होने के बाद भी लगभग आधा दर्जन लोगों को अभी भी कार्य मुक्त नहीं किया गया। इसी कड़ी में नगर चौकी पर तैनात दीवान विनय कुमार व आरक्षी मनीष का स्थानांतरण हुए लगभग 8 माह बीत चुके हैं लेकिन आज तक रवानगी न होना क्षेत्र में चर्चा का विषय बना हुआ है, आम जनमानस इनसे बेहद

परेशान हो चुका है जिसके चलते लोग दबी जुबान से उनके कारनामों की चर्चा भी लोग करने लगे है। चर्चा यह भी हो रही है की लोगों का शोषण अनावश्यक रूप से परेशान करना और अवैध वसूली के चर्चे गली-गली पान और चाय की दुकानों होती देखी जा सकती है अफसोस लेकिन लोग खुलकर आज भी इस बात को कहने से डरते हैं की कहीं अनावश्यक रूप से फसाकर कोई कार्रवाई न कर दी जाए, अतिविश्वसनीय सूत्रों की माने तो पुलिस अधीक्षक ने उनकी ही रवानगी के लिए एक कार्यक्रम स्पेशल कहा भी था उसके बावजूद भी रवानगी न होना उच्च अधिकारियों के आदेशों की अवहेलना साफ दर्शाती है, जिसका फायदा उठाकर उपरोक्त दीवान व आरक्षी जमे हुए हैं। स्थानीय स्तर से त्योहारों का हवाला देकर रोकना और अवैध वसूली करने में माहिर हैं दोनों ऐसी भी चर्चा आम है रवानगी न होने के चलते लोगों में काफी रोष भी पनपता जा रहा है।

पूर्वजों की याद में पुण्य तिथि पर हुआ कम्बल वितरण

कैनविज़ टाइम्स संवाददाता

जहांगीराबाद सीतापुर। रेउसा क्षेत्र के चंद्रसेनी गांव में गतवर्ष की भांति इस वर्ष भी स्व0 शंकर बक्स सिंह व स्वर्गीया कमला देवी के प्रपौत्रों कुँवर रुद्रप्रताप सिंह पुत्र शरद सिंह (मोनू भैय्या) व देवेन्द्र प्रताप सिंह के अथक प्रयासों से क्षेत्र के बुजुर्गों व महिलाओं को लगभग 396 कम्बलों का वितरण किया गया। कंबल वितरण समारोह में अतिथि के रूप में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सह जिला प्रचारक बिसवां अजय जी व विभाग सेवा प्रमुख मिथिलेश जी, वरिष्ठ समाजसेवी दीपक शुक्ला, नगर सम्पर्क प्रमुख बिसवां विशाल

गुप्ता, खण्ड सम्पर्क प्रमुख बिसवां अभिषेक मिश्र व रेउसा ब्लाक सद्भावना प्रमुख राज प्रताप सिंह आदि मौजूद रहे। इस अवसर पर देवेन्द्र प्रताप सिंह, सुरेश प्रताप सिंह, नवनीत सिंह(तानू), राजीव प्रताप सिंह,सोनू सिंह,ज्ञानू सिंह,अभय प्रताप सिंह,अखिल प्रताप सिंह, पत्रकार राकेश कुमार नंद,पंकज अवस्थी, अजीत मौर्य व शिवकुमार सिंह सहित सैकड़ों लोग मौजूद रहे।

एथेनॉल केअधिग्रहित भूमि पर कराया कब्जा

❒ बल प्रयोग में किसान व पुलिसकर्मी हुए घायल*

❒ दर्जनों किसानों को पुलिस गिरफ्तार कर ले गई थाने

कैनविज टाइम्स संवाददाता

कुशीनगर । जिले में ढाढा स्थित अवध शुगर मिल एंड एनर्जी लिमिटेड की यूनिट न्यू इंडिया शुगर मिल में प्रस्तावित एथेनॉल फैक्ट्री के लिए सुबह जिले के उच्चधिकारियों समेत कई थानों की पुलिस जमीन कब्जा कराने पहुंची, जहां किसानों के भारी विरोध का सामना करना पड़ा। इस दौरान किसानों से पुलिस की खूब नोकझोंक हुई। मौके पर अफरातफरी का माहौल कायम रहा। राज्य सरकार द्वारा वर्ष 2008 -09 में कुल 176 किसानों की 19.804 हेक्टेयर भूमि अधिगृहित कर लिया गया था जिसमें 88 किसानों ने मुआवजा लेकर 5.32 हेक्टेयर भूमि चीनी मिल को दे दिया। लेकिन 86 किसानों ने 14.481 हेक्टेयर भूमि पर अपना कब्जा किया था वहीं चीनी मिल की भूमि के लिए लगातार जिला प्रशासन ने किसानों से वार्ता किया, लेकिन प्रयास विफल रहा। वहीं किसान अपनी मांगों के लिए जिला न्यायालय से हाई कोर्ट में याचिका दायर किया लेकिन हाई कोर्ट ने किसानों की याचिका खारिज कर दिया।

वहीं रविवार को शासन के निर्देश पर जिला प्रशासन की ओर से एडीएम वैभव मिश्र व एडीशनल एसपी रितेश कुमार सिंह के नेतृत्व में सभी तहसीलों के एसडीएम व तहसीलदार नायब तहसीलदार सहित सभी सीओ,सभी थानों के थाना प्रभारी मय फोर्स सुबह 10.30 बजे कब्जा कराने पहुंची और किसानों से वार्ता कर रही थी तो कुछ किसान युवा व महिलाएं उग्र होने लगे जहां पुलिस बल ने हल्का बल प्रयोग करते हुए किसानों को हटाया।वहीं शांति व्यवस्था बनाए रखने को लेकर दर्जनों किसानों को हिरासत में ले लिया।

जिला प्रशासन की पूरी टीम ने अधिग्रहित भूमि पर चीनी मिल का कब्जा कराया।इस मामले में पुलिस 13 लोगों के विरुद्ध मुकदमा दर्ज किया जिनमें तीन महिलाएं भी शामिल हैं। वहीं मौके पर एहतियात तौर पुलिस बल तैनात हैं।वहीं इस संबंध में एडीएम वैभव मिश्र ने कहा कि राज्य सरकार के निर्देश पर अधिग्रहित भूमि पर कब्जा दिलाया गया है।

चीनी मिल द्वारा एथेनॉल फैक्ट्री लगने से स्थानीय किसानों का विकास व उनकी उपज का लाभ मिलेगा।इस दौरान प्रभारी एसडीएम मोहम्मद जफर, सीओ कुंदन सिंह,सीओ जितेन्द्र कालरा, तहसीलदार नरेन्द्र राम, प्रभारी निरीक्षक सुशील कुमार शुक्ल, तरयासुजान राज प्रकाश सिंह सहित सभी थानों के प्रभारी, लेखपाल सहित अग्निशमन विभाग, स्वास्थ्य टीम मौके पर मौजूद रही।

पत्रकार के साथ हुई बदसलूकी

जिला प्रशासन द्वारा ढाढा चीनी मिल में एथेनॉल फैक्ट्री हेतू अधिग्रहण जमीन कब्जा के दौरान फोटो ग्राफी कर रहे एक अखबार के जिला स्तरीय पत्रकार से पुलिस ने बदसलूकी की और धक्का मुक्की भी किया।वहीं इस घटना के विरोध में पत्रकारों ने निंदा की है।

तेज रफ्तार बाइक सवार ने बुजुर्ग दंपति को मारी जोरदार टक्कर, दोनों की मौत

कैनविज टाइम्स संवाददाता

कुशीनगर। राष्ट्रीय राजमार्ग-28 स्थित सुखारी छपरा के सामने तेज रफ्तार बाइक सवार ने रविवार को पैदल सड़क पार कर रहे दंपती को जोरदार टक्कर मार दी। जिससे बुजुर्ग दंपती की मौत हो गई।

मिली जानकारी के मुताबिक, नगरपालिका कुशीनगर के वार्ड नंबर 21 बुद्ध नगरी (सुखारी छपरा) निवासी फूलबदन पाठक (75) पत्नी मंजू देवी (70) रविवार दोपहर बाद करीब ढाई बजे घर जाने के लिए राष्ट्रीय राजमार्ग-28 पैदल पार कर रहे थे।

इस बीच कुशीनगर की तरफ से जा रहे तेज रफ्तार बाइक की चपेट में आने से पति-पत्नी गंभीर रूप से घायल हो गए। सूचना पर दुर्घटना स्थल पर आई पुलिस ने दोनों को सीएचसी कसया भेजवाई। जहां चिकित्सकों ने महिला मंजू देवी को मृत घोषित कर दिया, जबकि फूलबदन पाठक का प्राथमिक उपचार कर जिला अस्पताल रेफर किया। जहां रास्ते में ले जाते समय उनकी भी मौत हो गई।

अधिकारी जन शिकायतों के प्रति संवेदनशील रहें : पर्यटन मंत्री

एजेंसी

फिरोजाबाद। उत्तर प्रदेश सरकार के पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री जयवीर सिंह ने रविवार को सिरसागंज स्थित अपने कैंप कार्यालय पर दूर दराज क्षेत्र से आए लोगों की शिकायतों को एक-एक कर गम्भीरता से सुना और उनका निस्तारण कराया। पर्यटन मंत्री जयवीर सिंह ने फरियादियों के प्रार्थना पत्र को सम्बन्धित अधिकारियों से फोन पर वार्ता कर मौके पर ही निस्तारण कराया। शेष शिकायतों को उपस्थित अधिकारियों को एक सप्ताह के अन्दर गुणवत्ता के साथ निस्तारण करने के निर्देश दिए। जन सुनवाई कार्यक्रम में स्थानीय लोगों के अतिरिक्त मैनपुरी, इटावा, एटा, फिरोजाबाद सहित अन्य जनपदों से आए फरियादियों की समस्याओं को गम्भीरता से लेते हुए सम्बन्धित अधिकारियों से फोन पर वार्ता कर निस्तारण कराया। उन्होने जन शिकायतें सुनने के दौरान कहा कि अधिकारी जन शिकायतों के प्रति संवेदनशील रहें, आमजन की शिकायतों का समयबद्ध, गुणवत्तापरक निराकरण किया जाए ताकि किसी भी व्यक्ति को अपनी समस्या के समाधान के लिए बार-बार चक्कर न लगाने पड़ें। उन्होंने कहा कि जन-शिकायतों का समयबद्ध, गुणवत्तापरक निराकरण प्रदेश सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता में है यदि किसी भी अधिकारी, कर्मचारी के द्वारा शिकायतों के निराकरण में कोताही बरती गई या किसी भी स्तर पर शिकायत के निस्तारण में विलंब किया गया तो संबंधित अधिकारी, कर्मचारी की जिम्मेदारी तय की जाएगी। उन्होंने कहा कि किसी भी अधिकारी कर्मचारी के द्वारा किसी भी शिकायतकर्ता को बेवजह परेशान न किया जाए, पात्र होने की दशा में उसे प्रदेश सरकार द्वारा संचालित जन-कल्याणकारी योजनाओं का लाभ प्रत्येक दशा में उपलब्ध कराया जाए। पर्यटन मंत्री के जनसुनवाई कार्यक्रम के दौरान उप जिलाधिकारी सिरसागंज, पुलिस क्षेत्राधिकारी सिरसागंज सहित संबंधित अधिकारी कर्मचारी सहित बड़ी संख्या में फरियादी उपस्थित रहे।

व्यापारियों का उत्पीड़न नहीं हुआ बंद तो सीएम योगी से मिलेंगे पूर्वांचल व्यापार मंडल से जुड़े व्यापारी:राजेश सैनी

❒ सिल्वर जुबली के रूप में नए वर्ष 3 फरवरी को व्यापारी सम्मेलन में व्यापारियों को एकजुट के लिए किया गया अपील

कैनविज टाइम्स संवाददाता

पडरौना,कुशीनगर। पूर्वांचल व्यापार मंडल की तरफ से व्यापारियों की नगर के जूनियर हाई स्कूल के प्रांगण में रविवार को एक आवश्यक बैठक संपन्न हुई। इसमें आगामी 2025 नए वर्ष में 3 फरवरी को पडरौना नगर में व्यापारी सम्मेलन को सिल्वर जुबली के रुप में ऐतिहासिक तौर पर मनाने का निर्णय लिया गया। पूर्वांचल व्यापार मंडल के प्रदेश अध्यक्ष राजेश सैनी ने कहा कि आए दिन जिले में व्यापारियों के दुकानों पर खाद्य और सैंपल विभाग के फर्जी इंस्पेक्टर के रूप में अवैध वसूली की शिकायत आ रही है, उन्होंने जनपद के सभी व्यापारियों से अपील किया कि बिना पहचान पत्र दिखाने और किसी को भी अधिकारी बताने वालों को किसी भी प्रकार की खाद्य से जुड़ी सामानों का सिंपल न देने का कारण न करें। श्री सैनी ने चेताया कि व्यापारियों का उत्पीड़न बंद नहीं हुआ तो शीघ्र ही लेकिन प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से मिलकर व्यापारी हित की समस्याओं को लेकर मिलकर अवगत कराया जाएगा।

पूर्वांचल व्यापार मंडल के जिला अध्यक्ष संतोष वर्मा ने कहा कि सरकार की तरफ से समस्त टैक्स को ऑनलाइन किया गया है,फिर भी कुछ अधिकारी की ओर से मैन्युअल वसूली की जा रही है,जो किसी भी परिस्थिति में इसको बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। उन्होंने व्यापारियों से कहां की किसी भी प्रकार की व्यापारी हित में समस्या आने पर प्रदेश अध्यक्ष राजेश सैनी और जिला अध्यक्ष संतोष वर्मा से उम्मीद कर सकते हैं। प्रदेश प्रभारी विजय प्रकाश पांडेय ने कहा कि समस्त व्यापारियों अपने व्यापार हित में निर्भर होकर व्यापार करें,किसी भी प्रकार की समस्या हो तो व्यापार मंडल के वरिष्ठ व्यापारियों से संपर्क करें। इसके अलावा गोरखपुर मंडल के व्यापार मंडल के अध्यक्ष आशीष मणि त्रिपाठी ने कहा की ब्यापारी स्थापना दिवस 3 फरवरी आगामी नए साल पर पडरौना सिल्वर जुबली के रूप में व्यापारी मनाने के लिए अभी से एकजुट हो जाए। बैठक की अध्यक्षता पूर्वांचल व्यापार मंडल के अध्यक्ष संतोष वर्मा ने किया जबकि संचालन पूर्वांचल व्यापार मंडल के प्रदेश संतोष राजेश सैनी ने किया। इस दौरान पुर्वांचल व्यापार मंडल के व्यापार मंडल के बिधिक सलाहकार अरुण मिश्रा,महामंत्री अशोक मिश्रा मंडल महामंत्री दीनबंधु जायसवाल जिला उपाध्यक्ष सतीश पटेल और भारतीय जनता पार्टी के पूर्व नगर अध्यक्ष प्रमोद शाह,हिंदू जागरण मंच के प्रभारी रवि सिंह आदि लोगों ने बैठक को संबोधित किया। इस दौरान व्यापार मंडल के दीनानाथ सैनी, ईश्वर चंद्र जायसवाल,पप्पू सोनी, शिवशंकर मद्धेशिया, दिनेश वर्मा, मोहन सिंह, मुख्तार अहमद, राजन सिंह पटेल, तस्लीम आलम, संजय केसरी, राजकुमार गुप्ता,रविंद्र मद्धेशिया, नाथू सिंह पटेल,नीरज चौरसिया, सतीश कुमार,प्रभु मोदनवाल,राघव शरण आदि लोग मौजूद रहे।

पं.दीन दयाल उपाध्याय जीआरपी ने 1 कुंतल चांदी के साथ तीन युवकों को पकड़ा

एजेंसी

चंदौली। जिले के पंडित दीन दयाल उपाध्याय (पीडीडीयू) जंक्शन पर जीआरपी ने प्लेटफार्म संख्या 2 से तीन युवकों को गिरफ्तार कर उनके पास से एक कुंतल 3 किलो चांदी और 3 लाख 75 हजार रूपए नगद बरामद किया। बरामद चांदी की कीमत लगभग एक करोड़ रूपए आंकी गई है।

जीआरपी ने व्यापार कर व आयकर विभाग को इसकी जानकारी दे दी है। जीआरपी क्षेत्राधिकारी कुंवर प्रभात सिंह ने रविवार को ये जानकारी पत्रकारों को दी। उन्होंने बताया कि जीआरपी प्रभारी सुनील कुमार सिंह जवानों के साथ संदिग्ध यात्रियों और उनके सामान की चेकिंग कर रहे थे। इसी दौरान प्लेटफार्म संख्या 1/2 पर तीन संदिग्ध युवक आते दिखे। जीआरपी टीम ने उन्हें रोक कर उनके पिट्ठू बैगों की तलाशी ली तो उसमें चांदी की सिल्ली और 03 लाख 75 हजार रुपये नगद मिला। तीनों को जीआरपी थाने लाया गया। पूछताछ में तीनों ने अपना नाम चौबीस परगना पश्चिम बंगाल निवासी सुदीपतो मंडल, अभिजीत मंडल, हावड़ा निवासी राकेश यादव बताया। तीनों बरामद चांदी से जुड़ा कोई कागजात नहीं दिखा पाए। इसके बाद जीआरपी ने पूरे मामले की जानकारी आयकर विभाग को दी। जीआरपी तीनों के खिलाफ विधिक कार्रवाई में जुटी हुई है। पूछताछ में तीनों ने बताया कि राजधानी एक्सप्रेस से पश्चिम बंगाल जाने के लिए डीडीयू स्टेशन पर आए थे।

बांग्लादेश में हिन्दुओं को मिले पूर्ण सुरक्षा: युद्धिष्ठिर कृष्ण दास

एजेंसी

मथुरा। भक्ति वेदांत स्वामी मार्ग स्थित वृन्दावन चंद्रोदय मंदिर के भक्तों ने रविवार बांग्लादेश में सनातन धर्म के अनुयायियों पर हो रहे अत्याचारों के विरोध में उनकी शांति, न्याय और सुरक्षा के लिए हरिनाम संकीर्तन कर शांतिपूर्ण विरोध व्यक्त किया। चंद्रोदय मंदिर के उपाध्यक्ष युद्धिष्ठिर कृष्ण दास ने कहा कि बांग्लादेश में सनातनियों को धार्मिक कट्टरपंथियों के हाथों दबाने का प्रयास किया जा रहा हैं। वह बांग्लादेश सरकार से आग्रह करते हैं कि वह वहां रह रहे हिन्दुओं को बिना किसी भय और उत्पीड़न के अपने धर्म और सिद्धांतों का पालन करने के लिए सुरक्षा और स्थान प्रदान करें। अखिल भारतीय चतुः संम्प्रदाय के श्रीमहंत फूलडोल बिहारी दास जी महाराज ने कहा कि सनातन के विघटन का सबसे बड़ा कारण जातिवाद है। हमारी एकता ही हमारा शस्त्र है। अब समय सुदर्शन धारी कृष्ण के सिद्धांतों पर चलने का है। वहीं महामण्डलेश्वर नवल गिरी जी महाराज ने कहा कि देश में अभी सनातन प्रेमियों की सरकार है। देश भारत के शीर्ष नेतृत्व की तरफ देख रहा है कि बांग्लादेश में सनातनियों पर हो रहे अत्याचार को रोका जाए एवं उन्हें रक्षा, सुरक्षा और न्याय मिले। संस्थापक ब्रज तीर्थ देवालय न्यास मृदुल कांत शास्त्री जी ने बाग्लादेश में हो रहे नरसंहार की खुले दिल से निंदा करते हुए कहा कि यदि हम अपना रोष केवल शांति सभाओं के माध्यम से व्यक्त करेंगे तो इस देश के चाहे सत्ता पक्ष हो या विपक्ष हो उन्हें हमारी समस्या समझ में नहीं आने वाली। धर्म रक्षा संघ के संयोजक आचार्य बद्रीश ने कहा कि विपक्ष के किसी नेता का बांग्लादेश में हिन्दुओं पर हो रहे अत्याचार को लेकर किसी प्रकार का कोई बयान नहीं आया। वहीं संभल में हुई घटना पर लोकसभा और राज्यसभा नहीं चल पा रही है। आपकों हमें यह समझना होगा कि कौन हमारे साथ है और कौन देश विरोधी।वहीं क्रान्तिकारी संत सत्यमित्रानंद ने कहा कि सनातन है तो हम हैं। समय अब सनातन विरोधी ताकतों को मुंह तोड़ जाबाव देने का है। आधुनिक युग में सोशल मीडिया का प्रयोग सभी कर रहे हैं। उसमें ही सही कोई सनातन धर्म पर व्यर्थ टिप्पणी कर रहा है। उसे उसकी भाषा में समझाना चाहिए। यही कलिकाल की आश्यकता भी है।इस अवसर पर चंद्रोदय मंदिर में आयोजित हरिनाम संकीर्तन में बाग्लादेश में सनातनियों के जीवन में शांति, न्याय और सुरक्षा की भावना को प्रबल करने के उद्देश्य से हजारों की संख्या में भक्तगण चंद्रोदय मंदिर पहुंचे।

गैंगलीडर साजिद खान की 25 लाख से अधिक की सम्पत्ति कुर्क

फिरोजाबाद। थाना उत्तर पुलिस टीम ने रविवार को गैंगस्टर एक्ट के गैंगलीडर अभियुक्त साजिद खान की 25 लाख से अधिक की चल व अचल सम्पत्ति को मौके पर जाकर कुर्क करते हुए जब्तीकरण की कार्यवाही की है। सीओ सिटी अरुण कुमार चौरसिया ने बताया कि वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक सौरभ दीक्षित द्वारा अपराधियों के विरूद्ध चलाए जा रहे विभिन्न अभियानों के अन्तर्गत थाना उत्तर पुलिस टीम ने राजस्व टीम के साथ गिरोहबंद एवं असामाजिक क्रियाकलाप (निवारण) अधिनियम 1986 थाना दक्षिण जनपद फिरोजाबाद से सम्बन्धित गैंगस्टर एचएस 111 ए साजिद खान पुत्र स्व. ताहिर खान निवासी मौहल्ला कटरा पठानान थाना दक्षिण की अन्तर्गत धारा 14(1) गिरोहबंद एवं असामाजिक क्रियाकलाप (निवारण) अधिनियम 1986 में अचल सम्पत्ति मूल्य 25 लाख साठ हजार दो सौ छियानवे रूपये (25,60,296 रूपये) को कुर्क कर जब्तीकरण की कार्यवाही की है। उन्होंने बताया कि गैंगलीडर अभियुक्त साजिद खान की पूर्व में भी थाना उत्तर पुलिस टीम द्वारा मूल्य 3 करोड़ 30 लाख 51 हजार 920 रुपये की चल व अचल सम्पत्ति कुर्क की जा चुकी है। गैंगलीडर अभियुक्त साजिद खान पर जनपद के विभिन्न थानों में एक दर्जन से अधिक अभियोग पंजीकृत है।

18 दिसम्बर से दो दिवसीय प्रवास पर मुरादाबाद में रहेंगे डॉ प्रवीण भाई तोगड़िया अंतर्राष्ट्रीय हिंदू परिषद के अंतरराष्ट्रीय अध्यक्षमुरादाबाद के चिकित्सकों, व्यापारियों, सिक्ख समाज, हिंदू संगठनों, मठ मंदिर के पुरोहितों आदि के साथ करेंगे बैठक

मुरादाबाद, 01 दिसम्बर (हि.स.)। राष्ट्रीय बजरंग दल के प्रदेश अध्यक्ष रोहन सक्सेना ने रविवार को बताया कि आगामी 18 दिसंबर को अंतर्राष्ट्रीय हिंदू परिषद के अंतरराष्ट्रीय अध्यक्ष विश्व विख्यात कैंसर सर्जन डॉ प्रवीण भाई तोगड़िया का मुरादाबाद महानगर में आगमन होगा। डॉ तोगड़िया 18 दिसम्बर को रात्रि विश्राम मुरादाबाद में करके 19 दिसम्बर को महानगर में विभिन्न कार्यक्रमों में हिस्सा लेंगे। रोहन सक्सेना ने आगे बताया डॉ प्रवीण भाई तोगड़िया दो दिवसीय प्रवास के दौरान मुरादाबाद जनपद के चिकित्सकों, व्यापारियों, सिक्ख समाज, हिंदू संगठनों, मठ मंदिर के पुरोहितों आदि के साथ बैठक करके उनकी समस्याएं सुनेंगे। इसके अलावा वह अंतर्राष्ट्रीय हिंदू परिषद व राष्ट्रीय बजरंग दल के साथ राष्ट्रीय बजरंग दल के पदाधिकारियों व कार्यकर्ताओं के साथ कार्यकर्ता समागम बैठक करेंगे। रोहन के अनुसार अंतरराष्ट्रीय अध्यक्ष के प्रवास को लेकर आने वाले दिनों में योजना रचना बनाई जाएगी। महानगर और जिला टोली समिति की बैठक भी आयोजित की जाएगी।

विदेश भेजने के नाम पर 2.50 लाख ठगने के आरोप में तीन पर केस

मुरादाबाद। मुरादाबाद के थाना भगतपुर क्षेत्र के गांव भगतपुर टांडा निवासी मोहम्मद आकिल ने न्याायालय में वाद दायर कर अपने रिश्तेदार समेत तीन आरोपितों पर विदेश भेजने के नाम पर ढाई लाख रुपये ठगने का आरोप लगाया था। कोर्ट के आदेश पर रविवार को थाना पुलिस ने तीनों आरोपितों के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कर ली है। गांव भगतपुर टांडा निवासी मोहम्मद आकिल ने बताया कि उसके रिश्तेदार अकरम ने उसे अजरबैजान देश जाने की सलाह दी। कहा कि वहां उसकी पहचान है। वह अजरबैजान में उसकी नौकरी लगवा देगा। आरोप है कि अकरम ने साथी नासिर और शमशाद के साथ विदेश भेजने के नाम पर उससे 2.50 लाख रुपये ले लिए। इसके बाद वह आरोपितों के दिए टिकट को लेकर वह एयरपोर्ट पर पहुंचा तो वह फर्जी निकला। गांव वापस आने के बाद उसने आरोपितों से रुपये मांगे तो आरोपितों ने रकम देने से मना कर दिया। इसके बाद मोहम्मद आकिल ने कोर्ट में प्रार्थनापत्र देकर न्याय की गुहार लगाई थी। एसपी देहात कुंवर अभिषेक सिंह ने बताया कि मामले में रविवार को कोर्ट के आदेश पर भगतपुर पुलिस ने तीनों आरोपितों के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कर ली है।

ग्रेटर नोएडा में अपहरण के बाद 50 वर्षीय व्यक्ति की हत्या, झाड़ियों में मिली लाश

ग्रेटर नोएडा, 1 दिसंबर(हि.स.)। थाना सूरजपुर क्षेत्र मैं थाना सूरजपुर क्षेत्र में एक 50 वर्ष से व्यक्ति की अपहरण के बाद गला घोट कर हत्या कर दी गई और लाश को खोदना खुर्द गांव के जंगल मे झाड़ी में फेंक दिया गया। घटना की जानकारी मिलने पर आसपास के क्षेत्र में सनसनी फैल गई। सूचना मिलने पर पुलिस मौके पर पहुंची और जांच पड़ताल शुरू की। पुलिस ने मरने वाले व्यक्ति की लाश को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। 50 वर्ष से ब्रह्मजीत सिंह देवला गांव में अपने परिवार के साथ रहता था। वह पिछले तीन दिनों से लापता था। रविवार को उसकी लाश खोदना खुर्द के जंगल में झाड़ियां में बरामद हुई। उसकी गला घोटकर हत्या की गई है। पुलिस ने बताया कि तीन दिन पहले ब्रह्मजीत सिंह अपने परिवार को बिना बताएं घर से गया था। उन्होंने बताया कि ब्रह्मजीत का गांव के ही एक व्यक्ति से रूपयों को लेकर विवाद चल रहा था। प्रारंभिक जांच के दौरान परिजनों ने गांव के ही व्यक्ति पर अपने दोस्तों के साथ मिलकर हत्या करने का आरोप लगाया है। पुलिस ने फुटेज की जांच की तो पता चला कि आरोपी युवक दो अन्य युवकों के साथ बाइक पर जाता हुआ दिखाई दे रहा था। पुलिस अब बाइक सवार युवकों की तलाश में जुटी है।

देश में बह रही है विकास की गंगा : गिरीश चंद्र यादव

एजेंसी

जौनपुर। प्रदेश के खेल और युवा कल्याण मंत्री मंत्री गिरीश चंद्र यादव रविवार को डाक बंगला में हिन्दुस्थान समाचार प्रतिनिधि से बात करते हुए कहा कि प्रदेश में विकास की अविरल धारा बह रही है। प्रधानमंत्री आवास योजना के अन्तर्गत हर ग़रीब को घर, शौचालय, राशन, चिकित्सा आदि मुहैया कराया जा रहा है। जौनपुर में रिंग रोड का निर्माण,तीन स्टेडियम का नवीनीकरण,नये स्टेडियम के निर्माण की औपचारिकता, अठारह घंटे विद्युत, गोमती नदी पर दो नये सेतु का निर्माण,नदी के नये घाटों और पुराने घाटों की मरम्मत,सीवर लाइन का निर्माण कार्य तेजी से चल रहा है।

नगर में चल रही सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट और एसटीपी परियोजना के तहत तेजी से कार्य कराया जा रहा है जिससे गोमती नदी में शहर का गिरने वाला गंदा पानी अब सीवर द्वारा सीधे प्लांट में जाएगा, जहां से पानी को साफ कर पुनः गोमती नदी में भेजा जाएगा इससे गोमती माता स्वच्छ और पानी भी अविरल और निर्मल होगा।

जिले को बेहतर ढंग से विकसित करने के लिए नगर में वह शहर के चारों तरफ आसपास बेहतर सड़कों का निर्माण कराया जा रहा है जिस लोगों को आवागमन में सुविधा हो। नगर के जगदीशपुर और सीहिपुर रेलवे क्रॉसिंग पर ओवरब्रिज प्रस्तावित है। जल्द ही उसे पर भी कार्य शुरू कर दिया जाएगा।सरकार की ज़ीरो टालरेंस नीति के बारे में पर उन्होंने कहा कि अपराधियों को बख्शा नहीं जाएगा। जिले के बहुचर्चित अनुराग यादव हत्याकांड में अपराधी जेल की सलाखों के पीछे हैं,विधिक कार्रवाई की जा रही है। आगे उन्होंने बताया कि पीड़ित परिवार की आर्थिक मदद के लिए मुख्यमंत्री को पत्र भी लिखा है।

घर के बाहर खड़े माँ–बेटे को पिकअप ने रौंदा, मौत

एजेंसी

कानपुर देहात। मंगलपुर थानाक्षेत्र में रविवार को सड़क हादसे में मां-बेटे की मौत हो गई। घर के बाहर खड़े मां-बेटे को तेज रफ्तार पिकअप ने रौंद दिया, जिससे बेटे की मौके पर ही मौत हो गई। वहीं, मां की इलाज के दौरान मौत हो गई। परिजनों ने रास्ते को जाम करके कई मागों को पूरा कराने में अड़ गये। मंगलपुर थानाक्षेत्र के महाराजपुर गांव निवासी 46 वर्षीय नीलम व उनका बेटा 18 वर्षीय हेमंत व बेटी प्रिंशी रविवार सुबह टहलने गए थे। वापस आकर वे घर के बाहर खड़े थे। इसी दौरान रसूलाबाद की ओर से आ रही तेज रफ्तार पिकअप ने मां-बेटे को टक्कर मार दी, जिससे हेमंत की मौके पर ही मौत हो गई। हादसे में नीलम गंभीर रूप से घायल हो गई। आनन-फानन में परिजन उसे उपचार के लिए सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र रसूलाबाद लेकर पहुंचे, जहां उनकी गंभीर स्थिति को देखते हुए प्राथमिक उपचार के बाद कानपुर रेफर कर दिया गया। रास्ते में ही नीलम की भी मौत हो गई। हादसे से आक्रोशित परिजनों व ग्रामीणों ने सड़क पर बल्ली डाल जाम लगा दिया और आरोपित पिकअप चालक की गिरफ्तारी की मांग को लेकर हंगामा शुरू कर दिया। घटना के बाद सीओ देवेंद्र कुमार व नायब तहसीलदार जमील अहमद टीम के साथ घटनास्थल पर पहुंचे। उन्होंने लोगों को समझाने का प्रयास किया, लेकिन परिजन व ग्रामीण आरोपी की गिरफ्तारी पर अड़े हैं। खबर लिखे जाने तक मामला अभी सुलझा नहीं था।

योगी जी : यहां गरीब को न्याय नहीं मिलता,गोण्डा पुलिस से उठ चुका है भरोसा

- फिटर गजेंद्र सिंह की मौत के बाद उसी पर दर्ज हुआ मुकदमा...
- दो माह से चल रहा था विवाद,तीन बार मोतीगंज थाने पर पहुंचा मामला...
- समय पर मोतीगंज पुलिस कर देती करवाई तो बच जाती गजेंद्र सिंह की जान....
- मोतीगंज पुलिस की लापरवाही बनी चीनी मिल के फिटर गजेंद्र सिंह की मौत की वजह...

कैनविज टाइम्स संवाददाता

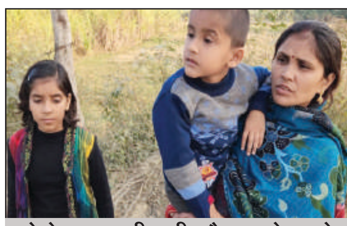
फोटो मृतक की पत्नी और उसके बच्चे.

मृतक गजेंद्र सिंह

गोण्डा। योगी जी यहां गरीब को न्याय नहीं मिलता।अमीर हैं या फिर ऊपर तक उसकी पहुंच है तो गोण्डा पुलिस से लेकर जिला प्रशासन व जनप्रतिनिधि तक हर कोई खड़ा हो जाता है।इसी हकीकत का सामना पिछले तीन महीने से कुंदरकी बजाज हिंदुस्तान चीनी मिल में फिटर के पद पर तैनात गजेंद्र सिंह और उसकी पत्नी कर रही थी।बेकसूर गजेंद्र सिंह चीनी मिल के अधिकारियों की प्रताड़ना तीन महीने से सहता आ रहा था।गजेंद्र सिंह मिल के अधिकारियों के खिलाफ मोतीगंज थाने में लगातार शिकायत कर रहा था लेकिन उसे न्याय नहीं मिल पाया।

बजाज चीनी मिल कुंदरखी में फिटर मैकेनिक के पद पर कार्यरत गजेन्द्र सिंह का मिल के यूनिट हेड व एचआर मैनेजर समेत तीन अधिकारियों से पिछले दो माह से विवाद चल रहा था।इस दौरान तीन बार मामला पुलिस के पास पहुंचा,लेकिन मिल के अधिकारियों के खिलाफ किसी तरह की कार्रवाई नहीं की गयी और न ही इस मामले का स्थाई समाधान कराया गया।इतना ही नहीं, प्रताड़ना के शिकार गजेन्द्र सिंह ने जब 28 नवंबर को आत्मदाह का प्रयास किया तब भी मोतीगंज पुलिस ने चीनी मिल के अधिकारियों पर एक्शन लेने के बजाय पीड़ित गजेंद्र के ही खिलाफ 151 के तहत कार्रवाई कर दी थी।

बताते हैं कि बजाज हिन्दुस्थान चीनी मिल कुंदरखी इकाई में फिटर मैकेनिक के पद पर कार्यरत गजेन्द्र सिंह ने मिल के यूनिट हेड पीएन सिंह एचआर मैनेजर कमलेश कुमार व राजू सिंह पर गंभीर आरोप लगाए थे।2024 अक्टूबर माह की 22 तारीख को वह अपने घर से लापता हो गया था।इसकी सूचना मोतीगंज पुलिस को दी गई।पुलिस व एसओजी टीम ने गजेन्द्र को लखनऊ से बरामद कर गोण्डा लाई और चीनी मिल के अधिकारियों व गजेन्द्र के बीच सुलह-समझौता करा दिया था।हालांकि,इसके बाद भी गजेन्द्र की दुश्वारियां कम नहीं हुईं। चीनी मिल के अधिकारियों कि प्रताड़ना से तंग आकर उसने 28 नवंबर को अपने ऊपर ज्वलनशील पदार्थ डालकर आत्मदाह का प्रयास किया लेकिन मौके पर मौजूद मिल के कर्मचारियों द्वारा उसे बचा लिया गया। इसकी सूचना पुलिस को दी गई।कहोबा चौकी प्रभारी विरेन्द्र शुक्ल मयफोर्स मौके पर पहुंचे और गजेन्द्र सिंह को थाने पर ले गये,जहां मिल के आरोपी अधिकारियों के खिलाफ कार्रवाई करने के बजाय पीड़ित पर ही 151 के तहत कार्रवाई कर दी गई।बताया जाता है कि इससे उक्त कर्मचारी और सदमे में चला गया।शुक्रवार 29 नवंबर को उसने जहर खा लिया।गोण्डा मेडिकल कॉलेज से गंभीर स्थिति में उसे लखनऊ रेफर किया गया जहां 29 नवंबर की रात में ही इलाज के दौरान उसकी मौत हो गयी।इस मामले में सबसे चौंकाने वाली बात यह है कि मोतीगंज पुलिस ने फिटर मैकेनिक गजेन्द्र सिंह की मौत के तुरंत बाद ही बजाज चीनी मिल कुंदरखी के एचआर कमलेश कुमार की तहरीर पर शुक्रवार की रात 11.34 बजे मृतक गजेन्द्र के खिलाफ ही एससी-एसटी समेत विभिन्न गंभीर धाराओं में मुकदमा दर्ज कर दिया।यहां सवाल यह उठता है कि जब फिटर मैकेनिक गजेन्द्र और चीनी मिल के अधिकारियों का मामला तीन बार मोतीगंज पुलिस के पास पहुंचा,तब भी आखिर पुलिस द्वारा इसका स्थाई समाधान क्यों नहीं कराया गया।सवाल यह भी है कि आखिर किसके दबाव में आत्मदाह का प्रयास करने वाले मिल कर्मचारी गजेन्द्र पर ही 151 के तहत कार्रवाई की गयी ? दरअसल, इस प्रकरण में यदि मोतीगंज पुलिस द्वारा समय रहते ठोस कदम उठाते हुए आरोपियों के खिलाफ कार्रवाई की गयी होती तो गजेन्द्र सिंह की जान बच सकती थी ! अपनी इस कार्यशैली से मोतीगंज पुलिस भी कटघरे में खड़ी हो गई है।

चल रहे मानक विहीन नर्सिंग होम व अल्ट्रासाउंड केंद्र

कैनविज टाइम्स संवाददाता

गोण्डा। विभागीय मिलीभगत से इन अवैध केंद्रों की संख्या हर रोज बढ़ती जा रही है क्षेत्र में इन दिनों धड़ल्ले से अवैध नर्सिंग होम और अल्ट्रासाउंड सेंटर संचालित हो रहे हैं। विभागीय मिलीभगत से इन अवैध केंद्रों की संख्या हर रोज बढ़ती जा रही है।इन अस्पतालों में पहुंचने वाले मरीजों व तीमारदारों का शोषण किया जाता है।तहसील कर्नलगंज सहित आस-पास के गांवों में आधा दर्जन से अधिक नर्सिंग होम संचालित है।ज्यादातर अस्पताल निर्धारित मानकों की अनदेखी कर चलाए जा रहे है। विभागीय जिम्मेदारों की खाऊ कमाऊ नीति के चलते अस्पताल संचालक ग्रामीण क्षेत्र की जनता का आर्थिक शोषण कर रहे है।सूत्रों की माने तो कई अस्पताल बगैर पंजीकरण के ही बेरोक टोक चल रहे हैं।यही नहीं अवैध अस्पतालों में प्रशिक्षित कर्मी है और न ही मूलभूत संसाधन।नर्सिंग होम में फर्जी डॉक्टरों द्वारा बड़े बड़े बैनर लगाकर इलाज के नाम पर मरीजों से जमकर धन उगाही की जा रही है।सबकुछ जानते हुए भी जिम्मेदार अंजान बने हुए हैं।-अल्ट्रासाउंड केंद्रों में भी फर्जीवाड़ा यही हाल अल्ट्रासाउंड केंद्रों का भी है।इन तथाकथित केंद्रों पर या तो टेक्नीशियन के सहारे कार्य किया जा रहा है या फिर झोलाछाप लोग मरीजों की रिपोर्ट तैयार करते है। पीएन डीटी एक्ट के तहत अल्ट्रासाउंड केंद्रों के लिए कड़े नियम बनाए गए हैं। लेकिन, परसपुर, कर्नलगंज, कटराबजार में खुले सेंटरों पर नियमों खुला मजाक उड़ाया जा रहा है।-लाभ कमाना है मूल उद्देश्य क्षेत्र के अधिकतर निजी अस्पतालों और अल्ट्रासाउंड केंद्रों का मूल उद्देश्य अत्यधिक लाभ कमाना है।इसके लिए मरीजों व तीमारदारों का दोहन करते हैं।सूत्रों की मानें तो इसके लिए निजी अस्पताल संचालकों द्वारा एक बड़े ठग गिरोह को कायम कर रखा गया है।इसमें महिला व पुरुष शामिल हैं। विशेषकर सरकारी अस्पताल में प्रसव के लिए आने वाली महिलाओं को बहला-फुसला कर निजी अस्पताल में पहुंचाया जाता है।जहां इसके बदले उन्हें तयशुदा रकम दी जाती है।

जादूगर मिस्टर इंडिया ने इंटरनेशनल यूनिटी अवॉर्ड जीतकर बढ़ाया देश का गौरव

कैनविज टाइम्स संवाददाता

गोंडा। परसपुर विकासखंड के ग्राम सीरपुरवा हरदिहा सपौर निवासी अंतरराष्ट्रीय जादूगर मिस्टर इंडिया ने अपनी अद्भुत जादुई कला से एक बार फिर देश और प्रदेश का नाम रोशन किया है।उन्होंने दस देशों भारत,तुर्की, चीन, अर्जेंटीना,रूस,साउथ अफ्रीका,इंडोनेशिया, मॉस्को, यूनाइटेड किंगडम और साउथ कोरिया की संयुक्त प्रतियोगिता में भाग लेकर इंटरनेशनल यूनिटी अवॉर्ड पर कब्जा जमाया।यह प्रतियोगिता शांति फाउंडेशन के तत्वावधान में कनाडा और साउथ अफ्रीका की निर्णायक टीम के नेतृत्व में आयोजित की गई थी,जिसमें निर्णायकों ने उनकी प्रतिभा और जादुई कौशल को देखते हुए विजेता घोषित किया है।मिस्टर इंडिया अब तक 150 से अधिक राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय अवॉर्ड जीत चुके हैं। गत 26 नवंबर को गोंडा में शांति फाउंडेशन के बैनर तले आयोजित एक विशेष कार्यक्रम में उन्होंने अपनी जादुई कला का प्रदर्शन किया। इस कार्यक्रम में फाउंडेशन की प्रेसिडेंट पिंकी देवी, कनाडा के निर्णायक डॉ. केतन कुलकर्णी और साउथ अफ्रीका की ब्रांड एंबेसडर बेजंती मक्का ने उन्हें इंटरनेशनल यूनिटी अवॉर्ड से सम्मानित किया।उनकी इस उपलब्धि पर वासुदेव सिंह (चेयरमैन), वरिष्ठ पत्रकार इंद्रप्रकाश शुक्ला, प्रधान अजय शुक्ला, सहदेव चौहान उर्फ मुंशी, शिक्षक विजय सिंह, देवेंद्र दत्त मिश्रा और अखिलेश सिंह समेत तमाम गणमान्य लोगों ने उन्हें शुभकामनाएं और बधाइयां दीं।जादूगर मिस्टर इंडिया की यह सफलता न केवल उनके गांव और जिले बल्कि पूरे देश के लिए गर्व का विषय है। उनकी कहानी यह प्रेरणा देती है कि अद्वितीय प्रतिभा और समर्पण से वैश्विक मंच पर भी अपनी पहचान बनाई जा सकती है।

ब्राह्मण समाज के महाकुंभ में प्रदेश भर से जुटे लोग, अधिकारों के लिए भरी हुंकार

एजेंसी

मुरादाबाद। रविवार को मुरादाबाद के पंचायत भवन के विशाल मैदान में ब्राह्मण समाज का महाकुंभ सम्पन्न हुआ। जिसमें प्रदेश भर के हजारों विप्र बंधुओं ने शिरकत की। महाकुंभ में ब्राह्मणों ने अपने अधिकारों के लिए हुंकार भरी और 11 विभिन्न बिंदुओं पर अपने विचार रखे। कार्यक्रम में संगठित रहो और सुरक्षित रहो का नारा लगातार गूंजता रहा। कार्यक्रम में अखिल भारतीय ब्राह्मण महासभा के प्रदेश अध्यक्ष यूपी रत्न पंडित राजेंद्र नाथ त्रिपाठी ने कहा कि आज का समय बिखरे हुए ब्राह्मण समाज को एक करने का है। जहां ब्राह्मण राजनीतिक रूप से उपेक्षित है वहीं उसको सामाजिक रूप से भी पीछे धकेलने के षड्यंत्र लगातार हो रहे हैं। मुख्य अतिथि महंत राधेश्याम व्यास ने ब्राह्मण समाज की महत्ता के कई प्रसंग सुनाए और समाज से अपनी जड़ों से जुड़ने का आह्वान किया। नई दिल्ली से आए जय हिंद मंच के अध्यक्ष सुशील शर्मा ने कहा कि समाज में केवल सिरों की गिनती होती है और जिस समाज की गिनती ज्यादा होती हैं, उसी की ताकत सबसे ज्यादा होती है।

इसलिए एक रहो और संगठित रहो। महाकुंभ में गृह मंत्रालय की डायरेक्टर आईएएस चित्रलेखा ने कहा कि आज के समय में चारित्रिक शुचिताबहुत आवश्यक है। ब्राह्मण समाज की महिलाओं को चाहिए कि अपनी बेटियों और बेटों में वे संस्कार भरे जिसके लिए ब्राह्मण समाज जाना जाता है।

ब्राह्मण समाज के मार्गदर्शक डॉ. प्रदीप शर्मा ने कार्यक्रम में आए सभी ब्राह्मण बंधुओं और अतिथियों का स्वागत किया। कार्यक्रम के मुख्य संयोजक करनवीर शर्मा ने सभी का आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि यह अवसर ब्राह्मण समाज को अपनी एकता प्रदर्शित करने का एक अवसर था जिसे हमने सफलतापूर्वक प्राप्त किया। अखिल भारतीय ब्राह्मण महासभा राष्ट्रीय के प्रदेश प्रवक्ता लोकेश शर्मा ने कहा कि पीतलनगरी में सफल महाकुंभ संगठन के महीनों के परिश्रम का फल है। कार्यक्रम अध्यक्ष प्रमुख समाजसेवी गोपाल मिश्रा ने सभी ने विप्र बंधुओं का एकीकरण के लिए आवाहन किया।

कार्यक्रम संचालन डॉ माधव शर्मा ने किया। इस अवसर पर पूर्व विधायक पप्पू भरतौल, पूर्व एमएलसी सुबोध पाराशर, हरिओम शर्मा, डॉ. केके मिश्रा, धर्मेंद्र नाथ मिश्रा, संजय शर्मा, इंग्लेश शर्मा, आचार्य राजेश शर्मा, रचित शर्मा, रिंकू शर्मा, संजय पाठक, अवधेश शर्मा, शैलेश गौड़, केके शर्मा, दिनेश शर्मा, सुनील शर्मा, प्रेम शंकर उपाध्याय, संजीव शर्मा, चंचल शर्मा, अर्जुन शर्मा, गौतम सोती, अनूप कौशल, अनिल कुमार शर्मा, राधेश्याम शर्मा, अनिमेष शर्मा, संजय स्वामी , विमलेंद्र शर्मा, महेश चंद्र शर्मा, पंकज शर्मा, राजेश त्रिपाठी, रिंकू शर्मा व देवेश वशिष्ठ आदि मौजूद रहे।

पग-पग पर पुलिस के मददगार मुखबिर अब दूर तक नहीं आ रहे नजर

कैनविज टाइम्स संवाददाता

गोण्डा। पुलिस का सूचना तंत्र कमजोर हो रहा है।अप राधियों का भेद पुलिस तक पहुंचाने का जिम्मा संभा लने वाले मुखबिर भी अब गिने-चुने रह गए हैं।सीसी टीवी कैमरे के अलावा मोबाइल को खुद के लिए मदद गार (मुखबिर)मानने वाली पुलिस अपराधियों की ओर मुंह बाए खड़ी है।शातिर अपराधी इसे भी धता बता रहे हैं जहां सीसीटीवी कैमरे के सामने नकाब ओढ़े नजर आते हैं,वहीं वारदात के दौरान या फिर फरारी में मोबाइल का उपयोग करना ही बंद कर रहे हैं।

वही मोतीगंज थाना क्षेत्र में 13 सितंबर 2023 महिला शर्मा वती की हत्या का नहीं हुआ खुलासा पंद्रह महीने बीत जाने के बाद भी पुलिस के हाथ खाली,मोतीगंज पुलिस न तो शर्मावती के हत्यारे को ढूंढ पाई और ना शर्मावती के पति का सुराग लगा पाई है।

असल में जब मोबाइल ही नहीं रखेगा तो उसकी लोकेशन कैसे ट्रेस होगी।सूत्रों के अनुसार बढ़ते अपराध के बीच पुलिस की मदद करने वाले भेदिए,मुखबिर गिने-चुने ही रह गए हैं।इनमें भी अधिकांश वो ही हैं जो अपराध रोकने के पक्षधर हैं या फिर उन्हें पुलिस अथवा बदमाशों से कोई लालच नहीं है।

इधर-उधर रोजाना होने वाले अवैध कारोबार अथवा कभी-कभार होने वाली घटना के बारे में फुर्ती से पुलिस को सूचना देने वाले ये इनफोर्मर,मुखबिर पुलिस से धीरे-धीरे दूर होते जा रहे हैं।

इसके चलते पुलिस के आला अधिकारी तक हैरान-परेशान हैं,आखिर अपराधियों की खबर उनके पास पहुंच क्यों नहीं रही ? ठीक इसके उलट हो यह रहा है कि अपराधियों के लिए मुखबिरी करने वाले अधिक हो गए हैं।पुलिस की हरकत से अवगत कराना कुछ लोगों के लिए कमाई का जरिया बन चुका है।

सूत्र बताते हैं कि करीब आठ-दस साल से ऐसा हो रहा है। पूरी तरह नाम,पहचान गुप्त रखने के भरोसे मुखबिर दिन-रात पुलिस की मदद करते रहते थे।इन मुखबिरों के प्रोत्साहन के लिए योजना भी चलाई गई पर इसका कोई खासा परिणाम नहीं निकला।छुटपुट इनाम देकर टरका दिया गया,यही नहीं जहां पहले सूचना किसने दी,यह उजागर नहीं किया जाता था,वो अब खुलेआम होने लगा।किस मुखबिर ने किसके खिलाफ पुलिस को क्या बताया,यह तक जानकारी उस आरोपी बद माश तक पहुंचने लगी जिसे पकडऩे की तैयारी में पुलिस जुटी थी।बाद में मुखबिर को धमकाया जाने लगा तो उसने पुलिस की मदद से तौबा कर ली। पुलिस अफसर खुद मानते हैं कि मुखबिरों की सूचना पर कार्रवाई नहीं करना, संबंधित अपराधी,आरोपी को बचाते हुए पीड़ित को कटघरे में खड़ा करने की पुलिसिया चाल भी मुखबिर की मुश्किलें बढ़ाने लगी।

मजबूत सहारा नहीं बने मोबाइल-सीसीटीवी कैमरे

सूत्रों का कहना है कि सीसीटीवी फुटेज में दिखे चेहरे और फरार अपराधियों की मोबाइल पर मिलने वाली लोकेशन के जरिए शुरुआती दौर में कुछ सफलता पुलिस ने हासिल कर ली हो पर अब ऐसा नहीं है। जायल में करीब चार साल पहले बैंक लूट करने वाले बदमाश आज तक पकड़ में नहीं आए, जबकि सीसीटीवी फुटेज में उनके चेहरे देखे गए थे। ऐसी अनगिनत वारदात हैं जहां सीसीटीवी फुटेज में चोऱ कातिल/ लुटेरे दिखे पर पुलिस के हाथ नहीं आए।अब मोबाइल को लेकर भी शातिर सक्रिय हो गए हैं। लोकेशन ट्रेस ना हो जाए, इसके लिए मोबाइल या तो साथ नहीं रखते या फिर बंद रखते हैं।अधिकांश तो अब मोबाइल ही साथ नहीं रख रहे।कभी मुखबिर से आसान होने वाला काम अब मोबाइल/सीसीटीवी के जरिए भी पूरा नहीं हो रहा।

तब हाल यह था

एक रिटायर पुलिस अफसर ने नाम नहीं छापने की शर्त पर बताया कि छोटा-मोटा खर्चा पुलिस से इन्हें दिला देते थे।कई बार जुआरी/सटोरियों की सूचना देने वालों को पकड़ी जाने वाली रकम में से कुछ इनाम दे दिया जाता था।असल में अपने-अपने थाना इलाके के खास प्वाइंट पर काम-धंधा करने वाले तो समाज सेवा में जुटे रहने वाले, मसलन प्याऊ पर पानी पिलाने वाला हो या फिर ऐसे ही किसी अन्य काम से जुड़े रहने वाले पल-पल की रिपोर्ट दे दिया करते थे। खास तौर पर पान-चाय की थड़ी अथवा हैयर सैलून। सरकारी तौर पर इनको इनाम देकर प्रोत्साहित करने की योजनाकई बार बनी पर आगे नहीं बढ़ पाई।

यह रहे कारण..

असल में पुलिस को किसी अपराधी बाबत डिटेल देने पर मुखबिर संदेह से घिरे रहते हैं कि कहीं उनका नाम लीक ना हो जाए,बेवजह दुश्मनी नहीं हो जाए।इसके अलावा कई बार सूचना देने के बाद भी पुलिस कार्रवाई ना करे तो वे सूचना देना बंद कर देते हैं। इसके अलावा पुलिस संरक्षण की कमी, कोई आर्थिक फायदा नहीं होना,हमेशा अपराधियों का डर,पुलिस का सूचना पर ठीक ढंग से सहयोग ना मिलना भी मुखबिरों के कम होने का कारण रहा।

जागरूकता ही समाज में बदलाव का सबसे बड़ा माध्यम: डॉ. मुक्ता गर्ग

एजेंसी

कानपुर। जागरूकता ही समाज में बदलाव का सबसे बड़ा माध्यम बन सकता है। एड्स जैसे विषय पर जागरूकता फैलाने के लिए सबसे पहले हमें खुद जागरूक होना पड़ेगा। यह बात रविवार को चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय की राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई-3 के तहत विश्व एड्स दिवस के मौके पर छात्र-छात्राओं को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि अधिष्ठाता सामुदायिक विज्ञान डॉ. मुक्ता गर्ग ने कही। उन्होंने कहा कि एड्स से जुड़ी भ्रांतियों को समाप्त करना और पीड़ितों के प्रति संवेदनशीलता दिखाना अत्यंत आवश्यक है। एड्स जैसे विषय पर जागरूकता फैलाने के लिए सबसे पहले हमें खुद जागरूक होना पड़ेगा। इस मौके पर कार्यक्रम अधिकारी राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई 3 -डॉ. रश्मी सिंह ने कहा कि एड्स का सबसे पहला मामला चिंपैंजी और बंदरों में पाया गया था। इसका अभी तक कोई इलाज नहीं है और इसकी रोकथाम ही इसका सबसे बड़ा उपाय है। बी.एससी. तृतीय सेमेस्टर की छात्राएं शाज़िया खान और जागृति दास ने भी संगोष्ठी में अपने विचार प्रस्तुत किए। उन्होंने कहा, ह्लएड्स सिर्फ एक बीमारी नहीं, बल्कि एक सामाजिक कलंक बन गया है। हमें एड्स पीड़ितों के साथ भेदभाव नहीं करना चाहिए, बल्कि उन्हें समाज में पूरा सम्मान और सहयोग मिलना चाहिए।ह्व विश्व एड्स दिवस की थीम ह्लटेक द राइट पाथः माय हेल्थ, माय राइट्सह्व रही। इस कार्यक्रम में अधिष्ठाता सामुदायिक विज्ञान डॉ. मुक्ता गर्ग मुख्य अतिथि रहीं, कार्यक्रम अधिकारी राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई 3 -डॉ. रश्मी सिंह ने अधिष्ठाता डॉ. मुक्ता गर्ग का स्वागत किया, गेस्ट फैकल्टी डॉ. पल्लवी सिंह और डॉ. रीमा भी उपस्थिति रहे। कार्यक्रम के दौरान पोस्टर प्रदर्शनी का आयोजन भी किया गया

प्रत्येक कार्यकर्ता को आगे बढ़ने का मौका देती भाजपा

कैनविज टाइम्स संवाददाता

गोण्डा। भारतीय जनता पार्टी की ओर से जिला कार्यशाला का आयोजन किया गया।जिसमें कार्यकर्ताओं को पार्टी का अभिन्न हिस्सा बताया गया।साथ ही सभी को पार्टी हित में अनवरत कार्य करते रहने के लिए प्रेरित किया गया।सक्रिय सदस्यता अभियान 2024 के पार्टी कार्या लय गोण्डा में आयोजित जिला कार्यशाला की अध्यक्षता जिलाध्यक्ष अमर किशोर कश्यप ने की।कार्यशाला के मुख्य अतिथि प्रदेश उपाध्यक्ष विजय बहादुर पाठक जिसमें चुनाव अधिकारी अशोक सिंह जिलाध्यक्ष अमरकिशोर कश्यप विधायक बावन सिंह एमएलसी अवधेश कुमार सिंह मंजू सिंह अजय सिंह प्रभात वर्मा द्वारा दीनदयाल उपाध्याय एवं श्यामा प्रसाद मुखर्जी के चित्र के समक्ष दीप प्रज्वलित कर कार्यशाला का शुभारंभ किया।

वही मुख्य अतिथि ने कहा कि मंडल चुनाव की तिथि,प्रक्रिया एवं सफल संपादन को लेकर यह कार्यशाला आयोजित की गयी।उन्होंने कहा कि मंडल चुनाव अधि कारी को चुनाव के संदर्भ मे आवश्यक प्रपत्र उपलब्ध करा दिए गए है।जिला प्रभारी प्रदेश उपाध्यक्ष विजय बहादुर पाठक ने कहा कि संगठन का निर्माण पूरी निष्ठा एवं ईमान दारी से करना होगा।जिलाध्यक्ष अमर किशोर कश्यप, सह चुनाव अधिकारी संदीप पाण्डेय नीरज मौर्य जसवंत लाल सोनकर और राकेश तिवारी ने अपने अपने विचार रखें। भाजपा द्वारा जिले के 33 मंडलो में एक साथ 12 दिसंबर को चुनाव होगा।तेरह दिसंबर को नाम वापसी की तिथि है।बूथ अध्यक्ष होंगे मतदाता मंडल अध्यक्ष के नामांकन हेतु दो बार का सक्रिय सदस्य होना अनिवार्य है।मंडल अध्यक्ष बनने के लिए भाजपा ने 35 वर्ष से लेकर 45 वर्ष रखी गयी है।संगठन के अच्छे कार्य करने हेतु मंडल अध्यक्ष कटरा रामजी शुक्ला मंडल अध्यक्ष झंझरी पूर्वी श्याम सुन्दर मौर्य एवं मसकनवा जितेन्द्र नाथ पाण्डेय को सम्मानित किया गया।

ग्लोवल रिसर्च फार ग्लोवल वेलबीन विषय पर सीएसए में आयोजित होगा दो दिवसीय 12वीं अन्तर्रार्ष्ट्रीय विज्ञान कॉग्रेस

एजेंसी

कानपुर। चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय (सीएसए), कानपुर में ग्लोवल रिसर्च फार ग्लोवल वेलबीन विषय पर 8 एवं 9 दिसम्बर को दो दिवसीय 12वीं अन्तर्राष्ट्रीय विज्ञान कॉग्रेस आयोजित किया जाएगा। इस विज्ञान कॉग्रेस में देश के विभिन्न राज्यों से युवा शोधार्थी शामिल होंगे। यह जानकारी रविवार को कृषि अभियंत्रण संकाय एवं मत्स्य महाविद्यालय के अधिष्ठाता डा.ए.के.शर्मा ने दी। उन्होंने बताया कि 8 एवं 09 दिसम्बर को अन्तर्रार्ष्ट्रीय विज्ञान समुदाय संघ एवं कृषि विश्वविद्यालय कानपुर द्वारा 12वीं अन्तर्रार्ष्ट्रीय विज्ञान कॉग्रेस का आयोजन कृषि विश्वविद्यालय, कानपुर में आयोजित किया जा रहा है। जिसका प्रमुख विषय ''ग्लोवल रिसर्च फार ग्लोवल वेलबीन'' होगा। इस आयोजन में देश के विभिन्न राज्यों से युवा शोधार्थी सहभागिता करने जा रहे हैं। इच्छुक अभ्यर्थी द्धप्प्ध्प://द्वपदथ.द्धद्गए.दध वेबासाइट के माध्यम से अपना पंजीकरण करा सकते है। बाली इन्डोनेशिया में 13 एवं 14 दिसम्बर को होगी 11वीं गोग्रीन समिटि उन्होंने बताया कि सीएसए के कुलपति डॉ. आनन्द कुमार सिंह अध्यक्षता में 13 एवं 14 दिसम्बर को बाली इन्डोनेशिया में बायालीग एवं चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं विश्वविद्यालय, कानपुर एवं अन्य अन्तर्रार्ष्ट्रीय संस्थानों के सहयोग से 11वीं गोग्रीन समिट का आयोजन किया जा रहा है, जिसमें कृषि अभियंत्रण संकाय के अधिष्ठाता डा. एन.के. शर्मा को मुख्य वक्ता के रूप में आमंत्रित किया गया है। इस समिट में 10 देशों से अधिक देशों के लगभग 200 से अधिक वैज्ञानिक प्रतिभाग करने जा रहे है। इन दोनों अन्तर्रार्ष्ट्रीय संगोष्ठियों का आयोजन अधिष्ठाता, कृषि अभियंत्रण संकाय एवं कुलपति, चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय कानपुर के निर्देशन में किया जा रहा है। इन दोनों प्रमुख विषयों पर आयोजित होनें वाले अन्तर्रार्ष्ट्रीय वैज्ञानिक परिचर्चाओं का सारांश एवं संस्तुतियां निश्चित रूप से निकट भविष्य में आने वाली चुनौनियों का समाधान करने में सहायक होंगी। इस प्रकार के आयोजनों से इटावा परिसर एवं कृषि विश्वविद्यालय, कानपुर पिछले दो वर्षो से निरन्तर अपनी पहचान बनाने में प्रमुख संस्थान के रूप में उभर रहा है। बाली इन्डोनेशिया में प्रतिभाग करने के लिये इच्छुक अभ्यर्थी https: //gogreen.bioleagues.com वेबासाइट के माध्यम से पंजीकरण करा सकते है।

ग्राम पंचायत अलिया बुलबुल में 02 दिसम्बर को आयोजित होगा सेवा से संतृप्तिकरण

बहराइच कैनविज टाइम्स संवाददाता। विभिन्न विभागों द्वारा संचालित की जा रही जन कल्याणकारी योजनाओं से जिले के ग्रामों को संतृप्त किये जाने तथा जनसमस्याओं के निस्तारण के उद्देश्य से जिलाधिकारी मोनिका रानी के निर्देश पर तहसील सदर के ब्लाक चित्तौरा की ग्राम पंचायत अलिया बुलबुल में 02 दिसम्बर 2024 को पूर्वान्ह 10:00 बजे से सेवा से संतृप्तिकरण अभियान के द्वितीय चरण का शुभारम्भ हो रहा है। अभियान के लिए निर्धारित रोस्टर के अनुसार तहसील नानपारा के शिवपुर की ग्रा.पं. बितनिया में 03, पयागपुर के हुज़ुरपुर की ग्रा.पं. लौकाही में 04, कैसरगंज के फखरपुर की ग्रा.पं. अचौलिया में 05, तहसील व ब्लाक महसी की ग्रा.पं. औराही में 06 तथा तहसील व ब्लाक मिहींपुरवा की ग्राम पंचायत सेमरहना में 07 दिसम्बर 2024 को पूर्वान्ह 10:00 बजे से सांय 05:00 बजे तक शिविर आयोजित होगा। इसी क्रम में सप्ताह के सोमवार, मंगलवार, बुधवार, वृहस्पतिवार, शुक्रवार व शनिवार को क्रमशः तहसील सदर, नानपारा, पयागपुर, कैसरगंज, महसी व मिहींपुरवा के एक ग्राम पंचायत में शिविर आयोजित होगा।

संपूर्ण सृष्टि का आधार ईश्वर ही है: प्रो.सदाशिव द्विवेदी

वाराणसी। समन्वयक भारत अध्ययन केंद्र, काशी हिंदू विश्वविद्यालय के प्रो.सदाशिव द्विवेदी ने रविवासरीय गीता प्रवचन में ज्ञान की गंगा बहाई। विश्वविद्यालय के मालवीय भवन में प्रोफ़ेसर सदाशिव ने कहा कि संपूर्ण चराचर जगत का आधार ईश्वर ही है। जो कल्प क्रम में संपूर्ण सृष्टि को रचता है तथा सभी पदार्थों में अंश रूप में उपस्थित रहता है। जीवन जीने की प्रवृत्ति सदैव श्रेयोन्मुखी होनी चाहिए। यद्यपि प्रवृत्ति प्रेय से ही श्रेय की ओर उन्मुख होती है। उन्होंने बताया कि गीता का नवम अध्याय राज्यविद्या योग नामक अध्याय का आधार भक्ति ही है। इसके पहले गीता के नवम अध्याय का पारायण सत्यनारायण पांडेय तथा पद गायन विपिन कुमार पाण्डेय ने किया। वक्ता का स्वागत, अंगवस्त्र एवं माल्यार्पण सचिव गीता समिति प्रो.उपेंद्र कुमार त्रिपाठी,संचालन एवं धन्यवाद ज्ञापन प्रोफ़ेसर ब्रज भूषण ओझा ने किया। कार्यक्रम में प्रो. रूद्रप्रकाश मलिक, प्रदीप त्रिपाठी, प्रो.शैलेंद्र गुप्त, डॉ. राजेश सरकार सहित अन्य अध्यापक, छात्र एवं कर्मचारी मौजूद रहे।

गन्ना विभाग ने किसानों की समस्याओं के समाधान के लिए जारी किया टॉल फ्री नंबर

कैनविज टाइम्स संवाददाता

पीलीभीत।गन्ना विकास विभाग पीलीभीत से जुडी समस्याओ के त्वरित निस्तारण के लिए किसान भाई गन्ना आयुक्त कार्यालय के कंट्रोल रूम के टोल फ्री नंबर 18001213203 पर अपनी शिकायत दर्ज कराएं।किसान भाई अपनी शिकायत को मोबाइल नंबर 7081202121 पर अपनी समस्या लिखकर व्हाट्सप्प भी कर सकते है।अपने सर्किल के गन्ना पर्वेक्षक से सम्पर्क कर सकते है।अथवा अपनी गन्ना विकास परिषद के ज्येष्ठ गन्ना विकास निरीक्षक से उनके सीयूजी नंबर पर बात कर सकते है। गन्ना सर्वे,ज़मीन दर्ज कराने के सम्बन्ध मे ज्येष्ठ गन्ना विकास निरीक्षक पीलीभीत 7081202507,ज्येष्ठ गन्ना विकास निरीक्षक बरखेड़ा 7081202511,ज्येष्ठ गन्ना विकास निरीक्षक मझोला 7081202510,ज्येष्ठ गन्ना विकास निरीक्षक बीसलपुर 7081202509,ज्येष्ठ गन्ना विकास निरीक्षक पूरनपुर 7081202508,आधार नंबर,मोबाइल नंबर,बैंक खाता नंबर दर्ज कराने एवं गन्ना कैलेंडर सम्बंधित जानकारी के लियें सचिव सहकारी गन्ना विकास समिति बीसलपुर एवं पूरनपुर - 7081202327 सचिव सहकारी गन्ना विकास समिति पीलीभीत एवं मझोला 7081202337 मुख्य गन्ना अधिकारी बीसलपुर 7880888964 मुख्य गन्ना अधिकारी पूरनपुर 7880888969 पर सम्पर्क कर सकते है। सभी ज्येष्ठ गन्ना विकास निरीक्षक गन्ना विकास निरीक्षक एवं गन्ना पर्वेक्षको को निर्देशित किया गया है। कि वह सीयूजी नंबर पर आने वाली हर कॉल का विवरण रखे तथा किसानो की समस्याओ का नियमानुसार निस्तारण करे।किसी भी अधिकारी और कर्मचारी का मोबाइल नंबर यदि बंद पाया जाता है। तो उसके खिलाफ कठोर विभागीय कार्यवाही की जाएगी। सभी ज्येष्ठ गन्ना विकास निरीक्षक और सचिव प्रातः 10 बजे से 12 बजे तक कार्यालय मे अनिवार्य रूप से बैठेंगे।यदि कोई कर्मचारी किसान की बात को नहीं सुनता है। तो वह जिला गन्ना अधिकारी पीलीभीत के सीयूजी नंबर 7081202230 पर कॉल करके अपनी समस्या बता सकता है। सभी चीनी मिलो गन्ना विकास परिषदों एवं गन्ना विकास समितियों पर किसान हेल्प डेस्क स्थापित है। किसान भाई वहाँ जाकर अपनी समस्या बता सकते है।सभी गन्ना किसान भाइयो से अनुरोध है।कि समस्या के त्वरित निस्तारण के लिये विभागीय अधिकारियों के मोबाइल नंबर पर सम्पर्क कर सकते हैं।

पुलिस ने आकस्मिक परिस्थितियों से निपटने के लिये बलवा ड्रिल का पूर्वाभ्यास कराया

कैनविज टाइम्स संवाददाता

अमेठी। पुलिस अधीक्षक के निर्देश पर रिजर्व पुलिस लाइन में आकस्मिक परिस्थितियों से निपटने एवं विधि विरुद्ध भीड़ पर नियंत्रण स्थापित करने करने हेतु बलवा ड्रिल कराया गया।आकस्मिक परिस्थितियों से निपटने तथा शान्ति, सुरक्षा एवं समाज में भय मुक्त वातावरण बनाने के उददेश्य से रविवार को पुलिस अधीक्षक अनूप कुमार सिंह के निर्देशन में एवं अपर पुलिस अधीक्षक हरेन्द्र कुमार के पर्यवेक्षण में रिजर्व पुलिस लाइन अमेठी में दंगा,विधि विरुद्ध भीड़ नियंत्रण का पूर्वाभ्यास कराया गया।बलबा ड्रिल का उददेश्य कानून व्यवस्था के उल्लंघन एवं विधि विरुद्ध भीड़ के जमाव की स्थिति में पुलिस बल को तेजी से प्रतिक्रिया देने में सक्षम बनाना है। इस दौरान क्षेत्राधिकारी गौरीगंज पुलिस लाइन अखिलेश वर्मा, पुलिस उपाधीक्षक प्रशिक्षणाधीन दिनेश कुमार मिश्रा व मौजूद अन्य पुलिस अधिकारी, कर्मचारीगण द्वारा विधि विरूद्ध भीड़ को तितर बितर करने के लिये रबर बुलेट गन, लाठी चार्ज, स्मोक गन, आंसू गैस के गोले, एंटी राइट गन, टीयर गैस गन, हैंड ग्रेनेड आदि दंगा नियंत्रण उपकरणों के सम्बन्ध मे जानकारी साझा करते हुये दंगा विधि विरुद्ध भीड़ नियंत्रण का आभ्यास किया गया तथा पुलिस कर्मियों को दंगाइयों,बलवाइयों पर एंटी राइट गन, टीयर गैस गन, हैंड ग्रेनेड, टीयर स्मोक सेल आदि के प्रयोग के समय बरती जाने वाली सावधानियों के विषय में एवं वज्र वाहन को इस्तेमाल करने की जानकारी दी गयी।इस दौरान मौजूद समस्त पुलिसकर्मियों को कुल दस विभिन्न पार्टियों एलआईयू पार्टी, सिविल पुलिस, फायर सर्विस, घुडसवार पुलिस, टियर गैस गन,एण्टी राइट गन पार्टी, लाठी पार्टी, फायरिंग पार्टी, रिजर्व पार्टी, फस्ट एड पार्टी व वीडियो ग्राफी पार्टी में बांटकर पार्टियों द्वारा किये जाने वाले सभी कार्यवाही को कराते हुये पूर्वाभ्यास कराया गया।

जिलाधिकारी के अध्यक्षता में जिला स्वास्थ्य समिति की बैठक हुई संपन्न

कैनविज टाइम्स संवाददाता

पीलीभीत। जिलाधिकारी अध्यक्ष,जिला स्वास्थ्य समिति की अध्यक्षता में संपन्न हुई जिला स्वास्थ्य समिति शासी निकाय की बैठक में स्वास्थ्य विभाग के अंतर्गत विभिन्न कार्यक्रमों यथा आगामी पल्स पोलियो कार्यक्रम,जननी सुरक्षा योजना,जननी शिशु सुरक्षा कार्यक्रम, संस्थागत प्रसव, एफ0आर0यू0 समीक्षा, मातृ मृत्यु शिशु मृत्यु समीक्षा, प्रधानमंत्री सुरक्षित मातृत्व अभियान,अल्ट्रासाउंड, टीकाकरण,परिवार कल्याण,राष्ट्रीय बाल स्वास्थ्य कार्यक्रम,आभा आई0डी0 प्रगति,संचारी रोग अभियान आदि कार्यक्रमों की समीक्षा की गयी है।जिलाधिकारी ने समस्त एमओआईसी को जननी सुरक्षा योजना के अंतर्गत संस्थागत प्रसवों को बढाने हेतु,एफआरयू की क्रियाशीलता एवं लाभार्थियों को प्रसव उपरांत 48 धंटे रोकने एवं गुणवत्तापूर्ण भोजन प्रदान करने हेतु निर्देशित किया।संचारी रोग अभियान के अंतर्गत मलेरिया एपीडेमियोलोजिकल रिपोर्ट वर्ष 2023 के आधार पर जनपद के ब्लॉक बिलसंडा एवं बीसलपुर के अंतर्गत 01 से अधिक एपीआई क्षेत्रों के आधार पर चयनित 10 सब सेंट्रो के अंतर्गत आने वाले 60 ग्रामों में 13943 घरों 98 प्रतिशत के अंदर एएलपीएचएसीवाईपीईआरएम ईटीएचआरआईएन 5 प्रतिशत डब्ल्यूपी अवशेषी कीटनाशक का छिड़काव कराया गया युक्त घरों में 40071 कमरों के सापेक्ष 39543 कमरों 98.6 प्रतिशत को अच्छादित किया गया।पल्स पोलियो अभियान एन0आई0डी0 08 दिसम्बर, 2024 को आयोजन किया जाएगा।पल्स पोलियो अभियान में वीओपीवी की दवा पिलाई जाएगी।जनपद पीलीभीत की जनसंख्या 24,19,370 में 0 से 05 वर्ष के 3,67,635 बच्चों को दिनांक 08 दिसम्बर 2024 पोलियो बूथ एवं दिनांक 09 से 13 दिसम्बर, 2024 तक पोलियो बूथ से दवा पीने से छूटे हुए बच्चों को पोलियो की टीम घर-घर भ्रमण कर पल्स पोलियो की दवा पिलाई जाएगी। इसके लिए जिलाधिकारी द्वारा सभी प्राईमरी विद्यालय एवं उच्च प्राथमिक विद्यालय एवं आंगनवड़ी केन्द्र 08 दिसम्बर 2024 दिन रविवार को खोले जाएगें। इसके लिए जिलाधिकारी एवं मुख्य चिकित्सा अधिकारी अधिकारी द्वारा जनपद पीलीभीत की जनता से अपील की है। कि सभी 0 से 5 वर्ष के बच्चों को पोलियो बूथ पर बच्चों को लाकर पल्स पोलियो की दो बूँद अवश्य पिलाएं।बैठक में मुख्य विकास अधिकारी, मुख्य चिकित्सा अधिकारी, जिला कार्यक्रम अधिकारी बाल विकास, जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी,समस्त एमओआईसी एवं अन्य जनपद स्तरीय अधिकारी उपस्थित रहे हैं।

आजाद समाज सेवा समिति का 29वां वार्षिकोत्सव आठ दिसम्बर को

कैनविज टाइम्स संवाददाता

सुल्तानपुर। नगर में आयोजित होने वाले आजाद समाज सेवा समिति द्वारा अमर शहीद खुदीराम बोस की पूण्य स्मृति में संस्था का 29वां वार्षिकोत्सव 8 दिसंबर को मनाया जाएगा। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि भारत समाचार के प्रधान संपादक बृजेश मिश्रा, अध्यक्षता डॉक्टर संदीप पांडे रेमन मैग्सेसे से पुरस्कृत एवं कार्यक्रम का संचालन पूर्व की भांति संस्था संस्थापक राज्यसभा सांसद संजय सिंह द्वारा किया जाएगा। कार्यक्रम की अंतिम तैयारी बैठक नगर की एक मैरिज लाइन में संस्था के अध्यक्ष अशोक सिंह की अध्यक्षता में संपन्न हुई। बैठक में कार्यक्रम को सुचारू रूप से संपन्न करने के लिए संस्था पदाधिकारीगण शराफत खान, श्याम नारायण पांडे, बबलू सिंह प्रधान, ओमप्रकाश गौड़, जीडी पांडे, डॉ आशीष द्विवेदी, दिलीप सिंह, गिरीश तिवारी, बबलू मयंक पांडे, रविंद्र तिवारी, शैलेश वर्मा, मोहम्मद अहमद, मकसूद अंसारी, अजय सिंह, व रियासत अली को जिम्मेदारी दी गई। अन्य संस्था पदाधिकारी गण कार्यक्रम सफल करने हेतु इनका सहयोग करेंगे, तथा समस्त पदाधिकारी द्वारा निर्णय लिया गया कि संस्था के मीडिया प्रभारी के रूप में सर्वेश सिंह के साथ साथ रवि दूबे को भी जिम्मेदारी दी गई। बैठक में मुख्य रूप से संस्था संरक्षक माशूक अली, रविंद्र बहादुरसिंह, विंध्या यादव, मोईद खान, मुसीद अहमद, रियासत अली, विद्या प्रकाश शुक्ला, आलोक निषाद, विनोद रावत, मसूद अहमद बीडीसी, वैभव श्रीवास्तव, चंद्रिका प्रसाद यादव शिव नायक वर्मा, मोहम्मद यूनुस, दिनेश यादव, शिव शंकर सिंह एडवोकेट, अनिल सिंह एडवोकेट, इदरीश घोषी, हंसराज यादव, अशोक तिवारी, सुमित यादव सोनू, आदि समस्त पदाधिकारी गण उपस्थित रहे।

विभिन्न समस्याओं को लेकर किसान नेताओं की हुई बठक

पूरनपुर।भारतीय किसान यूनियन अराजनैतिक की आवश्यक मीटिंग जिलाध्यक्ष सरदार मंजीत सिंह की अध्यक्षता में जिलाध्यक्ष के आवास पर सम्पन्न हुई पंचायत का संचालन जिला प्रभारी दिनेश कुमार ने किया हैं।पंचायत को सम्बोधित करते हुए जिलाध्यक्ष सरदार मंजीत सिंह ने कहा कि जनपद पीलीभीत में बजाज हिन्दुस्तान लिमिटेड बरखेड़ा व बजाज हिन्दुस्तान लिमिटेड मकसूदापुर ने गन्ना किसानों का पिछले पेराई सत्र का गन्ना भुगतान अभी तक नही किया है जोकि गन्ना किसानों के साथ घोर अन्यान्य है।जिससे इन दोनों चीनी मिलों के शेतर के गन्ना किसान भारी आर्थिक संकट से जूझ रहें है गन्ना किसानों के ऊपर कर्ज का बोझ दिन पर दिन बढ़ता जा रहा है किसानों के बच्चों की स्कूल फीस जमा न होने से बच्चों को स्कूल से वापिस किया जा रहा जिससे गन्ना किसानों के बच्चे स्कूली शिक्षा से बंचित हो रहें है किसानों का बैंक व बाजार का कर्ज बढ़ रहा है बिजली विभाग का सरचार्ज आदि का बोझ भी बढ़ रहा है अगली फसलों की बुवाई आदि कृषि कार्य बड़े पैमाने पर प्रभावित हो रहा है।

उद्योग व्यापार प्रीतिनिधि मंडल ने किया ज़िले की पुलिस को सम्मानित

कैनविज टाइम्स संवाददाता

पीलीभीत।जनपद के बड़े आपराधिक मामलों का पुलिस द्वारा तत्काल खुलासा करने पर उद्योग व्यापार प्रतिनिधिमंडल ने जनपद के पुलिस अधीक्षक और ज़िले की पुलिस टीम को सम्मानित किया गया है।पुलिस अधीक्षक अविनाश पांडेय को ज़िला अध्यक्ष एमए जिलानी ने उनके कार्यो की प्रशंसा करते हुए सम्मानित किया जिस पर पुलिस अधीक्षक ने कहा जनता वा समाज द्वारा सम्मानित करने के बाद पुलिस की ज़िम्मेदारियां और बढ़ जाती है।अपर पुलिस अधीक्षक वीरेंद्र कुमार को ज़िला महामंत्री पंकज अग्रवाल ने सम्मानित किया जिस पर उन्होंने सभी का धन्यवाद प्रकट कर सभी व्यापारियों से अनुरोध किया की वे अपने प्रतिष्ठानों के बाहर सीसी टीवी कैमरा ज़रूर लगवाएं। सीओ सिटी दीपक चतुर्वेदी को प्रदेश मंत्री राजेश अग्रवाल ने सम्मानित कर उनके कार्यो व हर समय जनता के लिए उपलब्ध रहने की प्रशंसा की लिया गया इनके द्वारा गजरौला मे तैनाती के दौराना महिला अधिवक्ता के साथ ऐसीड अटैक की घटना व वन विभाग कर्मी की बन्दूक लूट का सफल अनावरण करने पर ज़िला चेयरमैन अनिल महेद्रु ने सम्मानित किया गया।थाना सुनगढ़ी के प्रभारी प्रशिक्षु डिप्टी एसपी उपासना पांडेय व महिला सब इंस्पेक्टर सोनी राजोरा को महिला ज़िला अध्यक्ष कंचन सक्सेना ने सम्मानित किया।

प्रभारी निरीक्षक राजीव कुमार सिंह द्वारा हाल ही में मंदिर जाते समय एक व्यापारी की पत्नी से अपराधियों द्वारा चैन लूट ली गयी थी जिसका प्रभारी निरीक्षक व उनकी टीम द्वारा 4 घंटे मे सफल अनावरण कर निरीक्षक पवन कुमार पांडेय बल्लभ नगर मे एक किरायदार द्वारा चोरी करने वा एक पिकअप गाड़ी के लूट का सफल अनावरण करने पर ज़िला संरक्षक प्रकाश वीर ने सम्मानित किया।महिला थाना प्रभारी रीना सिंह महिला ज़िला अध्यक्ष कंचन सिंह ने सम्मानित किया।अन्य सम्मानित होने वाले अधिकारीयों मे दीपक शुक्ला प्रभारी थाना घूंघचिहाई,मुकेश शुक्ला, प्रभारी बरखेड़ा,अमित कुमार पीआरओ पुलिस अधीक्षक,सिद्धांत शुक्ला प्रभारी चौकी आसाम रोड, सुनील शर्मा प्रभारी सरविलान्स, क्रांतिवीर, प्रभारी एसओजी,दीप चंद चौकी प्रभारी खकरा,मनवीर सिंह,प्रभारी ठेका,सब इंस्पेक्टर हेमंत,कांस्टेबल आशु कुमार,कांस्टेबल प्राची शर्मा को सम्मानित किया गया है।कार्यक्रम मे मुख्य रूप से अनिल महेद्रु,पंकज अग्रवाल,प्रकाश वीर, राजेश अग्रवाल,विक्रम सिंह,विक्रांत शर्मा,संजय पांडे,सुनील वर्मा,नगर अध्यक्ष रणवीर पाठक ,राशिद अंसारी,गौतम गोहा,शैली शर्मा,आशीष लोधी,ऋषभ सिंह,मुस्तकीम मलिक,महिला अध्यक्ष कंचन सक्सेना,पूरनपुर नगर अध्यक्ष प्रदीप शुक्ला, बीसलपुर अध्यक्ष राकेश मित्तल, बिलसडा अध्यक्ष अरविन्द अवस्थी,मझोला अध्यक्ष अजय गोयल,अमरिया अध्यक्ष असगर अली,ज़हीर मलिक इमरान,रवि जायसवाल, सलमान खान, परवेज खान आदि उपस्थित रहे हैं।

पुलिस गस्त की खुली पोल, शादी में गए परिजन चोरों ने खगाला मकान

पूरनपुर। कोतवाली क्षेत्र के अंतर्गत स्थित कस्बा चौकी से कुछ ही दूरी पर स्थित मोहल्ला अहमदनगर मैं में स्थित एक मकान में बीती रात चोरों ने ढाबा बोलकर घर में रखे नगद ?20000 सोने चांदी के आभूषण चुरा ले गए सूचना मिलते ही मौके पर पहुंचे घर वालों ने देखा तो घर में रखे आभूषण और नकदी चोर चुरा ले गए।जानकारी लगते ही घरबालों के होश उड़ गए। मोहल्ला अहमदनगर की रहने वाली शहनाज पत्नी स्वर्गीय फिरोज शनिवार को अपने पुत्र के दोस्त की शादी में शेरपुर कला गई हुई थी। सुबह अपने घर पर पहुंची तो घर के ताले टूटे हुए थे अलमारी में रखा आभूषण और पर्स में लगे ?20000 नगर चोरी हो गए। जानकारी लगते ही मोहल्ले में हड़कंप मच गया है।

ट्रेन की पटरी टूटने से टल गया बड़ा हादसा, जानकारी लगते ही मच गया हड़कंप

पूरनपुर। इज्जतनगर मंडल के अंतर्गत स्थित दूधिया खुर्द स्टेशन से कुछ दूरी पर ट्रेन की पटरी टूट गई।जानकारी लगते ही रेलवे विभाग में हड़कंप मच गया। टूटी हुई पटरी का फोटो सोशल मीडिया पर वायरल होने से रेलवे के अधिकारियों को जानकारी लगी तो हड़कंप मच गया। पूरनपुर रेलवे स्टेशन से मैलानी जंक्शन की तरफ जाने वाली रेल लाइन जंक्शन की तरफ जाने वाली रेल लाइन पर स्थित दूधिया खुर्द रेलवे स्टेशन से कुछ दूरी पर ही पटरी टूट गई जानकारी लगते ही कई ग्रामीण वहां पर एकत्र हो गए सूचना रेलवे के अधिकारियों को दी गई। सूचना मिलते ही रेल कर्मचारी पर पहुंचे और जानकारी जुटाई पटरी टूटने से कोई बड़ा हादसा होने से बच गया है।

पुलिस ने पाक्सो में वांछित युवक को भेजा जेल

तिलोई अमेठी। थाना बाजार शुकुल पुलिस द्वारा पाक्सो एक्ट में वांछित एक युवक को गिरफ्तार करने में सफलता हासिल की है। पुलिस ने पकड़े गये आरोपी युवक को जेल भेज दिया है। पुलिस अधीक्षक अनूप कुमार सिंह के निर्देश पर स्थानीय पुलिस द्वारा क्षेत्र में अपराध एवं अपराधियों के धर पकड़ हेतु चलाये जा रहे अभियान के क्रम में रविवार को उप निरीक्षक विनोद कुमार वर्मा मय हमराह द्वारा देखभाल क्षेत्र, चेकिंग संदिग्ध व्यक्ति, वस्तु, वाहन के दौरान मुखबिर की सूचना पर पाक्सो एक्ट में वांछित सुरेश पुत्र जगजीवन निवासी ग्राम किसनी थाना बाजार शुकुल जनपद अमेठी उम्र करीब सत्ताइस वर्ष को पूर्वांचल एक्सप्रेस अन्डर पास पुलिया के पास से गिरफ्तार किया गया।इस सम्बंध में थाना बाजार शुकुल के थानाध्यक्ष दया शंकर मिश्र ने बताया कि पुलिस टीम द्वारा गिरफ्तार युवक को जेल भेज दिया गया है।

भाजपा के नये मण्डल अध्यक्ष पन्द्रह दिसम्बर तक चुने जायेंगे : अवधेश पाण्डेय

गौरीगंज अमेठी। भारतीय जनता पार्टी जनपद अमेठी के तहत मण्डल चुनाव कार्यशाला गौरीगंज स्थित जिला भाजपा कार्यालय पर जिला चुनाव अधिकारी अवधेश पाण्डेय की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। कार्यशाला के मुख्य अतिथि अवधेश पाण्डेय का भाजपा के जिलाध्यक्ष राम प्रसाद मिश्र ने कार्यशाला में मुख्य अतिथि का स्वागत करते हुए कार्यशाला की रूपरेखा पर प्रकाश डाला। कार्यशाला के मुख्य अतिथि मुख्य अतिथि अवधेश पाण्डेय ने अपने सम्बोधन में कहा कि भारतीय जनता पार्टी के मण्डल अध्यक्षों का चुनाव सभी मण्डल चुनाव अधिकारी पन्द्रह दिसम्बर तक कर लेंगे। मण्डल अध्यक्ष के चुनाव में जो समर्पित पूर्व में पदाधिकारी दो बार से सक्रिय सदस्य एवं पदाधिकारी रहा हो वही मण्डल अध्यक्ष के लिये नामांकन कर सकता है। मण्डल अध्यक्ष बनाने के लिये सभी वर्गों का समावेश एवं सभी वर्गों से अच्छे कार्यकर्ता चुनकर आये चुनाव अधिकारी इसका भी ध्यान रखेंगे मण्डल अध्यक्ष पैंतालीस साल की उम्र का ही बनेगा जो लगातार दो बार मण्डल अध्यक्ष रह चुके हैं वह मण्डल अध्यक्ष तीसरी बार नहीं बनेगा। मण्डल अध्यक्ष सभी वरिष्ठ एवं कार्यकर्ताओं की आम सहमति एवं सर्वसम्मत से चुना जाएगा मंडल अध्यक्ष के चुनाव में सभी कार्यकर्ता सभी वरिष्ठ कार्यकर्ताओं का समावेश होना आवश्यक है। भाजपा के प्रवक्ता चन्द्रमौलि सिंह ने जानकारी देते हुये बताया कि कार्यशाला का संचालन जिला महामंत्री सुधांशु शुक्ला ने किया।कार्यशाला में प्रमुख रूप से काशी प्रसाद तिवारी, उमाशंकर पाण्डेय, सुरेश तिवारी, गिरीश चंद्र शुक्ला, प्रवीण सिंह,शंकर बख्श सिंह सहित सभी प्रमुख कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

'पीएचसी, सीएचसी का नियमित निरीक्षण किया जाता है : सीएमओ

सुल्तानपुर। आए दिन स्वास्थ विभाग में डाक्टर, फार्मासिस्ट, दवाई व विभागीय व्यवस्था पर सवाल खड़े होने से मुख्य चिकित्साधिकारी डॉ.ओम प्रकाश चौधरी ने सभी पीएचसी, सीएचसी के अधीक्षक व डाक्टरों की चूड़ी टाइट करना शुरु कर दिया है। सीएमओ डॉ.ओम प्रकाश चौधरी ने बताया कि मेरे द्वारा जनपद की समस्त पीएचसी व सीएचसी के अधीक्षको को स्पष्ट निर्देश दिया गया है कि यदि डाक्टर या अन्य स्टाफ समय से काम पर नही पहुंचता है, तो उसकी त्वरित सूचना मेरे कार्यालय में भेजिए। उन्होनें बताया कि एसीएमओ व उप मुख्य चिकित्साधिकारियों को औचक निरीक्षण के लिए कहा गया है, साथ ही सभी अधीक्षको को अपने-अपने अस्पताल का प्रातः निरीक्षण करने के पश्चात रिपोर्ट मुख्यालय प्रेषित करें।

श्रीराम कथा के उपरांत विशाल भण्डारा में हजारों भक्तों ने ग्रहण किया प्रसाद

राज्यमंत्री द्वारा आयोजित विशाल भण्डारा में कई विधायकों के साथ ही क्षेत्रीय जनप्रतिनिधि हुये शामिल

कैनविज टाइम्स संवाददाता

तिलोई अमेठी। आरबीएस इण्टर कालेज तिलोई के प्रांगण में चल रही श्रीराम कथा के विश्राम दिवस के दूसरे दिन रविवार को विशाल भण्डारा आयोजित किया गया जिसमें हजारों की संख्या में लोगों ने प्रसाद ग्रहण किया।प्रदेश सरकार के स्वास्थ्य शिक्षा एवं चिकित्सा मंत्री राजा मयंकेश्वर शरण सिंह द्वारा आयोजित नौ दिवसीय संगीतमयी श्रीराम कथा के विश्राम के उपरांत रविवार को दोपहर से ही विशाल भण्डारा प्रारम्भ हो गया जो देर रात तक चलता रहा। इस विशाल भण्डारा में पूड़ी सब्जी,चटनी के साथ बूंदी परोसी गयी।विशाल भण्डारा में भीड़ एकत्रित न होने पाये इसके लिये दर्जनों स्टाल लगाये गये थे। राज्यमंत्री द्वारा आयोजित इस विशाल भण्डारा में उनके सुपुत्र कुंवर मृगांकेश्वर शरण सिंह, उत्कर्ष शरण सिंह, ब्लाक प्रमुख तिलोई के प्रतिनिधि कृष्ण कुमार सिंह उर्फ मुन्ना सिंह, अखण्ड प्रताप सिंह द्वारा आम जनमानस के सत्कार के साथ ही देखरेख की जा रही थी।इस विशाल भण्डारा में आम जनमानस को कोई कठिनाई न हो इसके लिये श्रीराम कथा आयोजन समिति के पदाधिकारी धर्मेश मिश्रा,भाष्कर सिंह, प्रदीप सिंह, वीरेन्द्र तिवारी,विनोद कुमार मौर्या, अवनींद्र सिंह,बंटी सिंह,ध्रुवराज पासी, गुडडू सिंह, सुधीर सिंह,शिरीष गुप्ता,आशीष नंदन त्रिपाठी, सुजीत पाण्डेय, अरुण प्रताप सिंह, राजू तिवारी, हेमेंद्र प्रताप सिंह,संदीप शुक्ला,आनंद सिंह,मोनू जायसवाल, जागेश्वर मौर्या, राजेश पाण्डेय, आशीष मिश्रा, दिनेश सिंह राठौर, सुनील सिंह, राज कपूर सिंह, राजेन्द्र सैनी के साथ ही सैकड़ों की संख्या में मुस्तैदी के साथ डटे रहे।राज्यमंत्री द्वारा आयोजित विशाल भण्डारा में प्रतापगढ़ के विधान परिषद सदस्य अक्षय प्रताप सिंह, शैलेन्द्र प्रताप सिंह, गौरीगंज के विधायक राकेश प्रताप सिंह, शिवगढ़ के ब्लाक प्रमुख कुंवर हनुमंत सिंह, दुर्गेश त्रिपाठी,जिला पंचायत राज अधिकारी मनोज कुमार त्यागी, सीओ अजय कुमार सिंह, समाज सेवी मनीष सिंह, देवी शरण बाजपेई सहित हजारों की संख्या में आम जनमानस ने प्रसाद ग्रहण किया।

बार काउंसिल ऑफ उत्तर प्रदेश सदस्य पद के प्रत्याशी संतराम राठौर पहुंचे तहसील, किया अधिवक्ताओं के साथ जनसंपर्क

कैनविज टाइम्स संवाददाता

पूरनपुर।आगामी बार काउंसिल ऑफ उत्तर प्रदेश सदस्य पद के प्रत्याशी संतराम राठौर ने पूरनपुर तहसील पहुंचकर अधिवक्ताओं से जनसंपर्क करके अपने पक्ष में वोट देने की अपील की है। शनिवार को बार काउंसिल ऑफ उत्तर प्रदेश सदस्य पद के प्रत्याशी संतराम राठौर ने बार एसोसिएशन के अध्यक्ष सहित अन्य अधिवक्ताओं से मिलकर वोट देने की अपील की है।बार काउंसिल ऑफ उत्तर प्रदेश सदस्य पद के प्रत्याशी संतराम राठौर ने कहा कि हम अपने सभी साथी अधिवक्ताओं की लड़ाई के लिए हमेशा तत्पर रहेंगे आने वाले चुनाव में अपना मत हमको देकर जिताए हम अपने अधिवक्ता साथी के साथ होने वाले अन्याय के खिलाफ उनकी लड़ाई लड़ते रहेंगे। जनसंपर्क अभियान में मुख्य रूप से अधिवक्ता गौरव पांडे,नईम खान,असद खान, फ़करुल मंजरी उर्फ टिंकू खान,कौशलेंद्र भदोरिया, युनुस खान,संजय शुक्ला,आदित्य मोहन वीरू सहित बार एसोसिएशन के सदस्य मौजूद रहे।

खेलने की उम्र में ब्याह

इक्कीसवीं सदी के भारत में यदि हर पांच में से एक लड़की का विवाह 18 साल से कम उम्र में हो जाए तो इसे विडंबना ही कहा जाएगा। पिछले एक वर्ष में दो लाख बाल विवाह कानून की सख्ती से रोके गए। निश्चित रूप से बाल विवाह मानवाधिकारों का उल्लंघन ही है। जिससे बच्चियां ताउम्र पढ़ाई से वंचित हो जाती हैं और उनका शारीरिक व मानसिक विकास अवरुद्ध हो जाता है। सही मायनों में बाल विवाह कुपोषण एवं गरीबी का ऐसा चक्र पैदा करता है जिसकी कीमत राष्ट्र को चुकानी पड़ती है। चौंकाने वाले आंकड़े हैं कि पश्चिम बंगाल, बिहार व त्रिपुरा में 40 फीसदी लड़कियों के विवाह 18 साल से पहले हो जाते हैं। यही वजह है कि केंद्रीय महिला व बाल विकास मंत्रालय ने बाल विवाह मुक्त भारत अभियान की शुरुआत की है। दरअसल, यह शुरुआत उन राज्यों को लेकर की गई है,जहां बाल विवाह की दर राष्ट्रीय औसत से अधिक है। तथ्य यह भी कि समाज में गरीबी और बाल विवाह में सीधा रिश्ता है। एक अध्ययन के अनुसार 75 फीसदी बाल विवाह गरीब परिवारों में होते हैं। जो कालांतर गरीबी के नये दुश्चक्र को जन्म देते हैं। निश्चित रूप से हमारे समाज में गरीबी व रूढ़िवाद के चलते इस कुप्रथा को बल मिलता है। अध्ययन इस बात की पुष्टि करते हैं कि संपन्न, शिक्षित और प्रगतिशील समाजों में बाल विवाह के मामले सामान्यतरू नजर नहीं आते। वहीं दूसरी ओर लिंगभेद की सोच भी इन विवाहों को बढ़ावा देती है। अभिभावक विषम परिस्थितियों के चलते अल्पवयस्क लड़कियों का विवाह करके जल्दी अपनी जिम्मेदारियों से मुक्त होना चाहते हैं। यह सवाल उठना स्वाभाविक है कि स्वतंत्रता से पूर्व देश में वर्ष 1929 में बाल विवाह निषेध कानून बनने के बावजूद इस कुप्रथा पर अंकुश क्यों नहीं लग पाया। पहले धारणा थी कि असुरक्षाबोध के चलते बाल विवाह को बढ़ावा मिलता रहा है। कम से कम स्वतंत्र भारत में बाल विवाह की सोच नहीं रहनी चाहिए थी। निस्संदेह, राजग सरकार के दौरान बाल विवाह उन्मूलन के लिये सार्थक प्रयास किए गए। हालिया बाल विवाह मुक्त अभियान की शुरुआत से पहले भी सरकार ने इस दिशा में पहल की थी। इससे पहले वर्ष 2006 में बाल विवाह कानून में सुधार किया गया। इसमें लड़कों के विवाह की उम्र 21 व लड़कियों के विवाह की उम्र 18 वर्ष कर दी गई थी। वहीं वर्ष 2021 में राजग सरकार ने 2006 के कानून में सुधार करके लड़कियों की शादी की उम्र 21 साल करने का प्रस्ताव किया था। यूनिसेफ की एक रिपोर्ट भारत में 40 फीसदी के करीब लड़कियों के 18 साल से कम उम्र में विवाह होने की बात कहती है। वहीं नेशनल क्राइम रिकॉर्ड ब्यूरो और नेशनल फैमिली हेल्थ सर्वे हर रोज चार हजार से अधिक बाल विवाह होने का उल्लेख करते हैं। बाल विवाह उन्मूलन की दिशा में असम सरकार की सफलता का अकसर जिक्र होता है, जहां आंकड़ों में तेजी से गिरावट आई है। केंद्र सरकार का लक्ष्य है कि वर्ष 2029 तक बाल विवाह की दर को पांच फीसदी से नीचे लाया जाए। निस्संदेह, बाल विवाह जहां बच्चियों के मौलिक अधिकारों का हनन है, वहीं उनकी शारीरिक व मानसिक क्षमताओं को भी कमतर करता है। इससे जहां लड़कियों के अधिकारों का अतिक्रमण होता है, वहीं उनके शोषण का भी खतरा रहता है। पढ़ाई बीच में छूट जाने से उनके सपने मर जाते हैं। वहीं दूसरी ओर कम उम्र में शादी और बच्चे होने से उनको स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। पूरी पढ़ाई न होने तथा नौकरी न कर पाने की स्थिति में वे आर्थिक रूप से पतियों पर आश्रित हो जाती हैं। जिससे उनका स्वाभाविक विकास नहीं हो पाता। जिसके चलते अकसर भावनात्मक विभेद का सामना भी करना पड़ता है। बाल विवाह का होना यह भी बताता है कि हमारे समाज में अभी दहेज प्रथा का दबाव कम नहीं हुआ है। जिससे बचने के लिये अभिभावक तुरत-फुरत अल्पवयस्क लड़कियों की शादी कर देते हैं। लेकिन एक हकीकत यह भी कि सिर्फ कानून बनाने से ही इस कुरीति पर अंकुश नहीं लगाया जा सकता, समाज में जागरूकता लाने के लिये भी राष्ट्रव्यापी अभियान चलाना होगा।

प्रदूषण से बढ़ती मौतों के लिये कौन जिम्मेदार?

बढ़ता वायु प्रदूषण न केवल भारत के लिये बल्कि दुनिया के लिये एक गंभीर समस्या है। चीन में भी इसी कालखंड में 23 लाख लोग वायु प्रदूषण से मरे हैं। जहां तक पूरी दुनिया में इस वर्ष मरने वालों की कुल संख्या का प्रश्न है तो यह करीब 81 लाख बतायी जाती है। चिंता की बात यह है कि भारत व चीन में वायु प्रदूषण से मरने वालों की कुल संख्या के मामले में यह आंकड़ा वैश्विक स्तर पर 54 फीसदी है। जो हमारे तंत्र की विफलता, गरीबी और प्रदूषण नियंत्रण में शासन-प्रशासन की कोताही एवं लापरवाही को ही दर्शाता है। इसमें आम आदमी की लापरवाही भी कम नहीं है। आम आदमी को पता ही नहीं होता है कि किन प्रमुख कारणों से यह प्रदूषण फैल रहा है और किस तरह वे इससे बचाव कर सकते हैं। प्रश्न है कि आम आदमी एवं उसकी जीवनशैली वायु प्रदूषण को इतना बेपरवाह होकर क्यों फैलाती है? क्यों आदमी मृत्यु से नहीं डर रहा है? क्यों भयभीत नहीं है? देश की जनता दुख, दर्द और संवेदनहीनता के जटिल दौर से रुबरू है, प्रदूषण जैसी समस्याएं नये-नये मुखौटे ओढ़कर डराती है, भयभीत करती है।

राष्ट्रीय प्रदूषण नियंत्रण दिवस पर विशेष

राष्ट्रीय प्रदूषण नियंत्रण दिवस हर साल 2 दिसंबर को मनाया जाता है। यह दिन प्रदूषण के हानिकारक प्रभावों के बारे में जागरूकता फैलाने के लिए मनाया जाता है। इस दिन को मनाने का मकसद, प्रदूषण नियंत्रण तकनीकों, नीतियों, और प्रदूषण को कम करने के महत्व पर ध्यान आकर्षित करना है। यह दिन भोपाल गैस त्रासदी में अपनी जान गंवाने वाले लोगों की याद में मनाया जाता है। यह त्रासदी 2-3 दिसंबर, 1984 की रात को हुई थी। इस त्रासदी में ज़हरीली गैस मिथाइल आइसोसाइनेट (एमआईसी) के कारण सैकड़ों लोगों की मौत हो गई थी। कहते हैं जान है तो जहान है, लेकिन भारत में बढ़ते प्रदूषण के कारण जान और जहान दोनों ही खतरे में हैं। देश एवं दुनिया की हवा में घुलते प्रदूषण का 'जहर' अनेक बार खतरनाक स्थिति में पहुंच जाना चिन्ता का बड़ा कारण हैं। प्रदूषण की अनेक बंदिशों एवं हिदायतों के बावजूद प्रदूषण नियंत्रण की बात खोखली साबित हो रही है। यह कैसा समाज है जहां व्यक्ति के लिए पर्यावरण, अपना स्वास्थ्य या दूसरों की सुविधा-असुविधा का कोई अर्थ नहीं है। प्रदूषण के कारण जल, भूमि, और वायु प्रदूषित होता है, जिससे मौतें होती हैं, प्रदूषण से जीवन और स्वास्थ्य की गुणवत्ता प्रभावित होती है। जीवन-शैली ऐसी बन गयी है कि आदमी जीने के लिये सब कुछ करने लगा पर खुद जीने का अर्थ ही भूल गया, इस गंभीर होती स्थिति को यूनिसेफ और अमेरिका के स्वतंत्र अनुसंधान संस्थान 'हेल्थ इफ़ेक्ट्स इंस्टीट्यूट' की साझेदारी में जारी रिपोर्ट ने बयां किया है, इस रिपोर्ट के आंकड़े परेशान एवं शर्मसार करने के साथ चिन्ता में डालने वाले हैं, जिसमें वर्ष 2021 में वायु प्रदूषण से 21 लाख भारतीयों के मरने की बात कही गई है। ज्यादा दुख की बात यह है कि मरने वालों में 1.69 लाख बच्चे हैं, जिन्होंने अभी दुनिया ठीक से देखी ही नहीं थी। निश्चय ही ये आंकड़े जहां व्यथित, चिन्तीत व परेशान करने वाले हैं। वहीं सरकार के नीति-नियंताओं के लिये यह शर्म का विषय होना चाहिए, लेकिन उन्हें शर्म आती ही कहा है? तनिक भी शर्म आती तो सरकारें एवं उनके कर्ता-धर्मा इस दिशा में गंभीर प्रयास करते। सरकार की नाकामयियों ही हैं कि जिन्दगी विषमताओं और विसंगतियों से घिरी होकर उसे कहीं से रोशनी की उम्मीद दिखाई नहीं दे रही है। बढ़ता वायु प्रदूषण न केवल भारत के लिये बल्कि दुनिया के लिये एक गंभीर समस्या है। चीन में भी इसी कालखंड में 23 लाख लोग वायु प्रदूषण से मरे हैं। जहां तक पूरी दुनिया में इस वर्ष मरने वालों की कुल संख्या का प्रश्न है तो यह करीब 81 लाख बतायी जाती है। चिंता की बात यह है कि भारत व चीन में वायु प्रदूषण से मरने वालों की कुल संख्या के मामले में यह आंकड़ा वैश्विक स्तर पर 54 फीसदी है। जो हमारे तंत्र की विफलता, गरीबी और प्रदूषण नियंत्रण में शासन-प्रशासन की कोताही एवं लापरवाही को ही दर्शाता है। इसमें आम आदमी की लापरवाही भी कम नहीं है। आम आदमी को पता ही नहीं होता है कि किन प्रमुख कारणों से यह प्रदूषण फैल रहा है और किस तरह वे इससे बचाव कर सकते हैं। प्रश्न है कि आम आदमी एवं उसकी जीवनशैली वायु प्रदूषण को इतना बेपरवाह होकर क्यों फैलाती है? क्यों आदमी मृत्यु से नहीं डर रहा है? क्यों भयभीत नहीं है? देश की जनता दुख, दर्द और संवेदनहीनता के जटिल दौर से रूबरू है, प्रदूषण जैसी समस्याएं नये-नये मुखौटे ओढ़कर डराती है, भयभीत करती है। विडम्बना तो यह है कि विभिन्न राज्यों की सरकारें इस विकट होती समस्या का हल निकालने की बजाय राजनीतिक आरोप-प्रत्यारोप करती है, जानबूझकर प्रदूषण फैलाती है ताकि एक-दूसरे की छीछालेदर कर सके। दिल्ली सहित उत्तर भारत के ज्यादातर इलाकों में प्रदूषण बेहद खतरनाक स्थिति में बना रहता है। हालत ये बनते हैं कि कभी-कभी सांस लेना मुश्किल हो जाता है और लोगों को घरों में ही रहने को मजबूर होना पड़ता है। दिल्ली, नोएडा, गाजियाबाद, फरीदाबाद, गुरुग्राम में प्रदूषण का बड़ा कारण पड़ोसी राज्यों से आने वाला पराली का धुआं होता है। पराली के बाद पटाखों का धुआं भी बड़ी समस्या है, इसके अलावा सड़कों पर लगातार बढ़ते निजी वाहन, गुणवत्ता के ईंधन का उपयोग न होना, निर्माण कार्य खुले में होना, उद्योगों की घातक गैसों व धुएं का नियमन न होने जैसे अनेक कारण वायु प्रदूषण बढ़ाने वाले हैं। वहीं दूसरी ओर आवासीय कॉलोनियों व व्यावसायिक संस्थानों का विज्ञानसम्मत ढंग से निर्माण न हो पाना भी प्रदूषण बढ़ाने की एक वजह है। यह कैसी शासन-व्यवस्था है? यह कैसा अदालतों की अवमानना का मामला है? यह सभ्यता की निचली सीढ़ी है, जहां तनाव-ठहराव की स्थितियों के बीच हर व्यक्ति, शासन-प्रशासन प्रदूषण नियंत्रण के अपने दायित्वों से दूर होता जा रहा है। यूनीसेफ की रिपोर्ट में वायु प्रदूषण से 1 लाख 69 हजार बच्चे जिनकी औसत आयु पांच साल से कम बतायी गई है, मौत के शिकार होते हैं। जानलेवा प्रदूषण का प्रभाव गर्भवती महिलाओं पर होने से बच्चे समय से पहले जन्म ले लेते हैं, इनका समुचित शारीरिक विकास सही ढ़ंग से नहीं हो पाता। इससे बच्चों का कम वजन का पैदा होना, अस्थमा तथा फ़ेफड़ों की बीमारियां से पीड़ित होना हैं। हमारे लिये चिंता की बात यह है कि बेहद गरीब मुल्कों नाइजीरिया, पाकिस्तान, बांग्लादेश, इथोपिया से ज्यादा बच्चे हमारे देश में वायु प्रदूषण से मर रहे हैं। विडंबना यह है कि ग्लोबल वार्मिंग तथा जलवायु परिवर्तन के संकट ने वायु प्रदूषण से होने वाली मौतों की संख्या को बढ़ाया ही है। एक अरब चालीस करोड़ जनसंख्या वाले देश भारत के लिये यह संकट बहुत बड़ा है। दिल्ली सहित देश के कई महानगरों में प्रदूषण जीवन का अभिन्न हिस्सा बन गयी है। हर कुछ समय बाद अलग-अलग वजहों से हवा की गुणवत्ता का स्तर 'बेहद खराब' की श्रेणी में दर्ज किया जाता है और सरकार की ओर से इस स्थिति में सुधार के लिए कई तरह के उपाय करने की घोषणा की जाती है। हो सकता है कि ऐसा होता भी हो, लेकिन सच यह है कि फिर कुछ समय बाद प्रदूषण का स्तर गहराने के साथ यह सवाल खड़ा होता है कि आखिर इसकी असली जड़ क्या है और क्या सरकार की कोशिशें सही दिशा में हो पा रही है? इस विकट समस्या से मुक्ति के लिये ठोस कदम उठाने होंगे। सिर्फ दिल्ली ही नहीं, देश के कई शहर वायु प्रदूषण की गंभीर मार झेलते हैं। इसका पता तब ज्यादा चलता है जब वैश्विक पर्यावरण संस्थान अपने वायु प्रदूषण सूचकांक में शहरों की स्थिति को बताते हैं।

पिछले कई सालों से दुनिया के पहले बीस प्रदूषित शहरों में भारत के कई शहर दर्ज होते रहे हैं। जाहिर है, हम वायु प्रदूषण के दिनोंदिन गहराते संकट से निपट पाने में तो कामयाब हो नहीं पा रहे, बल्कि जानते-बूझते ऐसे काम करने में जरा नहीं हिचकिचा रहे जो हवा को जहरीला बना रहे हैं। चिंता की बात यह है कि मृत्यु दर का सबसे बड़ा कारण वायु प्रदूषण ही है। उसके बाद उच्च रक्तचाप, कुपोषण तथा तंबाकू सेवन से होने वाली मौतों का नंबर आता है। दरअसल, गरीबी और आर्थिक असमानता के चलते बड़ी आबादी येन-केन- प्रकारेण जीविका उपार्जन में लगी रहती है, उसकी प्राथमिकता प्रदूषण से बचाव के बजाय रोटी ही है। वहीं ढुलमुल कानूनों, तंत्र की काहिली तथा जागरूकता के अभाव में वायु प्रदूषण रोकने की गंभीर पहल नहीं हो पाती। मुश्किल यह है कि वायुमंडल के घनीभूत होने की वजह से जमीन से उठने वाली धूल, पराली की धुंध और वाहनों से निकलने वाले धुएं के छंटने की गुंजाइश नहीं बन पाती है। नतीजन, वायु में सूक्ष्म जहरीले तत्व घुलने लगते हैं और प्रदूषण के गहराने की दृष्टि से इसे खतरनाक माना जाता है। हमारा राष्ट्र एवं दिल्ली सहित अन्य राज्यों की सरकारें नैतिक, आर्थिक, राजनैतिक और सामाजिक एवं व्यक्तिगत सभी क्षेत्रों में मनोबल के दिवालिएपन के कगार पर खड़ी है। देश में वायु प्रदूषण से होने वाली मौतों के हेल्थ इफ़ेक्ट्स इंस्टीट्यूट के आंकड़े इस वास्तविकता को उजागर करते हुए प्रदूषण की समस्या का कोई दीर्घकालिक और ठोस हल निकालने के लिये चेता रहे हैं। प्रदूषण को कम करने के लिए लोगों को जागरूक करना ज़रूरी है, विचार और योजनाएं बनानी चाहिए। **-ललित गर्ग**

अब सर्वोच्च न्यायालय पूजा स्थल अधिनियम की रक्षा करे

पी सुधीर

उत्तर प्रदेश के संभल में हाल ही में हुई घटनाएं, जिसमें पांच युवा मुस्लिम पुरुषों की मौत हो गयी, संसद द्वारा अधिनियमित पूजा स्थल (विशेष प्रावधान) अधिनियम, 1991 के महत्व को रेखांकित करती है। यह कानून देश की आजादी 15 अगस्त 1947 को पूजा स्थलों की स्थिति के अलग श्किसी भी पूजा स्थल के रूपांतरणय (धारा 3) को प्रतिबंधित करता है और उस समय की स्थिति के अनुरूप श्किसी भी पूजा स्थल के धार्मिक चरित्र को बनाये रखने का प्रावधान करता है (धारा 4)। कोई भी व्यक्ति श्किसी भी धार्मिक संप्रदाय या उसके किसी भी वर्ग के पूजा स्थल को उसी धार्मिक संप्रदाय के किसी अन्य वर्ग या किसी अन्य धार्मिक संप्रदाय के पूजा स्थल में परिवर्तित नहीं कर सकताय। ध्यान रहे कि रामजन्मभूमि- बाबरी मस्जिद विवाद को अधिनियम के दायरे से बाहर रखा गया था। 2019 में अयोध्या विवाद पर सर्वोच्च न्यायालय की पांच सदस्यीय पीठ के फैसले ने भी पूजा स्थल अधिनियम की वैधता को दोहराया था और कहा था कि मौजूदा धार्मिक स्थलों के खिलाफ कोई दावा कानून द्वारा स्वीकार नहीं किया जा सकता है। हालांकि, मई 2022 में सुप्रीम कोर्ट ने वाराणसी में ज्ञानवापी मस्जिद का सर्वेक्षण करने की अनुमति दी थी। जिला अदालत में दायर एक याचिका में कहा गया है कि मस्जिद को एक ध्वस्त मंदिर के खंडहर पर बनाया गया था। भारत के तत्कालीन मुख्य न्यायाधीश डीवाई चंद्रचूड़ की अध्यक्षता वाली पीठ ने सर्वेक्षण जारी रखने की अनुमति देते हुए कहा कि 1991 के अधिनियम के तहत किसी धार्मिक स्थल की प्रकृति का पता लगाना वर्जित नहीं है। बाद में न्यायालय ने यह भी माना कि याचिकाकर्ता केवल 15 अगस्त, 1947 को स्थान की स्थिति का पता लगाने की मांग कर रहे हैं, न कि अधिनियम के अनुसार स्थान की प्रकृति को बदलने या परिवर्तित करने की। इस भयावह निर्णय से, हिंदू संप्रदायवादियों के लिए विभिन्न स्थानों पर कानूनी विवाद खड़ा करने के लिए बाढ़ के द्वार खुल गये, जहां मस्जिदें मौजूद हैं। ज्ञानवापी मस्जिद सर्वेक्षण की मांग के बाद मथुरा में ईदगाह में इसी तरह का मामला सामने आया और जिला अदालत ने सर्वेक्षण का आदेश दिया। इसके बाद संभल का मामला आया। 19 नवंबर को जिला अदालत ने अधिवक्ता विष्णु शंकर जैन द्वारा दायर एक आवेदन के आधार पर 1526 में निर्मित मुगलकालीन मस्जिद के सर्वेक्षण की अनुमति दी, जिन्होंने पहले मथुरा और वाराणसी की जिला अदालत में याचिकाएं दायर की थीं। इस तथ्य के बावजूद कि मस्जिद एक संरक्षित स्मारक है, आवेदन को तुरंत स्वीकार कर लिया गया। आश्चर्यजनक तत्परता के साथ, अदालत ने एक अधिवक्ता आयोग का गठन किया और उसी दिन सर्वेक्षण करने का आदेश दिया। सर्वेक्षण रिपोर्ट 29 नवंबर को प्रस्तुत की जानी थी। मस्जिद समिति को सुनवाई का मौका भी नहीं दिया गया। मस्जिद समिति के पूर्ण सहयोग से सर्वेक्षण किया गया। हालांकि, 24 नवंबर को सर्वेक्षण दल मस्जिद में एक और सर्वेक्षण करने पहुंचा। इस बार उनके साथ न केवल पुलिस थी, बल्कि बड़ी संख्या में लोग श्जय श्री राम्य के नारे लगा रहे थे। मुसलमानों की भीड़ जमा हो गयी और कुछ ही देर बाद स्थिति नियंत्रण से बाहर हो गयी, पत्थरबाजी, लाठी चार्ज, आंसू गैस और गोलीबारी शुरू हो गयी। तीन युवा मुस्लिम युवकों की गोली लगने से मौत हो गई और बाद में दो और घायल हो गए। स्थानीय समाजवादी पार्टी के सांसद और समाजवादी पार्टी के विधायक के बेटे पर पुलिस द्वारा दर्ज की गयी एफआईआर में दंगा और हिंसा भड़काने का आरोप लगाया गया है। उत्तर प्रदेश में आदित्यनाथ शासन में किसी भी बहाने से मुसलमानों पर बड़े पैमाने पर हमला किया जा रहा है। कुछ सप्ताह पहले बहराइच में हुई सांप्रदायिक हिंसा के कारण मुस्लिम समुदाय के खिलाफ राज्य का दमन हुआ और बड़ी संख्या में मुस्लिम युवकों को गिरफ्तार किया गया। हिंदूवादी संगठन कानूनी तरीके से विवाद को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न मस्जिदों को निशाना बना रहे हैं। संभल में 16वीं सदी की मस्जिद को लेकर विवाद को हवा देने की कोशिशों में न्यायिक मिलीभगत का भी हाथ था। उत्तर प्रदेश के स्थानीय न्यायालयों में हमने जो देखा है-वाराणसी, मथुरा और अब संभल में - वह सदियों पुरानी मस्जिदों को हिंदू वर्चस्व स्थापित करने के लिए युद्ध के मैदान में बदलने की योजनाबद्ध कोशिश है। सबसे परेशान करने वाली बात यह है कि यह सब खुद सुप्रीम कोर्ट के जस्टिस चंद्रचूड़ के नेतृत्व में संभव हुआ, जिसने उसी कानून की अवहेलना की जिसका पालन करने का आदेश पहले सभी को दिया था। अगर इस विनाशकारी रास्ते को पलटना है, तो सुप्रीम कोर्ट को तुरंत हस्तक्षेप करना चाहिए और पूजा स्थल अधिनियम की पवित्रता को बनाये रखना चाहिए, जो 15 अगस्त, 1947 के बाद पूजा स्थल के बारे में कोई भी कानूनी विवाद उठाने की अनुमति नहीं देता है।

सेहत मंत्र

वायु प्रदूषण से श्वसन तंत्र ही नहीं, आंखें भी होती हैं प्रभावित : डॉक्टर्स

अगर आप सोचते हैं कि वायु प्रदूषण से केवल फ़ेफड़े या श्वसन तंत्र प्रभावित होते हैं, तो दुबारा विचार करें। क्योंकि मेडिकल विशेषज्ञों का कहना है कि खराब वायु गुणवत्ता से आंखों में कई समस्याएं भी हो सकती है, जिसमें कोर्निया को होनेवाली क्षति भी शामिल है। ऑल इंडिया इंस्टीट्यूय ऑफ मेडिकल साइंसेज (एम्स) के ऑप्थामोलोजिस्ट डॉ. राजेश सिन्हा ने आईएएनएस को बताया कि नाक और मुंह की तरह आंखों को ढकना काफी मुश्किल है। इससे फ़ेफड़ों की तरह ही आंखों पर भी वायू प्रदूषण का बुरा असर पड़ता है। उन्होंने बताया कि आंख की ओकुलर सतह वातावरण के सीधे संपर्क आती है, इसलिए यह वायु प्रदूषण से सबसे ज्यादा प्रभावित होती है। सर गंगा राम हॉस्पिटल, दिल्ली के ऑप्थामोलोजिस्ट डॉ. टिंकू बाली राजदान ने बताया कि कई सालों तक प्रदूषण के संपर्क में रहने के कारण कोरोना को क्षति पहुंचती है, यह तुरंत नहीं होता है। अगर ड्राइ आई की समस्या लंबे समय तक रहती है, तो यह भी कोरोना को क्षतिग्रस्त कर सकती है, जिससे लंबे समय में दृष्टि प्रभावित होती है। खुजली होने पर आंखों को रगड़ने से भी कोरोना पर असर पड़ता है। डॉ. राजदान ने कहा कि वायु प्रदूषण के संपर्क से ड्राइ आई की समस्या या आंखों के पानी की गुणवत्ता खराब हो जाती है। इससे आंखों में खुजली, परेशानी और लाल होने की समस्याएं होने लगती है।'' सिन्हा का कहना है, ''जो लोग कंटैक्ट लेंस पहनते हैं, उन्हें जोखिम और बढ़ जाता है, क्योंकि उनकी आंखें पहले से ही ड्राई होती है। ऑप्थामोलोजिस्ट्स का कहना है कि प्रदूषण बढ़ने से ओपीडी में एलर्जी के इलाज के लिए आनेवाले मरीजों की संख्या बढ़ी है। मैक्स हेल्थकेयर के आंख विभाग के निदेशक और प्रमुख डॉ. संजय धवन का कहना है किआंखों में खुजली, परेशानी और नजर कमजोर होने की समस्या से पीड़ित मरीजों की संख्या बढ़ी है तथा इम्युनिटी कम होने के कारण ड्राई आई और अन्य संक्रमण बढ़े हैं।

धर्म मंत्र

श्रीकृष्ण के तीन पौराणिक मंत्र किसी भी प्रकार के संकट को पास फटकने नहीं देते

भगवान श्रीकृष्ण संबंधी मंत्र तो बहुत हैं लेकिन कुछ खास मंत्रों का ही प्रचलन और महत्व है। यहां प्रस्तुत हैं कृष्ण के सरल एवं पौराणिक मंत्र सभी मंत्र को जपने से पूर्व एक बार ? श्री कृष्णाय शरणं मम। मंत्र का उच्चारण अवश्य करें। पहले मंत्र के लिए पवित्रता का विशेष ध्यान रखें। स्नान पश्चात कुश के आसन पर बैठकर सुबह और शाम संध्या वंदन के समय उक्त मंत्र का 108 बार जाप करें। यह मंत्र जीवन में किसी भी प्रकार के संकट को पास फटकने नहीं देगा।

ॐ कृष्णाय वासुदेवाय हरये परमात्मने, प्रणतः क्लेशनाशाय गोविंदाय नमो नमः॥ दूसरा मंत्र संकटकाल में दोहराया जाता है। जब कभी भी व्यक्ति को आकस्मिक संकट का सामना करना पड़ता है तो तुरंत ही पूर्ण श्रद्धा और विश्वास के साथ उक्त मंत्र का जाप कर संकट से मुक्ति पाई जा सकती है। **ॐ नमः भगवते वासुदेवाय कृष्णाय, क्लेशनाशाय गोविंदाय नमो नमः।** तीसरा मंत्र निरंतर दोहराते रहना चाहिए। उक्त मंत्र को चलते-फिरते उठते-बैठते और कहीं भी किसी भी क्षण में दोहराते रहने से कृष्ण से जुड़ाव रहता है। इस तरह से श्री कृष्ण का निरंतर ध्यान करने से व्यक्ति कृष्ण धारा से जुड़कर मोक्ष प्राप्ति का मार्ग पुष्ट कर लेता है।

'हरे कृष्ण हरे कृष्ण, कृष्ण कृष्ण हरे हरे।, हरे राम हरे राम, राम-राम हरे-हरे। कृष्ण मंत्रों का महत्व-उक्त मंत्र के महत्व को समझते हुए अन्य की ओर जो अपना मन नहीं लगाता वह कृष्ण की शरण में होता है और जो कृष्ण की शरण में है उसे किसी भी प्रकार के रोग और शोक सता नहीं सकते।

पर्यटन

विश्व की सबसे सीधी टनल और स्कॉटिश स्टाइल रेलवे स्टेशन के लिए मशहूर है बड़ोग

हिमाचल प्रदेश के सोलन जिले में स्थित बरोग बहुत ही खूबसूरत जगह है। जहां जाकर आप 2 से 3 दिनों की छुट्टियां सुकून से बिता सकते हैं। चीड़ और देवदार के जंगलों से घिरा हुआ बड़ोग, बेशक शिमला, मनाली जैसी बहुत मशहूर जगह नहीं लेकिन वीकेंड में छुट्टियां बिताने के लिए परफ़ेक्ट डेस्टिनेशन है। हिमाचल प्रदेश के सोलन जिले में स्थित बरोग का रेलवे स्टेशन यहां देखने वाली बहुत ही खूबसूरत जगह है। जहां तक पहुंचने का रास्ता भी पहाड़ियों से होकर आता है। यहां आप टॉय ट्रेन की राइड ले सकते हैं। ज्यादातर टूरिस्ट्स शिमला की यात्रा करते समय चंडीगढ़ से 60 किलोमीटर की दूरी पर कालका-शिमला हाइवे पर स्थित बड़ोग में रुकना पसंद करते हैं। बड़ोग में कालका-शिमला रेल मार्ग पर सुरंग नंबर 33 है। इसकी लंबाई 1143.11 मीटर है। इसका निर्माण ब्रिटिश इंजीनियर एच. एस. हैरिंगटन द्वारा जुलाई 1900 से सितंबर 1903 के बीच कराया गया। दरअसल, इस शहर का नाम इसी सुरंग के निर्माता के नाम पर पड़ा है। शहर का नाम अंग्रेज इंजीनियर बड़ोग के नाम पर रखा गया है। बड़ोग रेलवे स्टेशन के निर्माण को गति देने के लिए पर्वत के दोनों ओर खुदाई करने का आदेश दिया गया था। हालांकि बाद में यह पता चला कि इंजीनियर बड़ोग का अनुमान गलत होने के कारण टनल के दोनों सिरे आपस में नहीं मिल सके। इस पर ब्रिटिश सरकार ने उन पर एक रुपये का जुर्माना लगाया। इस शर्मिंदगी के कारण उन्होंने आत्महत्या कर ली। इंजीनियर बड़ोग का शव इस टनल के पास ही दफनाया गया और बाद में उनके नाम पर इस गांव का नाम बड़ोग रखा गया। यह विश्व की सबसे सीधी टनल के रूप में जानी जाती है। यहां का रेलवे स्टेशन स्कॉटिश स्टाइल में बना है, जो बहुत आकर्षक है। रेणुका लेक- बड़ोग की ये जगह है फ़ेमस टूरिस्ट स्पॉट। जो हिमाचल प्रदेश के सबसे बड़े नेचुरल लेक में से एक है। समुद्र तल से करीब 672 मीटर की ऊंचाई वाली इस झील का नाम भगवान परशुराम की मां रेणुका के नाम पर रखा गया है। घने जंगलों से घिरी इस झील के किनारे दो मंदिर भी हैं।

टिकैतगंज में मुख्यमंत्री आरोग्य मेला, पीएचसी पर मरीजों की भीड़

कैनविज टाइम्स संवाददाता

निन्दूरा बाराबंकी। तहसील फतेहपुर क्षेत्र के कस्बा टिकैतगंज स्थित प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र अपने दायित्व को लेकर सजग है। दूसरे शब्दों में कहें तो यहां के चिकित्सक चिकित्सा एवं स्वास्थ्य सेवा का दायित्व अच्छे से निर्वहन कर रहे हैं। शायद यही वजह है कि इस समय इस प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र पर इन दिनों मरीजों की संख्या में भारी बढ़ोतरी हुई है। डॉक्टरों द्वारा बेहतर काउंसिलिंग और उचित इलाज से मरीजों को लाभ हो रहा है। परिणामतः इलाज के लिए दुरांचल से मरीज यहां आने लगे है। पीड़ित एवं उपचारितों की माने तो पीएचसी टिकैतगंज में तैनात डॉक्टर स्वाति वर्मा का व्यवहारिक सलीका तरीका अपनत्व पूर्ण होने से मरीज अत्यधिक प्रभावित है। मात्र एक रुपए खर्च कर जन

सामान्य निजी हॉस्पिटल जैसी सहज उपचार पाकर स्वस्थ हो रहे है।

आज रविवार को प्रातः 10 बजे से शाम चार बजे तक मुख्यमंत्री आरोग्य मेला ने इस बात का प्रमाण जुटाया है। अस्पताल आने वाला अधिकांश मैरिज जिसमें अधिक संख्या महिलाएं हैं डॉ स्वाति वर्मा से इलाज हेतु उत्सुक दिखाई दी।खबर लिखने तक 45 मरीजों को मनायोग से देखा गया और उन्हें उपचारित किया जा चुका था।फार्मासिस्ट संजय कुमार रावत और उनकी टीम की उपस्थित में सर्दी जुकाम,बुखार,टाइफाइड व अन्य बीमारियों के का स्वास्थ्य परीक्षण कर दवा दी गई।

बच्चों को नंगे पैर ना निकलने दें : डां.स्वाति

निःशुल्क किए जा रहे टेस्ट

आरोग्य मेला में आए हुए मरीजों में विडाल,मलेरिया,एनीमिया,हीमोग्लोबिन सहित अन्य करीब 25 लोगो के निशुल्क टेस्ट किए गए।

आरोग्य मेला में आए मरीजों से की अपील

स्वास्थ्य मेला के माध्यम से डॉक्टर स्वाति वर्मा ने क्षेत्र वासियों से अपील करते कहा कि आजकल मलेरिया, डेंगू से बचाव के लिए घर में तथा आसपास पानी इकट्ठा ना होने दे साथ ही साफ सफाई रखे।आजकल मौसम बदल रहा है।इसलिए बच्चों को नंगे पैर न घूमने दे और पूरे कपड़े पहनाए ताकि मलेरिया और कोल्ड कफ से उन्हें बचाया जा सके।

महादेवा महोत्सवः - कवि मनोज शीत ने अपनी प्रस्तुति में संपूर्ण महादेवा महोत्सव का किया बखान

कैनविज टाइम्स संवाददाता

महादेवा बाराबंकी। महादेवा महोत्सव के तीसरे दिन सांस्कृतिक कार्यक्रमों की श्रृंखला में आयोजित स्थानीय कवि सम्मेलन में बड़ी संख्या में क्षेत्रवासी कविताओं का रसपान करते रहे। कवियों ने वीर व प्रेम सहित भाव रस में जमकर डुबकी लगाई। कवि सम्मेलन का उद्घाटन ब्लॉक प्रमुख संजय तिवारी ने दीप प्रज्वलित कर किया।कार्यक्रम के शुभारंभ के दौरान दीप प्रज्वलित करने वालों में ब्लॉक प्रमुख के साथ खंड विकास अधिकारी जितेंद्र कुमार व नायब तहसीलदार अभिषेक कुमार शामिल रहे। कवि सम्मेलन की शुरुआत कवियत्री अंकिता शुक्ला ने मां वीणा पाणि की बंदना है हंस वाहिनी ज्ञान दायिनी करुणा माई माता प्रस्तुत करके

किया। कवि सम्मेलन के संयोजक मनोज मिश्र शीत ने अपनी कविता के माध्यम से महादेवा महोत्सव के सभी कार्यक्रमों का बखान कर खूब तालियां बटोरी।इसके अलावा उन्होंने अपनी रचना प्रस्तुत करते हुए कहा यदु कुल के कुल की खोल सारी गांठ रहे हैं, पुश्तैनी इनके ऐसे ठाट बांट रहे हैं हिंदू अगर मरे तो देंगे नहीं छदाम, संभल में पांच पांच लाख बांट रहे हैं। वरिष्ठ कवि डा. अम्बरीष अंबर द्वारा बहू में बेटी नजर आए ननद भाभी पर इतराये, प्रीत में जहां रवानी है स्वर्ग की यही निशानी है राम की भव्य कहानी है। सुनाया तो पूरा संस्कृत पंडाल तालियों के गड़गड़ाहट से गूंज उठा। कवि डॉ समेश शर्मा ने माता-पिता के आशीर्वाद का मर्म समझाते हुए कहा ,जमाना लाख दुश्मन हो हमारा कुछ न बिगड़ेगा हम अपने मां-बाप गुरु की दुआएं लेकर चलते हैं। इसके बाद मशहूर गीतकार प्रमोद पंकज ने गीत प्रस्तुत किया।कवि अजय प्रधान के अलावा जगन्नाथ दीक्षित निर्दोष रोहित सिरफिरा शिवाजी अंत प्रकाश बिंदु विनीत शहर सुधाकर दीक्षित रणधीर सिंह मुकेश मिश्र आदि ने भी काव्य पाठ कर श्रोताओं की। तालियां बटोरी। इस मौके पर भारी संख्या में साहित्य प्रेमी मौजूद थे।

दो दिवसीय धनुष यज्ञ मेले का हुआ आयोजन

कैनविज टाइम्स संवाददाता

रामसनेही घाट बाराबंकी। प्रतिवर्ष की भांति इस बार भी क्षेत्र के देवीगंज में दो दिवसीय धनुष यज्ञ मेला आयोजन किया गया।देवीगंज मेला महोत्सव के प्रबंधक विवेकानंद शुक्ला ने आरती करके मेले का शुभारंभ किया गया। धनुष यज्ञ मेले में रामलीला कलाकारों ने रावण व बाणासुर आदि कई प्रसंगों का बहुत ही सुंदर ढंग से मंचन हुआ।करीब सौ वर्षों से लगातार देवीगंज में धनुष यज्ञ मेले का आयोजन होता आ रहा है। चौराहे पर स्थित ऐतिहासिक शिव मंदिर परिसर में धनुष यज्ञ मेला रविवार को संपन्न हुआ। जिसमे स्थानीय कलाकारों द्वारा सुंदर प्रस्तुति दी गई। इस दौरान धनुष भंग, राम लक्ष्मण संवाद,राम सीता विवाह सहित आदि कई कार्यक्रमों का बहुत ही सुंदर मंचन किया गया।जिसे देखकर वहां

मौजूद दर्शक मंत्रमुग्ध हो गए। दर्शकों ने जय श्री राम के उद्घोष के साथ रामलीला मंचन कर रहे कलाकारों का उत्साह वर्धन किया।आसपास के कई गांव की सैकड़ों महिलाओं पुरुषों व बच्चों ने मेले का आनंद लिया।स्थानीय मेले में चाट मिठाई सौंदर्य प्रसाधन आदि की सजी दुकानों पर जमकर खरीददारी होती रही।मेला समिति के अध्यक्ष विवेकानंद शुक्ला विवेक ने बताया कि प्रति वर्ष धनुषयज्ञ मेले का आयोजन किया जाता है।इस मौके पर शिव मंदिर पुजारी रामकुमार तिवारी,दिनेश बाजपेई, पंकज यज्ञसैनी,अवधेश शुक्ला,दुर्गेश त्रिवेदी, हरिहर सिंह सहित हजारो की संख्या में लोग मौजूद रहे।

लखनऊ के बाद दिल्ली की आयकर टीम ने रिमझिम इस्पात में जमाया डेरा

कैनविज टाइम्स संवाददाता

हमीरपुर। लखनऊ की आयकर टीम के अलावा अब दिल्ली की टीम ने रिमझिम में डेरा जमाया है। रविवार को टीम ने रिमझिम इस्पात के ठेकेदार पिता पुत्र के आवास पर छापा मारकर दोनों को अपने साथ फैक्टरी लेकर आयी है और आवास में अपने साथ गई पुलिस को तैनात किया है।

गत बुधवार को रात 11 बजे शुरू हुई आयकर विभाग की छापेमारी रविवार को भी जारी रही। लखनऊ की टीम के बाद दिल्ली से टीम भी फैक्टरी पहुंची और गहन जांच पड़ताल शुरू की। रविवार को टीम ने फैक्टरी के ठेकेदार सुमेरपुर में बांकी मार्ग निवासी ओपी द्विवेदी एवं अखिलेश द्विवेदी के आवासों में छापा मारा और दोनों को अपने साथ फैक्टरी लेकर लौट गई। दोनों के आवासों में साथ आये पुलिस जवानों को तैनात किया है। टीम को आशंका है कि छापेमारी के दौरान फरार हुए फैक्टरी

के निदेशक ठेकेदार के यहां आवास में शरण लिए हुए हैं।

उधर टीम को वर्ष 2016 में छापेमारी के दौरान सीज हुई जूही एलायज चालू हालत में मिली है। यहां से टीम ने भारी मात्रा में दस्तावेज बरामद किए हैं। इसी तरह तीन दशक पूर्व दिवालिया घोषित हुई वंदना स्टील के नाम पर भी कारोबार होने के अभिलेख मिले हैं। वंदना स्टील में फैक्ट्री की जगह यहां आवासीय कॉलोनी के साथ वाहन पार्किंग स्थल बना हुआ है। सूत्रों का दावा है की टीम ने वंदना स्टील से आधा ट्रक अभिलेख कब्जे में लिए हैं। टीम की यह छापेमारी कब तक चलेगी। टीम कुछ भी बताने से इनकार कर रही है। रविवार को जब टीम ठेकेदार के

टीम ने रिमझिम इस्पात के ठेकेदार पिता पुत्र के आवास पर छापा मारा

आवास पर छापेमारी कर रही थी। उस समय मीडिया के पहुंचने पर टीम भड़क उठी और कुछ भी बताने से इंकार करते हुए कहा कि आपको लिखने की छूट है लेकिन कार्यवाई में दखल नहीं दे सकते हैं।

रिमझिम इस्पात के है सात निदेशकरिमझिम इस्पात लिमिटेड के पंजीकृत सात निदेशक हैं। इनमें योगेश अग्रवाल मुख्य है। इसके अलावा संजीव कुमार, राजीव कुमार गोयल, मनीष मित्तल, मनी, भूमिका चड्ढा, संजीव कुमार अग्रवाल शामिल है। इनमें संजीव कुमार अग्रवाल सुमेरपुर के कारखाने की देखभाल करते हैं। यही यहां के मुख्य कर्ता धर्ता हैं। यह छापा पड़ते ही फैक्टरी के चोर दरवाजे से फरार होकर कस्बे में शरण लिए हुए हैं। इसको टीम लगातार तलाश रही है।

आधार लिंक्ड होगा कृषकों का रजिस्ट्रीकरण, शिविर आयोजित

कैनविज टाइम्स संवाददाता

निंदूरा बाराबंकी। विकास खंड क्षेत्र के ग्राम अटराह,निंदूरा, उधापुर समेत कोई आधा दर्जन गांवों में शनिवार को आधार लिंक फॉर्मर रजिस्ट्री शिविर आयोजित किए गए। अब सभी कृषकों की आधार लिंक्ड रजिस्ट्री तैयार होगी। जिससे योजनाओं का नियोजन, लाभार्थियों का सत्यापन, कृषि उत्पादों के विपणन आदि कार्य सुविधाजनक होंगे।

कैसे होगी फॉर्मर रजिस्ट्री-

बीटीएम सुशील कुमार ने बताया कि इसके लिए राजस्व विभाग का लेखपाल? व कृषि विभाग के कर्मचारियों को दायित्व सौंपा गया है। सहायक के रूप में पंचायती राज विभाग व ग्राम्य विकास विभाग के

शिविर दिसंबर 31 तक

कर्मचारियों को जिम्मेदारी दी गई है।जिस गांव में शिविर आयोजित होगा, वहां के किसान अपना आधार कार्ड, खतौनी और आधार कार्ड से लिंक मोबाइल लेकर शिविर में कर्मचारियों के पास जाएंगे जिसके बाद कर्मचारी किसान का आधार नंबर साइट पर डालेगा एक ओटीपी किसान के नंबर पर जाएगा, जिसको कर्मचारियों को बताने पर किसान का पूरा विवरण खुलकर आ जाएगा। फिर किसान अपनी जाति बताएगा जिसको कर्मचारी भरकर पुनः आधार नंबर डालकर ओटीपी द्वारा सत्यापित कर सुरक्षित कर देगा। इसके उपरांत यह विवरण संबंधित लेखपाल के पोर्टल पर पहुंच जाएगा। लेखपाल उस किसान की सभी खतौनियों का सत्यापन कर पुनः सुरक्षित करेंगे इस प्रकार उस किसान का गोल्डन कार्ड बन जाएगा और एक यूनिक आईडी जारी हो जाएगी। जिसके द्वारा कहीं भी कभी भी किसान का संपूर्ण जमीनी ब्यौरा देखा जा सकेगा। क्या होगा योजना से लाभ-पीएम किसान योजना के तहत किश्त प्राप्त करने में सुगमता होगी।फसली ऋण हेतु किसान क्रेडिट कार्ड एवं एग्रीकल्चर इंफ्रास्ट्रक्चर फण्ड एवं कृषि विकास हेतु अन्य ऋण प्राप्त करने में सुगमता होगी।फसल बीमा का लाभ प्राप्त करने सुगमता होगी,न्यूनतम समर्थन मूल्य योजना के तहत कृषकों का पंजीकरण ऑनलाइन माध्यम से हो सकेगा।इसके अलावा भी कई अन्य लाभ होंगे।शिविर 31 दिसंबर तक चलेगा।

हमीरपुरः रिमझिम इस्पात फैक्ट्री में 100 घंटे से आयकर विभाग की छापेमारी जारी

एजेंसी

हमीरपुर। जिले के सुमेरपुर कस्बे की औद्योगिक नगरी में संचालित रिमझिम इस्पात फैक्ट्री में पिछले सौ घंटे से आयकर विभाग की जारी छापेमारी से अब फैक्ट्री के वर्करों में मायूसी देखी जा रही है, क्योंकि छापेमारी के कारण उत्पादन पूरी तरह से ठप है। प्रबंध तंत्र में भी हड़कंप मचा हुआ है। सुमेरपुर कस्बे के रिमझिम इस्पात में बनने वाली स्टील का उपयोग हथियार बनाने वाली कंपनियां हथियारों की बॉडी में अच्छी क्वालिटी होने के इस्तेमाल करते हैं। रिवाल्वर एवं राइफल की बॉडी में इस कंपनी की स्टील उपयोग में लाई जाती हैं। इसके अलावा कंपनी का स्टील करीब एक दर्जन अन्य देशों में जाता है। जहां इससे बर्तन के साथ तमाम उपकरण बनाए जाते हैं। वर्ष 2016 में हुई कार्यवाही में 720 करोड़ रुपए की टैक्स चोरी पकड़ी गई थी और कंपनी के निदेशक योगेश अग्रवाल को 59 दिन जेल में गुजारने पड़े थे। इस बार टीम ने बड़ी कार्यवाही के संकेत दिए हैं।

कच्चा माल लेकर आने वाले ट्रकों की संख्या में हो रही बढ़ोत्तरीसुमेरपुर कस्बे में पिछले 96 घंटे से रिमझिम इस्पात में चल रही छापेमारी के कारण बाहर कच्चा माल लेकर आने वाले ट्रकों का काफिला लगातार बढ़ता जा रहा है। यह ट्रक स्क्रैप के साथ स्टील बनाने वाले रसायन आदि कच्चा माल लेकर पहुंच रहे हैं। गुरुवार को सुबह यहां बमुश्किल आधा सैकड़ा ट्रक थे। रविवार को इनकी संख्या 200 से अधिक हो गई है। इन ट्रकों में देश के अलावा विदेशों से आने वाला कच्चा माल लदा हुआ है। कंपनी के बंद होने के कारण यह अंदर नहीं दाखिल हो पा रहे हैं और छापेमारी खत्म होने का इंतजार कर रहे हैं।

देश की उन्नति के लिए बच्चों का शिक्षित होना जरूरीः आदित्य

बाराबंकी। बच्चों के लिए पढ़ाई-लिखाई, खेल-कूद जितना जरूरी है, उतना ही ज़रूरी है फिल्में देखना भी। बच्चों पर बनी फिल्मों को देखने से आपके बच्चे बिगड़ेंगे नहीं। बल्कि इन फिल्मों से तो उन्हें शिक्षा मिलेगी और बहुत कुछ सीखने को मिलगा। यह बात रविवार को फिल्म निर्माता समाजसेवक और तेलुगु फिल्मों के लोकप्रिय अभिनेता आदित्य ओम ने गांधी भवन में नौनिहालों को गर्म कपड़े बांटने के दौरान कही। श्री ओम सामाजिक कार्यों में सक्रिय रहते हैं। उनके पिता स्व. रमाशंकर सिंह वरिष्ठ आईएएस अधिकारी रहे है। 80 के दशक में बाराबंकी में एडीएम रहते हुए उन्होंने कई सराहनीय कार्य किए। ओम के निर्देशन में शिक्षा तंत्र पर आधारित हिंदी फिल्म 'मास्साब' को लेकर चर्चा में रही, जिस फिल्म ने विभिन्न राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय फिल्म समारोह में 48 पुरस्कार जीते हैं।

इस मौके पर गांधी जयन्ती समारोह ट्रस्ट के अध्यक्ष राजनाथ शर्मा, महात्मा गांधी स्पोर्टस क्लब के अध्यक्ष सलाउद्दीन किदवई, राष्ट्रीय हॉकी खिलाड़ी मुजीब अहमद, विनय कुमार सिंह, मृत्युंजय शर्मा, अहमद सईद, सत्यवान वर्मा, राजू सिंह, पाटेश्वरी प्रसाद, रणंजय शर्मा, नीरज दूबे, बराती लाल वर्मा, जलाल नईम खान, मुजीब अहमद, लवकुश आनंद आदि कई लोग मौजूद रहे।

20 साल बाद डामर हार की माइनर में आया पानी

हमीरपुर। झांसी के पारीक्षा बांध से बेतवा प्रखंड की नहरों का झांसी, जालौन व हमीरपुर जिले के कुरारा ब्लाक में जाल बिछा है, लेकिन कुरारा टेल वाला इलाका है। यहां ऊपरी जिलों में सिंचाई कार्य पूरा होने पर ही पानी आ पाता है। पिछले करीब 20 वर्ष से अधिक समय से देखा जा रहा है कि यहां हमीरपुर शाख नाम की नहर में कभी कभार ही छोटी माइनरों में पानी आ पाता है।

इधर पिछले करीब 20 साल से सूखी पड़ी डामर हार की ओर आई माइनर में ओवरफ्लो पानी बह रहा है। अचानक माइनर के उफनाने से ज्यादातर किसान फसलों में पानी भरने से परेशान हैं। माइनर में पानी न आने से किसानों ने निजी नलकूप लगवाए हैं। ताकि फसलों की समय से सिंचाई कर अच्छा उत्पादन ले सकें। माइनर सूखी रहने से इसमें कभी लगे कुलावे व गूलें भी अब खत्म हो चुकी हैं। फिलहाल ओवरफ्लो बह रही माइनर से फसल बचाने को इन दिनों ज्यादातर किसान परेशान हैं। किसानों का कहना है पानी न आने से कोई इस पर ध्यान नहीं देता है। इसकी पटरियां कमजोर हो चुकी हैं। पटरियों से रिसकर भर रहे खेतों में खड़ी फसलों को बचाने के लिए इनकी मरम्मत करने में जुटे हैं।

अभी बारिश का पानी सूखने पर कर पाए पहली जुताई डामर गांव के किसान दादी यादव ने कहा कि वर्षों बाद माइनर में पानी आया है। पटरी की मिट्टी में दरारें हैं इसी से पानी रिसकर खेत में भर रहा है। कहा अभी बारिश का पानी सूखने पर 16 बीघे खेत की पहली जुताई कर पाई है।

साढ़े तीन सौ रुपये बीघा में पानी खरीद कर किया पलेवा डामर निवासी तुलाराम उर्फ छुट्टन कुशवाहा ने बताया माइनर में कभी पानी नहीं आता है। अभी उसने अपने दो बीघा खेत का पलेवा सरसई गांव निवासी शिवबाबू के नलकूप से किया है। जिसमें प्रति बीघा साढ़े तीन सौ रुपये सिंचाई का देना पड़ा है। यहां इस नहर में कभी पानी बहता नहीं देखा है।

पानी आने से बच गया सिंचाई का पैसा डामर निवासी मान सिंह यादव नहर में पानी आने पर खुशी जाहिर करते हुए कहा कि एक साल के बलकट (ठेका) पर खेत लिया है। अभी प्राइवेट नलकूप से पलेवा कर गेहूं बो चुका है। गेहूं में पहला पानी लगाना है। नलकूप वाले चार सौ रुपये प्रति बीघा मांग रहे थे। अच्छा रहा नहर में पानी आ गया। उसकी तो मुफ्त में आसानी से फसल की सिंचाई हो जाएगी।

बीएचयू प्रीमियर लीग 2.0 क्रिकेट टूर्नामेंट के सेमीफाइनल में कांटे की टक्कर

एजेंसी

राइजिंग स्टार और फिजिकल एजुकेशन फाइनल में

वाराणसी। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के बिरला खेल मैदान में रविवार को खेले गए बीएचयू प्रीमियर लीग 2.0 क्रिकेट टूर्नामेंट के सेमीफाइनल मैच में रोमांचक मुकाबला देखने को मिला। पहले सेमीफाइनल मैच में हंटर 11 और राइजिंग स्टार के बीच कांटे की टक्कर हुई। मैच में राइजिंग स्टार ने बाजी मारी। इसके पहले हंटर 11 ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करने का साहसिक निर्णय लिया, लेकिन उनकी पारी केवल 13.5 ओवरों में 65 रन पर समाप्त हो गई। राइजिंग स्टार ने इस लक्ष्य को मात्र 7.2 ओवर में हासिल कर लिया।

पहले सेमीफाइनल मैच के मैन ऑफ द मैच बने नवनीत, जिन्होंने अपनी गेंदबाजी में कमाल दिखाते हुए 3 ओवर में केवल 6 रन देकर 4 विकेट चटकाए। दूसरे सेमीफाइनल मैच में डायनामाइट 11 और फिजिकल एजुकेशन की टीमों ने एक-दूसरे को कड़ी चुनौती दी। फिजिकल एजुकेशन ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करते हुए 14.5 ओवर में 139 रन बनाए, लेकिन डायनामाइट 11 की टीम 13.2 ओवर में महज 86 रन पर ही सिमट गई। इस मैच के मैन आफ द मैच विकास रहे, जिन्होंने 37 गेंदों में 56 रन की शानदार पारी खेली, जिसमें उन्होंने 6 छक्के और 3 चौके लगाए।

इसके पहले राज्यमंत्री डॉ दयाशंकर मिश्र 'दयालु' ने चारों टीमों के खिलाड़ियों से बतौर मुख्य अतिथि परिचय प्राप्त कर उनका उत्साह बढ़ाया। इस अवसर पर राज्यमंत्री ने कहा कि बीएचयू प्रीमियर लीग जैसे आयोजन से हमारे विश्वविद्यालय के युवाओं का शारीरिक विकास होगा। वहीं, एक समरस समाज की स्थापना में इस तरह का आयोजन महत्वपूर्ण भूमिका निभायेगा। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी खेलों पर जोर देते हुए प्रत्येक संसदीय क्षेत्र में विभिन्न प्रकार के खेलों के आयोजन को प्रोत्साहित कर रहे है। उत्तर प्रदेश सरकार प्रत्येक ब्लॉक स्तर पर एक स्टेडियम की स्थापना के लिए कृत संकल्प है। प्रदेश सरकार का जोर है कि हर एक न्याय पंचायत में कम से कम एक खेल मैदान बनाया जाए। विशिष्ट अतिथि महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डॉ रजनीश शुक्ल ने कहा कि महामना पंडित मदन मोहन मालवीय के शिक्षा चिंतन में खेलों को प्राथमिकता दी गई है। महामना देशभक्ति के साथ-साथ खेल तथा व्यायाम को सम्मान प्राप्त करने का बड़ा साधन मानते थे। विश्वविद्यालय स्तर पर छात्रों ने स्वयं की प्रेरणा से क्रिकेट के इतने बड़े आयोजन को संपादित करके अपने कार्य कुशलता तथा संगठन शक्ति का परिचय दिया है। इस अवसर पर निदेशक, आईएमएस बीएचयू प्रो. सत्यनारायण संखवार,प्रो.संतोष सिंह, प्रोफेसर विपिन कुमार आदि भी मौजूद रहे। बीएचयू प्रीमियर लीग 2.0 क्रिकेट टूर्नामेंट में कुल 32 टीमों ने भाग लिया। टूर्नामेंट में आईआईटी बीएचयू, दक्षिण कैंपस, डीएवी कॉलेज, आईएमएस, केवी बीएचयू, कृषि, वाणिज्य, सामाजिक विज्ञान और कला संकाय की टीमों ने दमदार खेल दिखाया। आयोजन सत्य नारायण सिंह के नेतृत्व में किया जा रहा है।

मार्गशीर्ष अमावस्या पर बांकेबिहारी मंदिर सहित कई मंदिरों में उमड़ा सैलाब

मथुरा। वृन्दावन में विश्वप्रसिद्ध ठा. बांके बिहारी महाराज के दर्शनों के लिए रविवार को मार्गशीर्ष अमावस्या के पावन पर्व पर श्रद्धालुओं का सैलाब उमड़ पड़ा। श्रद्धालुओं की लंबी-लंबी कतारें मंदिर के प्रवेश द्वारों पर लगी रहीं। वहीं राधारमण मंदिर, राधाबल्लभ मंदिर, राधादामोदर मंदिर, सेवाकुंज आदि में भी श्रद्धालुओं की भीड़ देखी गई। इसके साथ ही श्रद्धालुओं ने यमुना स्नान के बाद धाम की पंचकोसी परिक्रमा भी की। ठा. बांके बिहारी मंदिर की ओर जाने वाली सभी कुंज गलियों में श्रद्धालुओं की भारी भीड़ दिखाई दे रही थी। श्रद्धालुओं की भारी भीड़ के चलते प्रशासन द्वारा की गई सुरक्षा व्यवस्थाएं नाकाफी दिखाई दीं। भारी भीड़ के चलते पुराने नगर में सभी मार्गों, गलियों से लेकर चौराहे तक जाम रहे। ई-रिक्शा ने जमकर मनमाना किराया वसूला और ई-रिक्शों के बेतरतीब परिचालन से नगर में चारों ओर जाम की हालात बने रहे। वहीं दूसरी ओर चार पहिया वाहनों का भी नगर में बेरोकटोक प्रवेश जारी रहा। शहर में प्रवेश के मुहानों पर लगी पुलिस मानो मूकदर्शक बनी रही।

खानकाह आस्ताना आलिया समदिया के हजरत मुफ्ती अतहर मियां चिश्ती का इंतिकाल

औरैया। हिंदुस्तान के सुप्रसिद्ध खानकाह आस्ताना आलिया समदिया फफूंद शरीफ के हजरत सैयद मुफ्ती अतहर मियां चिश्ती का रविवार को निधन हो गया। निधन की खबर फैलते ही नगर में गम का माहौल हो गया और आसपास व अन्य जिले के हजारों लोग खानकाह में पहुंच गए और उनके अंतिम दर्शन कर जनाजे में शामिल हुए। शाम को इशा की नमाज के बाद गमगीन माहौल में उन्हें सुपुर्द ए खाक किया गया। जिनके जनाजे की अंतिम यात्रा में हजारों लोग शामिल हुए। रविवार को सुप्रसिद्ध खानकाह आस्ताना आलिया समदिया फफूंद शरीफ के मुफ्ती सैयद अतहर मियां चिश्ती का 69 वर्ष की आयु में निधन हो गया जो कई दिनों से बीमार चल रहे थे जिनके इंतिकाल की खबर फैलते ही नगर व क्षेत्र में ग़म की लहर दौड़ गयी और जनपद तथा अन्य जनपदों से भी उनके अंतिम दर्शन में शामिल होने के लिए अकीदतमंदों के आने का सिलसिला शुरू हो गया। वहीं इंतिकाल की खबर के बाद नगर पंचायत अध्यक्ष मु0 अनवर कुरैशी ने तत्काल आस्ताना आलिया पहुंच वहां के आसपास साफ सफाई की व्यवस्था का जायजा लिया और नगर पंचायत कर्मचारियों को साफ सफाई के लिए तैनात कर आस्ताना आलिया व उसके आसपास से लेकर कब्रिस्तान तक जाने वाली सड़कों की सफाई कराई जिससे जनाजे के साथ चलने वाले लोगों को किसी भी परेशानी का सामना न करना पड़े।

रंगदारी वसूलने वाले दो अभियुक्तों को किया गया गिरफ्तार

जौनपुर। जफराबाद पुलिस ने जानलेवा हमला कर मरणासन्न करने व तमन्चे के बल पर रंगदारी वसूलने वाले 02 अभियुक्तों को रविवार को गिरफ्तार किया है। इस मामले में जानकारी देते हुए अपर पुलिस अधीक्षक शहर अरविंद कुमार वर्मा ने बताया कि पुलिस अधीक्षक जौनपुर, डा0 अजय पाल शर्मा द्वारा अपराधियों की गिरफ्तारी हेतु चलाये जा रहे अभियान के क्रम में क्षेत्राधिकारी नगर देवेश कुमार सिंह के पर्यवेक्षण में जफराबाद पुलिस टीम द्वारा प्र0नि0 जय प्रकाश यादव के नेतृत्व में शुक्रवार को जेई लवकुश सिंह जल जीवन मिशन के साथ जान से मारने की नियत से हमला कर मरणासन्न करने तथा रंगदारी वसूलने के सम्बन्ध में दर्ज मुकदमे में सम्बन्धित अभियुक्त ,कुन्दन यादव पुत्र रामप्रवेश यादव नि0 सिरकोनी बहादुरपुर थाना जलालपुर व अमित कुमार पुत्र अशोक कुमार नि0 सुरहुरपुर थाना जलालपुर जौनपुर को अहमदपुर तिराहे से गिरफ्तार किया गया है। इनके कब्जे से एक लोहे की राड व मोबाइल बरामद किया गया। इन दोनों के खिलाफ जनपद सहित अन्य जनपद में कई आपराधिक मामले दर्ज हैं, दोनों को जेल भेजा जा रहा है।

भारत ने ऑस्ट्रेलियाई प्रधानमंत्री एकादश को छह विकेट से हराया

एजेंसी

कैनबरा। हर्षित राणा के (चार विकेट) के बाद शुभमन गिल (रिटायर्ड नाबाद 50), यशस्वी जायसवाल (45), नीतीश कुमार रेड्डी (42) रनों की शानदार पारियों की बदौलत भारत ने रविवार को मनुका ओवल में गुलाबी से खेले गये अभ्यास मैच में आस्ट्रेलियाई प्रधानमंत्री एकादश को छह विकेट से हरा दिया।

241 रनों के लक्ष्य का पीछा करने उतरी भारत के लिए यशस्वी जायसवाल और केएल राहुल की सलामी जोड़ी ने अच्छी शुरुआत की। इसी दौरान केएल राहुल (नाबाद 27) रन पर रिटायर्ड हुये। इसके बाद बल्लेबाजी करने आये शुभमन गिल ने जायसवाल के साथ पारी को संभाला। 17वें ओवर में चार्ली एंडरसन ने यशस्वी जायसवाल (45) को आउट कर ऑस्ट्रेलिया को पहली सफलता दिलाई। कप्तान रोहित शर्मा एक बार फिर विफल रहे और तीन रन बनाकर आउट हुये। शुभमन गिल (नाबाद 50) रन बनाकर रिटायर्ड हुये। नीतीश कुमार रेड्डी ने (42) रनों की पारी खेली। रवींद्र जाडेजा

(27) और सरफराज खान (एक) रन बनाकर आउट हुये। वॉशिंगटन सुंदर (37) रन बनाकर और देवदत्त पड़िक्कल (तीन) रन बनाकर नाबाद रहे। भारत ने 46 ओवर में पांच विकेटपर 256 रन बनाये। भारत ने यह मुकाबला छह विकेट से जीता। ऑस्ट्रेलियाई प्रधानमंत्री एकादश की ओर से चार्ली एंडरसन ने दो विकेट लिये। लॉयड पोप, मैट रेनशॉ और जैक क्लेटन ने एक-एक बल्लेबाज को आउट किया। इससे पहले आज भारतीय टीम ने आस्ट्रेलियाई प्रधानमंत्री एकादश के खिलाफ टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी करने का फैसला किया है। बल्लेबाजी करने उतरी ऑस्ट्रेलियाई टीम की शुरुआत अच्छी नहीं रही और उसने 22 के स्कोर पर अपने दो विकेट गवां दिये। मोहम्मद सिराज ने भारत को पहली सफलता मैट रेनेशॉ को आउट कर दिलाई। इस दौरन बीच में बारिश के कारण कुछ देर खेल रूका रहा। दोबारा खेल शुरु होने पर आकाश दीप ने जेडन गुडबिन (चार) को विकेटकीपर ऋषभ पंत के हाथों कैच आउट करवाया। इसके बाद जैक क्लेटन ने सैम कॉन्स्टास के साथ पारी को संभाला। दोनों बल्लेबाजों के बीच तीसरे विकेट के लिये 109 रनों की साझेदारी हुई। 23वें ओवर में हर्षित राणा ने एक ओवर में ऑस्ट्रेलिया को दो झटके दिये। हर्षित ने पहले जैक क्लेटन (40) को बोल्ड आउट किया उसके बाद ऑलिवर डेविस (शून्य) बोल्ड कर पवेलियन भेज दिया। कप्तान जेक एडवर्ड्स (एक)और सैम हार्पर (शून्य) भी हर्षित का शिकार बने। हैनो जेकब्स (60) को वॉशिंगटन सुंदर ने आउट किया। आठवें विकेट के रूप में सैम कॉन्स्टास (107) रन पर आउट हुये। उन्हें आकाशदीप ने सैनी के हाथों कैच आउट कराया। जैक निस्बेट (11) और एडन ओ'कॉनर (चार) रन बनाकर आउट हुये। ऑस्ट्रेलियाई प्रधानमंत्री एकादश 43.2 ओवर में 240 पर सिमट गई। भारत की ओर से हर्षित राणा ने चार, आकाश दीप ने दो, मोहम्मद सिराज, प्रसिद्ध कृष्णा,वॉशिंगटन सुंदर और रवींद्र जडेजा ने एक-एक बल्लेबाज को आउट किया।

इंग्लैंड ने न्यूजीलैंड को पहले टेस्ट में आठ विकेट से दी शिकस्त

एजेंसी

क्राइस्टचर्च। हैरी ब्रूक (171) ब्राइडन कार्स (छह विकेट) और जेकब बेथेल (नाबाद 50) रनों के शानदार प्रदर्शन की बदौलत इंग्लैंड ने पहले टेस्ट मैच में रविवार को न्यूजीलैंड को आठ विकेट से शिकस्त दी। इंग्लैंड की टीम ने महज 12.4 ओवर में दो विकेट पर 104 रन के लक्ष्य को हासिल कर यह जीत दर्ज की। चौथे दिन इंग्लैंड के गेंदबाजों ने न्यूजीलैंड की पूरी टीम 254 रन पर समेट दिया था। डैरिल मिचेल (84), केन विलियमसन (61) रनों की पारी खेली। रचिन रविंद्र (24), नेथन स्मिथ (21) और ग्लेन फिलिप्स (19) रन बनाकर आउट हुये। इसके बाद इंग्लैंड को जीत के लिए 104 रनों का लक्ष्य मिला था। जिसे उसने दो विकेट खोकर हासिल कर लिया। इंग्लैंड की ओर से ब्रायडन कार्स ने 19.1 ओवर में 42 रन देकर छह विकेट लिये। क्रिस वोक्स को तीन विकेट मिले। गस ऐटकिंसन ने एक बल्लेबाज को आउट किया। इस जीत के साथ ही इंग्लैंड ने सबसे कम ओवरों में

टेस्ट क्रिकेट में 100 से अधिक रनों के लक्ष्य को हासिल करने का विश्व रिकार्ड भी बना लिया है। इंग्लैंड के लिए जहां हैरी ब्रूक ने (171) रनों की शानदार शतकीय पारी खेली वहीं ब्रायडन कार्स ने पूरे मैच में 10 विकेट झटके। उन्होंने पहले पारी में 19 ओवर में 64 रन देकर चार विकेट लिए। वहीं दूसरी पारी में उन्होंने 19.1 ओवर में 42 रन देकर छह विकेट झटके। उन्हें बेहतरीन गेंदबाजी के लिए 'प्लेयर ऑफ द मैच' से नवाजा गया। इससे पहले न्यूजीलैंड ने पहली पारी में केन विलियमसन (93), कप्तान टॉम लेथम (47) और ग्लेन फिलिप्स (नाबाद 58) की शानदार पारियों की मदद से 348 रन बनाये थे। इसके बाद इंग्लैंड ने अपनी पहली पारी में हैरी ब्रूक (171), बेन स्टोक्स (80), गस ऐटकिंसन (48) और बेन डकेट (46) की बेहतरीन पारियों की मदद से499 का स्कोर खड़ा कर पहली पारी के आधार पर 151 रनों की बढ़त ली थी। न्यूजीलैंड की ओर से मैट हेनरी ने चार, नेथन स्मिथ तीन, टिम साउदी दो और विलियम ओरूर्क ने एक बल्लेबाज को आउट किया था। इंग्लैंड ने इस जीत के साथ ही तीन टेस्ट मैचों की सीरीज में 1-0 से बढ़त बना ली हैं।

ब्रैथवेट ने लगातार सर्वाधिक टेस्ट खेलने का सोबर्स का रिकॉर्ड तोड़ा

एजेंसी

किंग्सटन। वेस्टइंडीज के कप्तान क्रैग ब्रैथवेट ने बांग्लादेश के खिलाफ दूसरे टेस्ट मैच में उतरकर कैरेबियाई टीम की तरफ से लगातार सर्वाधिक मैच खेलने का गारफील्ड सोबर्स का रिकॉर्ड तोड़ दिया। ब्रैथवेट का यह लगातार 86वां टेस्ट मैच था। वेस्टइंडीज के पूर्व कप्तान सोबर्स ने 1955 से लेकर 1972 तक लगातार 85 टेस्ट मैच खेले थे। उन्होंने 1974 में अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट से संन्यास ले लिया था। अपना 96वां टेस्ट मैच खेल रहे ब्रैथवेट ने 2011 में टेस्ट क्रिकेट में पदार्पण किया था लेकिन 2014 के बाद से उन्होंने कोई टेस्ट नहीं छोड़ा है। लगातार सर्वाधिक टेस्ट मैच खेलने का विश्व रिकॉर्ड इंग्लैंड के पूर्व कप्तान एलिस्टर कुक के नाम पर दर्ज है। उन्होंने लगातार 159 टेस्ट मैच खेले थे। इस मामले में भारतीय रिकॉर्ड सुनील गावस्कर के नाम है जिन्होंने लगातार

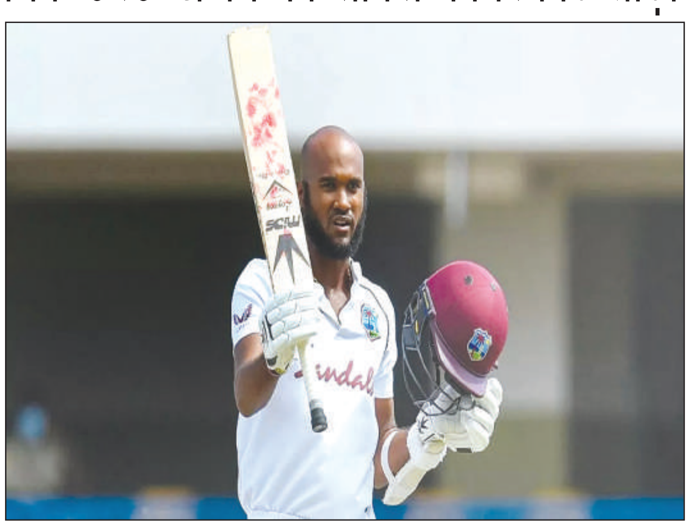

106 टेस्ट मैच खेले थे। पहले टेस्ट मैच में 201 रन से करारी हार झेलने वाले बांग्लादेश की दूसरे टेस्ट मैच में अच्छी शुरुआत नहीं रही। उसने बारिश से प्रभावित पहले दिन के खेल में टॉस जीत कर बल्लेबाजी करते हुए दो विकेट पर 69 रन बनाए हैं। खराब रोशनी के कारण जब दिन का खेल समाप्त किया गया तब शादमान इस्लाम 50 और शहादत हुसैन 12 रन पर खेल रहे थे। वेस्टइंडीज की तरफ से दोनों विकेट तेज गेंदबाज केमार रोच ने लिए हैं।

आईसीसी चेयरमैन के रूप में जय शाह ने की अपने कार्यकाल की शुरुआत

एजेंसी

दुबई। भारतीय क्रिकेट को नई ऊचाइंयों पर पहुंचाने में अहम योगदान देने के बाद जय शाह ने रविवार यानी 1 दिसंबर से अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) के चेयरमैन के रूप में अपने कार्यकाल की शुरुआत कर दी है। वह ग्रेग बार्कले का स्थान लेंगे। बार्कले नवंबर 2020 से इस पद पर थे। जय शाह इस साल अगस्त में आईसीसी के निर्विरोध चेयरमैन चुने गए थे। आईसीसी ने रविवार को इस बात की जानकारी दी। आईसीसी चेयरमैन के रूप में जय शाह ने अपने पहले वक्तव्य में अपनी प्राथमिकताओं को रेखांकित किया, जिसमें लॉस एंजिल्स 2028 ओलंपिक खेलों में क्रिकेट को शामिल करने और महिला खेल के विकास में और तेजी लाना शामिल है। शाह ने एक बयान में कहा कि मैं आईसीसी चेयरमैन की भूमिका के लिए सम्मानित महसूस कर रहा हूं और आईसीसी निदेशकों और सदस्य बोर्डों के

समर्थन और विश्वास के लिए आभारी हूं। उन्होंने कहा कि यह खेल के लिए एक रोमांचक समय है क्योंकि हम लॉस एंजिल्स 2028 ओलंपिक खेलों की तैयारी कर रहे हैं और दुनिया भर के प्रशंसकों के लिए क्रिकेट को अधिक समावेशी और आकर्षक बनाने के लिए काम कर रहे हैं। हम कई प्रारूपों के सह-अस्तित्व और महिलाओं के खेल के विकास में तेजी लाने की आवश्यकता के साथ एक महत्वपूर्ण मोड़ पर हैं। उन्होंने कहा कि क्रिकेट में वैश्विक स्तर पर अपार संभावनाएं हैं और मैं इन अवसरों का लाभ उठाने तथा खेल को नई ऊंचाइयों पर ले जाने के लिए आईसीसी टीम और सदस्य देशों के साथ मिलकर काम करने के लिए उत्सुक हूं। शाह ने पिछले चार वर्षों में आईसीसी की उपलब्धियों में बार्कले के योगदान की सहारना की। उन्होंने कहा कि मैं पिछले चार वर्षों में इस पद पर उनके नेतृत्व के लिए तथा इस अवधि के दौरान हासिल की गई उपलब्धियों के लिए ग्रेग बार्कले को भी धन्यवाद देना चाहता हूं। मैं वैश्विक मंच पर खेल की पहुंच और विकास का विस्तार करने के लिए आईसीसी टीम और सदस्य देशों के साथ मिलकर काम करने के लिए उत्सुक हूं। जय शाह क्रिकेट प्रशासन में व्यापक अनुभव रखते हैं। उन्होंने 2009 में गुजरात क्रिकेट एसोसिएशन के साथ अपना सफर शुरू किया था। अपने कार्यकाल के दौरान, उन्होंने अहमदाबाद में दुनिया के सबसे बड़े क्रिकेट स्टेडियम के विकास की देखरेख की। 2019 में शाह भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) में शामिल हुए और बीसीसीआई के सबसे युवा सचिव बने। उन्होंने एशियाई क्रिकेट परिषद के अध्यक्ष और आईसीसी की वित्त एवं वाणिज्यिक मामलों की समिति के अध्यक्ष के रूप में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

पश्चिम बंगाल ने अन्य राज्यों को आलू नहीं बेचने दिया तो मंगलवार से हड़ताल: आलू व्यापारी

एजेंसी

कोलकाता। पश्चिम बंगाल के आलू व्यापारियों ने चेतावनी दी है कि अगर राज्य सरकार दूसरे राज्यों को आलू बेचने पर प्रतिबंध नहीं हटाती है तो वे मंगलवार को हड़ताल पर चले जाएंगे। पश्चिम बंगाल ने हाल ही में स्थानीय बाजारों में कीमतों को नियंत्रित करने के प्रयास में पड़ोसी राज्यों को आलू बेचने पर प्रतिबंध फिर से लगा दिया है। स्थानीय बाजारों में आलू 35-40 रुपये प्रति किलोग्राम पर बिक रहा है। राज्य सरकार के फैसले के बाद, पुलिस ने राज्य से आलू के परिवहन को रोकने के लिए अंतर-राज्यीय सीमाओं पर निगरानी बढ़ा दी है। इसके कारण कई ट्रक सीमा पार से फंसे हुए हैं। प्रगतिशील आलू व्यापारी संघ के सचिव लालू मुखर्जी ने पीटीआई-भाषा से कहा, अगर सरकार प्रतिबंध नहीं हटाती है तो हम मंगलवार से हड़ताल पर चले जाएंगे। उन्होंने सरकार के फैसले की आलोचना करते हुए कहा, ऐसे अचानक उठाए गए कदमों से हमारा कारोबार बाधित होता है और भारी नुकसान होता है, क्योंकि हम अपनी प्रतिबद्धताएं पूरी करने में विफल रहते हैं। व्यापारियों और कोल्ड स्टोरेज एसोसिएशनों ने स्थानीय बाजारों में कीमतों को नियंत्रित करने में विफल रहने के लिए राज्य सरकार को दोषी ठहराया और इसके लिए बिचौलियों की मुनाफाखोरी को जिम्मेदार ठहराया। एक व्यापारी ने सवाल किया, कोलकाता में आलू का थोक मूल्य 27 रुपये प्रति किलो होने के बावजूद खुदरा बिक्री 35-40 रुपये पर कैसे हो रही है? ओडिशा और झारखंड जैसे पड़ोसी राज्य आलू की आपूर्ति के लिए पश्चिम बंगाल पर बहुत अधिक निर्भर हैं। प्रतिबंध लगाए जाने के बाद, इन राज्यों में भी कीमतें बढ़ गई हैं। ओडिशा के खाद्य आपूर्ति एवं उपभोक्ता कल्याण मंत्री कृष्ण चंद्र पात्रा ने शनिवार को आरोप लगाया कि ममता बनर्जी सरकार आलू की आपूर्ति को लेकर राजनीति कर रही है।

दिसंबर के पहले दिन सस्ता हुआ सोना, चांदी में कोई बदलाव नहीं

एजेंसी

नई दिल्ली। दिसंबर के पहले दिन ही घरेलू सर्राफा बाजार में आज सोने के भाव में मामूली गिरावट आई है। हालांकि चांदी के भाव में आज कोई बदलाव नहीं हुआ है। आज के कारोबार में सोना 100 रुपये से 110 रुपये प्रति 10 ग्राम तक सस्ता हुआ है। भाव में आई इस गिरावट के कारण देश के ज्यादातर सर्राफा बाजारों में 24 कैरेट सोना आज 78,150 रुपये से लेकर 78,000 रुपये प्रति 10 ग्राम के दायरे में कारोबार कर रहा है। इसी तरह 22 कैरेट सोना 71,650 रुपये से लेकर 71,500 रुपये प्रति 10 ग्राम के बीच बना हुआ है। चांदी के भाव बदलाव नहीं होने के कारण दिल्ली सर्राफा बाजार में इसकी कीमत आज भी 91,500 रुपये प्रति किलोग्राम के स्तर पर बनी हुई है। देश की राजधानी दिल्ली में 24 कैरेट सोना आज 78,150 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर कारोबार कर रहा है, जबकि 22 कैरेट सोने की कीमत 71,650 रुपये प्रति 10 ग्राम दर्ज की गई है। वहीं, देश की आर्थिक राजधानी मुंबई में 24

कैरेट सोना 78,000 रुपये प्रति 10 ग्राम और 22 कैरेट सोना 71,500 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है। इसी तरह अहमदाबाद में 24 कैरेट सोने की रिटेल कीमत 78,050 रुपये प्रति 10 ग्राम और 22 कैरेट सोने की कीमत 71,550 रुपये प्रति 10 ग्राम दर्ज की गई है। इन प्रमुख शहरों के अलावा चेन्नई में 24 कैरेट सोना आज 78,000 रुपये प्रति 10 ग्राम की कीमत पर और 22 कैरेट सोना 71,500 रुपये प्रति 10 ग्राम की कीमत पर बिक रहा है। इसी तरह कोलकाता में भी 24 कैरेट सोना 78,000 रुपये प्रति 10 ग्राम और 22 कैरेट सोना 71,500 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर कारोबार कर रहा है। लखनऊ के सर्राफा बाजार में 24 कैरेट सोना आज 78,150 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर और 22 कैरेट सोना 71,650 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है। वहीं, पटना में 24 कैरेट सोने की कीमत 78,050 रुपये प्रति 10 ग्राम हो गई है, जबकि 22 कैरेट सोना 71,550 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है। इसी तरह जयपुर में 24 कैरेट सोना 78,150 रुपये प्रति 10 ग्राम और 22 कैरेट सोना 71,650 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है।

एमएंडएम मौजूदा बिक्री नेटवर्क के जरिए ईवी बेचेगी, एक जगह उपलब्ध होंगे सभी विकल्प

एजेंसी

नयी दिल्ली। महिंद्रा एंड महिंद्रा (एमएंडएम) अपने मौजूदा बिक्री नेटवर्क के जरिये अपने इलेक्ट्रिक वाहनों को बेचेगी। एमएंडएम के एक शीर्ष अधिकारी ने कहा कि कंपनी ग्राहकों को एक जगह ही सभी विकल्प उपलब्ध कराना चाहता है। मुंबई स्थित कॉर विनिर्माता ने दो नये मॉडल ऽ बीई 6ई और एक्सईवी 9ई पेश करके अपने इलेक्ट्रिक वाहन रेंज का विस्तार किया है। एमएंडएम के ऑटो और कृषि क्षेत्रों के कार्यकारी निदेशक तथा सीईओ राजेश जेजुरिकर ने कहा, हम बिक्री चैनल को एक जैसा इसलिए रखना चाहते हैं, ताकि ग्राहक को आईसीई (आंतरिक दहन इंजन वाली कारें) और ईवी (इलेक्ट्रिक वाहन) के बीच विकल्प मिल सके। वह इस सवाल का जवाब दे रहे थे कि क्या कंपनी अपने ईवी रेंज के लिए एक अलग बिक्री नेटवर्क स्थापित करने पर भी विचार करेगी। गौरतलब है कि टाटा मोटर्स ने ईवी मॉडल बेचने के लिए एक अलग बिक्री चैनल स्थापित किया है। नए पेश किए गए ईवी मॉडल ऽ बीई 6ई और एक्सईवी 9ई की डिलीवरी अगले साल फरवरी-मार्च में शुरू होने की उम्मीद है। कंपनी इस समय बाजार में एक इलेक्ट्रिक मॉडल एक्सयूवी 400 बेचती है। ईवी के लिए अलग बिक्री नेटवर्क न होने के कारणों के बारे में विस्तार से बताते हुए, जेजुरिकर ने कहा, ड्ढग्राहकों को हमारे आउटलेट में आकर सभी उत्पाद देखने चाहिए, ताकि फिर वे चुन सकें, और कभी-कभी वे एक से अधिक (मॉडल) ले लेंगे। तो यह एक तरीका है, जिससे मांग बढ़ती है। उन्होंने कहा कि कंपनी इलेक्ट्रिक वाहनों की बिक्री और सेवा को संभालने के लिए बिक्री आउटलेट पर एक विशेष टीम बना रही है।

आरबीआई की मौद्रिक नीति समीक्षा बैठक पर रहेगी बाजार की नजर

एजेंसी

शेयर समीक्षा

मुंबई। विश्व बाजार के मिलेजुले रुख के बीच स्थानीय स्तर पर नीचे भाव पर हुई जबरदस्त लिवाली की बदौलत बीते सप्ताह करीब एक प्रतिशत मजबूत रहे घरेलू शेयर बाजार की अगले सप्ताह भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) की द्विमासिक मौद्रिक नीति समीक्षा बैठक के निर्णयों पर नजर रहेगी। बीते सप्ताह बीएसई का तीस शेयरों वाला संवेदी सूचकांक सेंसेक्स 685.68 अंक अर्थात 0.86 प्रतिशत की छलांग लगाकर सप्ताहांत पर 79802.79 अंक पर पहुंच गया। इसी तरह नेशनल स्टॉक एक्सचेंज (एनएसई) का निफ्टी 223.85 अंक यानी 0.94 प्रतिशत की तेजी के साथ 24131.10 अंक हो गया। समीक्षाधीन सप्ताह में बीएसई की दिग्गज कंपनियों के मुकाबले मझौली और छोटी कंपनियों के शेयरों में अधिक लिवाली हुई। इससे मिडकैप 1041.63 अंक अर्थात 2.31 प्रतिशत उछलकर सप्ताहांत पर 46070.85 अंक और स्मॉलकैप 2586.93 अंक यानी 4.91 प्रतिशत की मजबूती के साथ 55199.86 अंक पर बंद हुआ। विश्लेषकों के अनुसार, भू-राजनीतिक तनाव में कमी, वित्त वर्ष 2024-25 की दूसरी छमाही में सरकारी खर्च में स्थिरता की उम्मीद और एमएससीआई के संतुलित होने से बाजार में हाल के करेक्शन के बाद बीते सप्ताह कुछ राहत देखी गई। यह तेजी व्यापक थी जबकि पूंजीगत व्यय से जुड़े क्षेत्रों जैसे कि बुनियादी ढांचा, पूंजीगत उत्पाद और औद्योगिक क्षेत्रों ने नए ऑर्डर प्रवाह में तेजी की उम्मीद में बेहतर प्रदर्शन किया। मध्य-पश्चिम में तनाव कम होने की उम्मीद में सप्ताह के दौरान ब्रेंट क्रूड की कीमत में चार प्रतिशत की गिरावट आई। तेल की कीमतों में नरमी आने वाली तिमाहियों में भारतीय कंपनियों के परिचालन मापदंडों में सहायक बनी रहेगी। अच्छे मानसून, त्योहार और विवाह सीजन के कारण दूसरी छमाही की आय की संभावनाएं सकारात्मक रहने का अनुमान है। इससे चालू वित्त वर्ष की दूसरी तिमाही में कंपनियों की आय में गिरावट का प्रभाव कम हो सकता है। निवेशकों का ध्यान अमेरिका और यूरोजोन के मुद्रास्फीति संकेतकों पर भी है, जो केंद्रीय बैंकों की दिसंबर में नीति दरों को प्रभावित करेंगे। बाजार में स्थिरता अगले सप्ताह आने वाले आर्थिक आंकड़ों की स्थिरता पर निर्भर करेगी। हालांकि वित्त वर्ष 2024-25 की दूसरी तिमाही में सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) के घटकर 5.4 प्रतिशत पर रहने से बाजार पर कुछ असर पड़ने की आशंका है। दूसरी ओर, निवेशकों की अगले सप्ताह 04-06 दिसंबर को आरबीआई की मौद्रिक नीति पर होने वाली समीक्षा बैठक पर नजर रहेगी। हालांकि इस बैठक में भी नीतिगत दरों के यथावत रहने की संभावना है लेकिन चालू वित्त वर्ष की दूसरी तिमाही में धीमी वृद्धि के कारण फरवरी में ब्याज दरों में कटौती की संभावना अधिक है। अगले सेवा और विनिर्माण पीएमआई, वाहन बिक्री और अमेरिकी रोजगार के आंकड़े जैसे अन्य आर्थिक संकेतक पर भी निवेशकों की नजर रहेगी। बीते सप्ताह बाजार में तीन दिन तेजी जबकि दो दिन गिरावट रही। विश्व बाजार के मिलेजुले रुख के बीच स्थानीय स्तर पर महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की अगुवाई वाले महायुति गठबंधन की प्रचंड जीत से उत्साहित निवेशकों की चौतरफा लिवाली की बदौलत सोमवार को सेंसेक्स 992.74 अंक की तेजी के साथ 80,109.85 अंक और निफ्टी 314.65 अंक मजबूत होकर 24,221.90 अंक पर बंद हुआ।

शीर्ष 10 सबसे मूल्यवान कंपनियों में नौ का बाजार पूंजीकरण 2.29 लाख करोड़ रुपये बढ़ा

एजेंसी

नयी दिल्ली। देश की शीर्ष 10 सबसे मूल्यवान कंपनियों में नौ का कुल बाजार पूंजीकरण पिछले सप्ताह 2,29,589.86 करोड़ रुपये बढ़ गया। इसमें भारतीय जीवन बीमा निगम को सबसे अधिक लाभ हुआ। पिछले हफ्ते बीएसई सेंसेक्स 685.68 अंक या 0.86 फीसदी और एनएसई निफ्टी 223.85 अंक या 0.93 फीसदी चढ़ा। भारतीय जीवन बीमा निगम (एलआईसी) का मूल्यांकन 60,656.72 करोड़ रुपये बढ़कर 6,23,202.02 करोड़ रुपये हो गया। एचडीएफसी बैंक ने 39,513.97 करोड़ रुपये जोड़े, जिससे इसका मूल्यांकन बढ़कर 13,73,932.11 करोड़ रुपये हो गया। रिलायंस इंडस्ट्रीज का बाजार मूल्यांकन 35,860.79 करोड़ रुपये बढ़कर 17,48,991.54 करोड़ रुपये और भारती एयरटेल का बाजार मूल्यांकन 32,657.06 करोड़ रुपये बढ़कर 9,26,725.90 करोड़ रुपये हो गया। भारतीय स्टेट बैंक का बाजार मूल्यांकन 20,482 करोड़ रुपये बढ़कर 7,48,775.62 करोड़ रुपये और आईसीआईसीआई बैंक का मूल्यांकन 15,858.02 करोड़ रुपये बढ़कर 9,17,724.24 करोड़ रुपये हो गया। इस दौरान हिंदुस्तान यूनिलीवर, टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज और आईटीसी का मूल्यांकन भी बढ़ा। हालांकि, इंफोसिस का बाजार मूल्यांकन 18,477.5 करोड़ रुपये घटकर 7,71,674.33 करोड़ रुपये रह गया। रिलायंस इंडस्ट्रीज सबसे मूल्यवान घरेलू कंपनी बनी रही, जिसके बाद टीसीएस, एचडीएफसी बैंक, भारती एयरटेल, आईसीआईसीआई बैंक, इंफोसिस, भारतीय स्टेट बैंक, एलआईसी, आईटीसी और हिंदुस्तान यूनिलीवर का स्थान रहा।

एड्स को लेकर समाज में खुले मन से चर्चा करने की जरूरत : नड्डा

एजेंसी

इंदौर। केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री जगतप्रकाश नड्डा ने आज कहा कि एड्स को लेकर पहले की तुलना में काफी जागरुकता आयी है, लेकिन व्यापक जन जागरण के लिए समाज में खुले रूप से चर्चा करना आवश्यक है।

श्री नड्डा ने विश्व एड्स दिवस पर यहां एक कार्यक्रम को संबोधित किया। इस अवसर पर मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव, प्रदेश भाजपा अध्यक्ष एवं सांसद विष्णुदत्त शर्मा और अन्य जनप्रतिनिधि भी मौजूद थे। श्री नड्डा ने कहा कि एड्स किसी व्यक्ति को कई रूप से अपनी जकड़ में ले सकता है। इसलिए इस पर समाज में खुलकर चर्चा किए जाने की आवश्यकता है। तीन चार दशक की तुलना में एड्स को लेकर जागरुकता आयी है, लेकिन इसको लेकर व्यापक जन जागरुकता की जरूरत है। उस समय एड्स को लेकर मृत्यु का भय रहता था। केंद्रीय मंत्री ने कहा कि जिस तरह से इस मुद्दे पर वे चर्चा कर रहे हैं, इसी तरह से अन्य लोगों को भी समाजजनों के साथ इस पर खुलकर चर्चा करना चाहिए। इसके साथ ही एड्स रोकने के लिए हेल्दी बिहेवियर की आवश्यकता है। इसी तरह एचआईवी संक्रमित व्यक्ति को आत्मसात भी करने की जरूरत है। इस तरह के कार्य करके हम एड्स पर नियंत्रण पा सकते हैं। श्री नड्डा ने नीति निर्धारकों से कहा कि एड्स को लेकर दसवीं के बाद से स्कूली विद्यार्थियों से भी चर्चा करना चाहिए। उन्होंने कहा कि अभी तक ऐसी कोई दवा नहीं बनी है, जिसके सेवन से एड्स दूर किया जा सके। इससे पीड़ित मरीज को आजीवन दवा लेना पड़ती है और इसके सहारे वह बेहतर जीवन जी सकता है। इसलिए इस लाइलाज रोग पर नियंत्रण के लिए समाज में जागरुकता के लिए सरकार, स्वयंसेवी संगठनों और अन्य ऐसे लोगों को मिलकर कार्य करना होगा।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए मुख्यमंत्री डॉ यादव ने कहा कि राज्य सरकार ने प्रदेश में एड्स नियंत्रण के लिए 12 अगस्त से दो माह तक जागरुकता अभियान चलाया। उन्होंने भी एड्स के खिलाफ लड़ाई में जन जागरुकता पर जोर दिया और कहा कि सरकार इस दिशा में हर संभव कदम उठाएगी। इस कार्यक्रम में ऐसे युवाओं को सम्मानित किया गया, जो 'एचआईवी' संक्रमण के शिकार थे और अब स्वस्थ जीवन जी रहे हैं।

ईडी ने पोर्नोग्राफी मामले में राज कुंद्रा को सोमवार को पूछताछ के लिए बुलाया

मुंबई। प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) की टीम ने पोर्नोग्राफी मामले में फिल्म अभिनेत्री शिल्पा शेट्टी के पति राज कुंद्रा को समन जारी कर सोमवार को पूछताछ के लिए बुलाया है। राज कुंद्रा को भेजे गए ईडी के समन में कहा गया है कि कुंद्रा को सोमवार को दिन में 11 बजे मुंबई स्थित ईडी के दफ्तर में उपस्थित रहना है। ईडी सूत्रों के अनुसार पोर्नोग्राफी मामले में मुंबई पुलिस की टीम ने राज कुंद्रा के मुंबई स्थित आवास पर 29 नवंबर को छापा मारा था। ईडी ने भी इसी मामले में मुंबई के करीब 15 ठिकानों पर छापेमारी की थी। हालांकि, इस छापेमारी की अधिकृत जानकारी ईडी ने नहीं दी है, लेकिन बताया जा रहा है कि राज कुंद्रा के आवास से डिजिटल सबूत हाथ लगे हैं। इसी संदर्भ में ईडी की टीम सोमवार को राज कुंद्रा से पूछताछ करने वाली है। मुंबई पुलिस ने पोर्नोग्राफी मामले में 2021 में राज कुंद्रा के खिलाफ भारतीय दंड संहिता और सूचना प्रौद्योगिकी अधिनियम की विभिन्न धाराओं के तहत मामला दर्ज किया था। इसके बाद राज कुंद्रा को मुंबई पुलिस ने जुलाई, 2021 में गिरफ्तार किया था। राज कुंद्रा को सितंबर, 2021 में जमानत मिल गई थी।

वर्तमान स्थिति में अर्थव्यवस्था बढ़ाने के लिए समान अवसर जरूरी : राहुल

एजेंसी

नयी दिल्ली। कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष तथा लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने कहा है कि देश के आर्थिक हालात लगातार खराब हो रहे हैं और सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) की दर दो साल में सबसे निचले स्तर पर आ गई है इसलिए सबको समान अवसर देकर अर्थव्यवस्था को बढ़ाने की जरूरत है।

श्री गांधी ने कहा,भारत की जीडीपी ग्रोथ रेट दो साल में सबसे नीचे 5.4 प्रतिशत पर आ गई है। बात साफ है - भारतीय अर्थव्यवस्था तब तक तरक्की नहीं कर सकती जब तक इसका फ़ायदा सिर्फ़ गिने-चुने अरबपतियों को मिल रहा हो और किसान, मज़दूर, मध्यमवर्ग और ग़रीब तरह- तरह की आर्थिक समस्याओं से जूझ रहे हों। उन्होंने स्थिति को चिंताजनक बताया और कहा, खुदरा महंगाई दर बढ़कर 14 महीने के उच्चतम स्तर 6.21 प्रतिशत पर पहुंच गई है। पिछले साल अक्टूबर की तुलना में इस वर्ष आलू और प्याज़ की क़ीमत लगभग 50 प्रतिशत बढ़ गई है। रुपया 84.50 के सबसे निचले स्तर पर पहुंच गया है और बेरोज़गारी पहले ही 45 वर्षों का रिकॉर्ड तोड़ चुकी है। पिछले पांच सालों में मज़दूरों, कर्मचारियों और छोटे व्यापारियों की आमदनी या तो ठहर गई है या काफ़ी कम हो गई है। आमदनी कम होने से मांग में भी कमी आई है। दस लाख से कम क़ीमत वाले कारों की बिक्री में हिस्सेदारी घटकर 50 प्रतिशत से कम हो गई है, जो 2018-19 में 80 प्रतिशत थी। श्री गांधी ने कहा, सस्ते घरों की कुल बिक्री में हिस्सेदारी घटकर क़रीब 22 प्रतिशत रह गई है, जो पिछले साल 38 प्रतिशत थी। एफएमसीजी प्रोडक्ट्स की मांग पहले से ही कम होती जा रही है। कॉरपोरेट टैक्स का हिस्सा पिछले 10 सालों में सात प्रतिशत कम हुआ है जबकि इनकम टैक्स 11 प्रतिशत बढ़ा है। नोटबंदी और जीएसटी की मार से अर्थव्यवस्था में विनिर्माण का हिस्सा घटकर 50 वर्षों में सबसे कम सिर्फ़ 13 प्रतिशत रह गया है। उन्होंने कहा है कि जब वास्तविक हालात यह है।

बघेल ने किया छत्तीसगढ़ मितान क्लब का गठन

एजेंसी

रायपुर। छत्तीसगढ़ के पूर्व मुख्यमंत्री व कांग्रेस के वरिष्ठ नेता भूपेश बघेल ने एक नया संगठन छत्तीसगढ़ मितान क्लब का गठन कर पार्टी के अंदरखाने में हलचल तेज कर दी है।

वैसे इस संगठन से कांग्रेस के पदाधिकारियों ने दूरी बना रखी है। श्री बघेल ने इस संगठन की कमान अपने करीबी गिरीश देवांगन को सौंपा है। इस संगठन को गैर राजनीतिक कहना लाजिमी नही होगा क्योंकि इस संगठन से वे युवा जुड़े हैं जो पहले राजीव युवा मितान के सदस्य थे। वैसे छत्तीसगढ़ मितान क्लब के गठन से पहले बकायदा श्री बघेल ने दो दिनों तक बैठक भी आयोजित की जिसमें श्री बघेल के सलाहकार प्रदीप शर्मा, गिरीश देवांगन, सन्नी अग्रवाल, प्रमोद दुबे, राजनांदगांव की महापौर हेमा देशमुख, कई जनपद अध्यक्ष और युवक कांग्रेस के पदाधिकारी शामिल थे। छत्तीसगढ़ मितान क्लब के सदस्यों की दो दिनी बैठक गुरुवार और शुक्रवार को सरोना के सिद्धीविनायक मैरिज हॉल में हुई जिसमें कोरबा, राजनांदगांव और अन्य जगहों के करीबी 300 से अधिक युवा शामिल हुए। सभी राजीव गांधी युवा मितान क्लब के सदस्य थे। श्री बघेल ने नवगठित संगठन के सदस्यों को संबोधित करते हुए कहा कि राजीव युवा मितान क्लब का गठन हुआ था। क्लब के सदस्यों ने काम भी किया था, लेकिन अभी काम को लेकर पहचान नहीं बनी है। किसी भी संगठन की पहचान उसके कार्यकर्ताओं से होती है। सत्ता के संरक्षण में पहचान नहीं बनती है। सत्ता के बाहर रहने से आदमी संघर्ष करता है तब उसका व्यक्तित्व निखरता है। आप लोग गली-मोहल्लों में काम करेंगे तो पहचान बनेगी। बैठक में आने वाले कार्यक्रम की रूपरेखा तैयार की गई और उन्हें बताया गया कि सभी जिलों में अलग- अलग मुद्दों को लेकर संगोष्ठी का आयोजन किया जाएगा, प्रभातफ़ेरी निकाली जाएगी। क्लब की गतिविधियों को लेकर ग्रुप का गठन किया जाएगा। क्लब की अगली बैठक जल्द होगी। इस बैठक से प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष दीपक बैज, नेता प्रतिपक्ष डॉ चरणदास महंत और अन्य नेता दूर रहे क्योंकि उन्हें नए संगठन की जानकारी तक नहीं दी गई। पूर्व सीएम के नए संगठन को लेकर कांग्रेस के अंदरखाने में हलचल मची हुई है। ऐसा माना जा रहा है कि श्री बघेल कांग्रेस के पदाधिकारियों और प्रदेश कांग्रेस नेतृत्व केसाथ ताल मेल नही बिठा पा रहे हैं। वहीं प्रदेश कांग्रेस भी श्री बघेल को वह सम्मान नही दे पा रही है।

जबरन किसी का धर्मांतरण न हो, ऐसा होना ही चाहिए कानून : शेखावत

एजेंसी

जोधपुर। केंद्रीय संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत ने राजस्थान सरकार के लाए जा रहे धर्मांतरण कानून का स्वागत करते हुए ने कहा है कि जबरन किसी का भी धर्मांतरण न हो, निश्चित रूप से ऐसा कानून होना ही चाहिए। हम सब लोग राजस्थान सरकार के इस निर्णय के साथ हैं।

अपने गृह जो जोधपुर पहुंचे श्री शेखावत ने रविवार को मीडिया से बातचीत में यह बात कही। उन्होंने कहा कि प्रलोभन के आधार पर और जबरन धर्मांतरण न हो, राजस्थान में इस तरह का कानून राज्य सरकार लेकर आ रही है, वह इसका स्वागत करता हैं। कांग्रेस के इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन (ईवीएम) पर उंगली उठाने के सवालों पर श्री शेखावत ने कहा कि झारखंड और जिन सीटों पर वो जीते हैं, पहले उसका स्पष्टीकरण दे दें। यह सब खिसियानी बिल्ली खंभा नोंचे जैसी स्थिति है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, केन्द्रीय गृहमंत्री अमित शाह और मैंने भी मतगणना से पहले कहा था कि परिणाम के दिन शाम तक ईवीएम बदनाम हो जाएगी। ईवीएम को बदनामी मिल रही है। आने वाले समय में वो जब चुनाव हारेंगे, तब ईवीएम को इसी तरह से कोसेंगे। राजस्थान में उपचुनाव परिणाम को लेकर श्री शेखावत ने कहा कि उन्होंने पहले ही कहा था कि हम एक से अनेक होने वाले हैं। कांग्रेस, उसकी विचारधारा, नेतृत्व को देश-प्रदेश की जनता ने पूरी तरह से नकार दिया है। यह विभाजनकारी राजनीति करने वाले लोग हैं। इनकी चाल, चरित्र और चेहरे बेनकाब हो गए हैं। राजस्थान और देश की जनता इनको कभी अवसर नहीं देगी। प्रयागराज में आगामी जनवरी- फरवरी में आयोजित होने जा रहे महाकुम्भ पर श्री शेखावत ने कहा कि महाकुम्भ दुनिया का मनुष्यों का सबसे बड़ा समागम है। भारत की वर्ल्ड हेरिटेज इनटेंजिबल ऐसेट है। विश्व धरोहर सूची में सम्मिलित है। महाकुम्भ को लेकर उत्तरप्रदेश सरकार से हमारा कई बार विचार-विर्मश हुआ है। इस तरह की अपेक्षा है कि महाकुम्भ में 45 दिन में 45 करोड़ लोग आएंगे। हर आने वाले व्यक्ति के कम्युनिकेशन, कम्यूटेशन, सेनिटेशन और उसका एक्सपीरियंस, इन चारों चीजों को लेकर केंद्र सरकार और उत्तरप्रदेश सरकार काम कर रही है। महाकुम्भ में आने वाले श्रद्धालुओं और दुनिया के अलग-अलग कोनों से आने वाले पर्यटकों को पूरे भारत का दर्शन एक स्थान पर हो, इसको लेकर संस्कृति मंत्रालय ने बड़ी योजना का निर्माण किया है। उसको लेकर हम काम कर रहे हैं। उन्होंने सीमा सुरक्षा बल के 60वें स्थापना दिवस की बधाई देते हुए कहा कि जिनेवा कन्वेंशन के आधार पर तय हुआ था कि सेना बॉर्डर से पीछे रहेगी। उसी के अनुरूप भारत में सीमा प्रहरियों के रूप में सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ) का गठन हुआ। श्रद्धेय अटल बिहारी वाजपेयी के समय में निर्णय हुआ कि एक फोर्स, एक सीमा की रक्षा करे, तब से लेकर पाकिस्तान और बंगलादेश दोनों सीमाओं पर सीमा सुरक्षा बल देश के सबसे बड़े केंद्रीय रिजर्व पुलिस फोर्स के रूप में काम कर रही है। अपने नाम के अनुरूप सीमाओं की रक्षा एवं सुरक्षा कर इसने अद्भुत काम किया है। उन्होंने कहा कि लगता है कि पूरे विश्व भर में एकमात्र केंद्रीय रिर्जव पुलिस है, जिसके पास में जल, थल और नभ, तीनों पर काम करने की जिम्मेदारी भी है, क्षमता भी है और अनुभव भी है। श्री शेखावत ने कहा कि बीएसएफ ने 1971 की लड़ाई में, कारगिल की लड़ाई एवं जम्मू-कश्मीर में आतंकवादियों से लोहा लेते हुए अद्भुत पराक्रम का परिचय दिया है। वह सुरक्षा बल के सब जवानों से लेकर उनके महानिदेशक को बधाई देते है और हम सब लोग ऐसे महत्वपूर्ण समय में जब देश विकसित होने की दिशा में आगे बढ़ रहा है, एक नई जिम्मेदारी के एहसास के साथ में आगे बढ़े, ऐसी कामना है।

तेलंगाना मुठभेड़ में नक्सली नेता समेत सात माओवादी ढेर

मुलुगु (तेलंगाना)। छत्तीसगढ़ व तेलंगाना की सीमा पर मुलुगु जिले के इटुरनगरम वन क्षेत्र में रविवार तड़के पुलिस के साथ मुठभेड़ में एक नक्सली नेता सहित सात माओवादी मारे गए। पुलिस के अनुसार, माओवादी विरोधी दस्ते के साथ समन्वय में तेलंगाना ग्रेहाउंड्स ने जंगल में एक संयुक्त तलाशी अभियान चलाया। सुरक्षा बलों से मुठभेड़ होने पर माओवादियों ने कथित तौर पर गोलीबारी शुरू कर दी, जिसके बाद पुलिस को जवाबी कार्रवाई करनी पड़ी। इसके बाद हुई गोलीबारी में सात माओवादी मारे गये। मृतकों की पहचान नक्सली नेता कुरसम मंगू उर्फ भद्रू उर्फ पापन्ना (35), एगोलापु मल्लैया उर्फ मधु (43), मुसाकी देवल उर्फ करुणाकर (22), जय सिंह (25), किशोर (22), कामेश (23) के रूप में हुयी। पुलिस ने बताया कि घटना स्थल से दो एके–47, एक इंसास रायफल और भारी मात्रा में गोला–बारूद बरामद किए गए हैं। इलाके में सर्चिंग जारी है। मुलगु जिले के पुलिस अधीक्षक शबरी सिंह ने बताया कि जिले के चालपाका के जंगलों में माओवादियों की होने की सूचना मिली थी जिसके तहत ग्रेहंट जवानों को इस इलाके में भेजा गया था। आज सबेरे से ही ग्रेहंट फोर्स और नक्सलियों के बीच करीब एक घंटे से अधिक तक गोलीबारी होती रही। इस गोलीबारी में सात नक्सली मारे गए शव बरामद कर शिनाख्त भी की गई। मारे गए नक्सलियों में नक्सली नेता पापन्ना, मधु, मुस्की देवल, मुस्की जमुना, जयसिंग, किशोर और कमलेश शामिल हैं। पुलिस ने बताया कि घटना स्थल से दो एके–47 एक इंसास रायफल और भारी मात्रा में गोला–बारूद बरामद किए गए हैं इलाके में सर्चिंग जारी है विस्तृत विवरण की प्रतिक्षा है।

रेलवे ने पिछले दशक में की पांच लाख युवाओं की भर्ती

बिलासपुर/नयी दिल्ली। भारतीय रेलवे ने वर्ष 2014–2024 के दौरान लगभग पांच लाख से अधिक युवाओं की भर्ती की है, जो पिछले दशक के पूर्व के दशक की तुलना में 25 प्रतिशत से अधिक है। यह रेलवे द्वारा रोजगार क्षेत्र में एक बड़ी उपलब्धि है। पहली बार भारतीय रेलवे ने रोजगार कैलेंडर प्रकाशित किया है। सभी रिक्तियों की अधिसूचनाएं समयबद्ध तरीके से जारी की गईं। रोजगार कैलेंडर के तहत फरवरी 2024 में सहायक लोको पायलट (एएलपी) के 18,799 पदों के लिए अधिसूचना प्रकाशित की गई। भर्ती के लिए परीक्षा पांच दिनों तक आयोजित की गई, जिसमें 29 राज्यों के 156 शहरों में 346 केंद्र शामिल थे। यह परीक्षा तीन शिफ्टों में आयोजित की गई। कंप्यूटर आधारित टेस्ट (सीबीटी) सख्त निगरानी में आयोजित किया गया। उम्मीदवारों की प्रमाणिकता सुनिश्चित करने के लिए 92 फीसदी उपस्थित उम्मीदवारों का आधार कार्ड द्वारा सत्यापन किया गया। कुल 18,799 पदों के लिए 18.4 लाख युवाओं ने आवेदन किया। हालांकि, उपस्थित होने का प्रतिशत केवल 62 प्रतिशत था। भारतीय रेलवे की यह पहल देश में रोजगार के अवसर बढ़ाने और युवाओं को सशक्त बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

प्रवासी राजद नेत्री को नहीं दिखता है बिहार का विकास : मनीष

पटना। जनता दल यूनाईटेड (जदयू) के प्रदेश प्रवक्ता मनीष यादव ने कहा कि राष्ट्रीय जनता दल (राजद)प्रवासी राजनेत्री को बिहार का विकास दिखाई नहीं देता है। जदयू प्रवक्ता ने राजद नेत्री पर तंज कसते हुए कहा कि वो प्रवासी नेत्री केवल चुनावी मेला घूमने बिहार आती है और चुनाव के बाद अपनी जगह चली जाती हैं। उन्होंने कहा कि उन्हें चुनावी मेला घूमने के साथ–साथ एक बार सोनपुर मेला भी घूमना चाहिए और बिहार के विकास को देखना चाहिए। उन्होंने कहा कि माननीय मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के विकास कामों का हिसाब मांगने वाली राजद की प्रवासी राजनेत्री को जरा अपने माता–पिता के शासनकाल में बिहार की क्या हालत थी इस सच्चाई को भी जानना चाहिए। उन्होंने कहा कि सच्चाई तो यह है कि उनके पैतृक गांव में भी बिजली जलाने, गली–गली सड़कों का निर्माण और नालियों का निर्माण मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के शासनकाल में ही हुआ।

पेज एक का शेष

आबादी का...

दर में भारी अंतर के कारण देश की जनसंख्या में जहां भारत में उत्पन्न मत पंथों के अनुयायियों का अनुपात 88% से घटकर 83.8% रह गया है। वहीं मुस्लिम जनसंख्या का अनुपात 9.8% से बढ़कर 14.24% हो गया है। असंतुलन पर चिंता जताते हुए उन्होंने कहा था कि जनसंख्या नीति होनी चाहिए। जुलाई 2022ः फर्टिलिटी रेट 2.1 से नीचे आना खतरनाक हो सकता है भागवत ने एक साल बाद फिर कहा- एक व्यापक जनसंख्या नियंत्रण नीति की जरूरत है। जो सभी पर बराबरी से लागू होती हो। जनसंख्या असंतुलन पर हमें नजर रखनी होगी। जब सभी पर बराबरी से एक नीति लागू होगी तो किसी को भी रियायतें नहीं मिलेंगी। कुछ साल पहले फर्टिलिटी रेट 2.1 था। दुनिया की आशंकाओं से उलट हमने बेहतर किया और इसे 2 तक लेकर आए, लेकिन और नीचे आना खतरनाक हो सकता है। जुलाई 2022ः खाने और बच्चे पैदा करने का काम जानवर भी करते हैं मोहन भागवत जुलाई 2022 में कर्नाटक की श्री सत्य साईं यूनिवर्सिटी के दीक्षांत समारोह में शामिल हुए थे। इस दौरान भागवत ने कहा- जनसंख्या बढ़ाने और खाने का काम तो जानवर भी करते हैं। ये जंगल में सबसे ताकतवर रहने के लिए जरूरी है। ताकतवर ही जिंदा रहेगा, ये जंगल का कानून है। इंसानों में ऐसा नहीं है। इंसानों में जब ताकतवर दूसरे की रक्षा करता है तो ये ही इंसानियत की निशानी है।

संभल हिंसाः घटनास्थल...

रवाना हो गई। भ्रमण के बाद करीब 40 मिनट टीम ने उच्चाधिकारियों से पीडब्ल्यूडी गेस्ट हाउस में वार्ता भी की। आयोग के तीसरे सदस्य पूर्व आईएएस अधिकारी अमित मोहन प्रसाद रविवार के दौरे के दौरान मौजूद नहीं थे। अरोड़ा और जैन के साथ मुरादाबाद के मंडलायुक्त आंजनेय कुमार सिंह, पुलिस उपमहानिरीक्षक मुनिराज जी, संभल के जिलाधिकारी राजेंद्र पेंसिया और पुलिस अधीक्षक कृष्ण कुमार भी थे। संभल का दौरा पूरा होने के बाद अरविंद कुमार जैन ने मीडिया के सवालों का जवाब देते हुए कहा कि जांच जारी रहेगी, यह दो महीने तक जारी रहेगी। बता दें, आयोग को दो महीने के भीतर अपनी जांच पूरी करने का निर्देश दिया गया है।

अमेरिका को ...

महीने लग सकते हैं। एलआर का मकस कथित रिश्वत कांड की आगे की जांच के लिए सूचना हासिल करना है। लेटर रोगेटरी एक लिखित अनुरोध है, जो एक देश की अदालत किसी आपराधिक मामले की जांच या मुकदमे में मदद हासिल करने के लिए दूसरे देश की अदालत को भेजती है। दिल्ली हाईकोर्ट ने साल 2004 में पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी को इस मामले में बरी कर दिया था। उसके एक साल बाद इस मामले में हिंदुजा बंधुओं सहित बाकी आरोपियों के खिलाफ बी सभी आरोपों को खारिज कर दिया गया था। इटली के कारोबारी एवं कथित रिश्वत मामले में बिचौलिये ओत्तावियो क्वात्रोची को 2011 में एक अदालत ने बरी कर दिया था। अदालत ने सीबीआई को उनके खिलाफ मुकदमा वापस लेने की अनुमति दी थी 1980 के दशक में कांग्रेस की सरकार देश में सत्ता में थी। तब स्वीडन की कंपनी बोफोर्स के साथ 1,437 करोड़ रुपये के सौदे में 64 करोड़ रुपये की रिश्वत के आरोप लगे थे। यह सौदा 400 हॉवित्जर तोपों की आपूर्ति के लिए किया गया था, जिसने कारगिल युद्ध के दौरान भारत की विजय में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। यह मामला 2011 में बंद कर दिया गया था। हर्शमैन साल 2017 में एक सम्मेलन में भाग लेने के लिए भारत आए थे। इस दौरान वह कई मंचों पर दिखाई दिए। इस दौरान उन्होंने आरोप लगाया कि कांग्रेस सरकार ने घोटाले की जांच को पटरी से उतार दिया था। हर्शमैन ने कहा था कि वह सीबीआई के साथ जानकारी साझा करने के लिए तैयार हैं। सीबीआई ने विशेष अदालत को बताया कि हर्शमैन के खुलासे के बाद वह फिर से जांच को खोलने की योजना बना रही है।

सरकार ने प्रदेश...

जोवल ने बताया कि प्रदेश के स्वास्थ्य ढांचे को मजबूत बनाने के लिए मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ द्वारा लगातारा विशेष प्रयास किए जा रहे हैं। वर्तमान में 352 सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों (सीएचसी) से अधिक को फर्स्ट रेफरल यूनिट (एफआरयू) की सुविधाओं से लैस किया गया है। इसके अलावा 72 स्वास्थ्य इकाइयों को पहली बार सौर ऊर्जा से बिजली की आपूर्ति सुनिश्चित की गई है। यह कदम पर्यावरण संरक्षण के साथ-साथ ऊर्जा के वैकल्पिक साधनों को अपनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण प्रयास है। वहीं पिछले एक वर्ष में 10,000 से अधिक स्वास्थ्य उपकेंद्रों को बिजली की सुविधा से जोड़ा गया है, जिससे राज्य के ग्रामीण इलाकों में स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार हुआ है। इतना ही नहीं सभी जिलों में डायलिसिस सेवाएं शुरू की गई हैं, जिससे किडनी रोगियों को बड़ी राहत मिली है। साथ ही 74 जिलों में सीटी स्कैन की सुविधा भी उपलब्ध कराई गई है, जिससे रोगियों को सस्ती और सुलभ जांच सेवाएं प्राप्त हो रही हैं। प्रदेश भर में स्वास्थ्य सेवाओं की गुणवत्ता को मान्यता दिलाने के लिए विशेष अभियान चलाया जा रहा है। इसके तहत अब तक 800 से अधिक स्वास्थ्य इकाइयों को राष्ट्रीय गुणवत्ता आश्वासन मानक (एनक्यूएएस) प्रमाण पत्र प्राप्त हुआ है। यह प्रमाण पत्र प्रदेश की स्वास्थ्य सेवाओं की गुणवत्ता में सुधार का प्रमाण है। इसके साथ ही ऑन-कॉल निजी विशेषज्ञों और स्त्री रोग विशेषज्ञों की व्यवस्था ने ग्रामीण के साथ शहरी क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवाओं को बेहतर बनाया है। प्रदेश में प्रधानमंत्री आयुष्मान भारत स्वास्थ्य इन्फ्रास्ट्रक्चर मिशन के तहत 4,892 करोड़ रुपये की परियोजनाओं को अमलीजामा पहनाया गया है। इनमें 515 ब्लॉक पब्लिक हेल्थ यूनिट, 75 जिला स्तर पर इंटीग्रेटेड पब्लिक हेल्थ लैब और 74 क्रिटिकल केयर हॉस्पिटल ब्लॉक का निर्माण शामिल है। अब तक 2,334 परियोजनाओं में से 2,100 पर काम शुरू हो चुका है और 1,321 परियोजनाएं पूरी हो चुकी हैं। भवन निर्माण के तहत 1,670 परियोजनाएं शुरू हुईं, जिनमें से 1,173 पूरी हो चुकी हैं। योगी सरकार के इन प्रयासों से न केवल स्वास्थ्य सेवाओं की गुणवत्ता में सुधार हुआ है, बल्कि आम जनता को बेहतर और किफायती इलाज का लाभ भी मिल रहा है। मरीजों को विशेषज्ञ डॉक्टरों की सेवाएं सुगम तरीके से उपलब्ध कराई जा रही हैं। योगी सरकार के इन सुधारात्मक कदमों ने उत्तर प्रदेश को स्वास्थ्य के क्षेत्र में 'बीमारू प्रदेश' की छवि से उबारकर 'स्वस्थ प्रदेश' बना दिया है। प्रदेशवासियों को अब सुगम, सस्ता और गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाएं मिल रही हैं, जो न केवल प्रदेश के विकास में मील का पत्थर साबित हो रही हैं बल्कि देश के अन्य राज्यों के लिए मॉडल बनकर उभरी हैं।

पूर्व नौकरशाहों ने मोदी...

समूह हिंदू हितों का प्रतिनिधित्व करने का दावा कर रहे हैं और यह साबित करने के लिए मध्ययुगीन मस्जिदों तथा दरगाहों के पुरातात्विक सर्वेक्षण की मांग कर रहे हैं कि इन स्थलों पर पहले मंदिर हुआ करते थे। समूह ने कहा, ''पूजा स्थल अधिनियम के स्पष्ट प्रावधानों के बावजूद अदालतें भी ऐसी मांगों पर अनुचित तत्परता और जल्दबाजी के साथ प्रतिक्रिया देती नजर आती हैं। दो हस्ताक्षरकर्ताओं ने पत्र के विषय-वस्तु की पुष्टि की। समूह ने कहा, ''उदाहरण के लिए, एक स्थानीय अदालत का सूफी संत ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती की 12वीं सदी की दरगाह के सर्वेक्षण का आदेश देना अकल्पनीय लगता है, जो एशिया में न केवल मुसलमानों के लिए, बल्कि उन सभी भारतीयों के लिए सबसे पवित्र सूफी स्थलों में से एक है, जिन्हें हमारी समन्वयवादी और बहुलवादी परंपराओं पर गर्व है। उसने कहा, ''यह विचार ही हास्यास्पद है कि एक भिक्षुक संत, एक फकीर, जो भारतीय उपमहाद्वीप के अद्वितीय सूफी/भक्ति आंदोलन का एक अभिन्न अंग था और करुणा, सहिष्णुता एवं सद्भाव का प्रतीक था, अपने अधिकार का दावा करने के लिए किसी भी मंदिर को नष्ट कर सकता था। हिंदू सेना के राष्ट्रीय अध्यक्ष विष्णु गुप्ता द्वारा यह दावा करने के बाद कि दरगाह मूल रूप से एक शिव मंदिर थी, अजमेर की एक सिविल अदालत ने 27 नवंबर को अजमेर दरगाह समिति, केंद्रीय अल्पसंख्यक मामलों के मंत्रालय और भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआई) को नोटिस जारी किया था।

'वक्फ की कितनी...

मुख्यमंत्री सच्चर समिति की रिपोर्ट में दी गई जानकारी की सत्यता की विस्तार से जांच करें और इस समिति को विस्तार से जानकारी दें। तत्कालीन संप्रग सरकार ने भारत में मुस्लिम समुदाय की सामाजिक, आर्थिक और शैक्षणिक स्थिति का अध्ययन करने के लिए 2005 में सच्चर समिति का गठन किया था।

'यूपी के गौरव' का...

यादव को बाधामुक्त वातावरण के सृजन हेतु विशेष पुरस्कार प्रदान किया जाएगा। गैर-व्यावसायिक श्रेणी में डॉ. कौशिकी सिंह (लखनऊ) और व्यावसायिक श्रेणी में राम किशन गुप्ता (कानपुर नगर) को दिव्यांगजन के हित में किए गए उत्कृष्ट कार्यों के लिए पुरस्कृत किया जाएगा। सर्वश्रेष्ठ दिव्यांग कर्मचारी के रूप में संतबली चौधरी (गोरखपुर), अरुण कुमार अग्रवाल (लखनऊ) और गोपाल कृष्ण त्रिपाठी (कानपुर नगर) को सम्मानित किया जाएगा। पुनर्वास सेवाओं में योगदान के लिए नई सुबह संस्था (वाराणसी) और सर्वश्रेष्ठ नवीन अनुसंधान के लिए जन विकास समिति (वाराणसी) को पुरस्कृत किया जाएगा। प्रेरणास्रोत श्रेणी में मानवेन्द्र प्रताप सिंह (लखनऊ), मुकेश मिश्रा (लखनऊ) और स्वामी प्रताप सिंह (आगरा) को सम्मानित किया जाएगा। इसके साथ ही सृजनशील दिव्यांग बालिका के रूप में कु. दिव्यांशी कसौधन (गोरखपुर) और सर्वश्रेष्ठ दिव्यांग खिलाड़ी के रूप में महिला श्रेणी में कु. प्रगति केसरवानी (लखनऊ) व पुरुष श्रेणी में दीपेन्द्र सिंह (सम्भल) को पुरस्कृत किया जाएगा। सर्वश्रेष्ठ अधिकारी के रूप में लक्ष्मीशंकर जायसवाल, प्रधानाचार्य, स्पर्श राजकीय दृष्टिबाधित बालक इण्टर कालेज (गोरखपुर) और सर्वश्रेष्ठ कर्मचारी के रूप में प्रशान्त कुमार, वरिष्ठ सहायक, कार्यालय जिला दिव्यांगजन सशक्तीकरण अधिकारी (कानपुर नगर) को सम्मानित किया जाएगा। सृजनशील दिव्यांग पुरुष श्रेणी में अनूप कुमार सिंह (कुशीनगर) और महिला श्रेणी में रीतू पटेल (वाराणसी) को भी पुरस्कार प्रदान किए जाएंगे।

दहेज प्रथा पर प्रहार...

लिए 25 हजार रुपये का पैकेज दिया गया है। सीएम योगी ने सामूहिक विवाह के कार्यक्रम को एक ऐसा उत्सव बताया जिसमें मुख्यमंत्री खुद आए और साथ में कई जनप्रतिनिधि भी। उन्होंने कहा कि किसी एक शादी में उनके लिए समय निकाल पाना मुश्किल होता है लेकिन आज का यह आयोजन ऐसा शुभ व उत्सवी है जहां मुख्यमंत्री और कई जनप्रतिनिधि आए हैं। उन्होंने कहा कि आज विवाह बंधन में जुड़ने वाले युवा और उनके अभिभावक इसलिए भी भाग्यशाली हैं कि उनके विवाह का निमंत्रण स्वयं प्रशासन दे रहा है। समाज कल्याण विभाग की तरफ से आयोजित इस समारोह में 1200 जोड़े विवाह के पावन बंधन में बंधे। नवयुगलों में हिंदू, मुस्लिम दोनों शामिल रहे। सभी नव दम्पतियों को आशीर्वाद देते हुए मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने उनके सुखमय और मंगलमय जीवन की कामना की। इस अवसर पर उन्होंने मंच से दस नवयुगलों को उपहार-शगुन किट भेंट किया। उपहार देने के दौरान मुख्यमंत्री ने जोड़ों से आत्मीय संवाद भी किया। मंच पर जोड़ों को आशीर्वाद देने के अलावा मुख्यमंत्री कार्यक्रम स्थल के मुख्य मंडप में भी गए। मंडप की व्यवस्थाओं का जायजा लेने के साथ उन्होंने नवयुगलों और उनके अभिभावकों को विवाह की शुभकामनाएं दीं। मंडप में मुख्यमंत्री की नजर जब वहां बराती बनकर आए कुछ बच्चों पर पड़ी तो वह मुस्कुरा उठे। उन्होंने उन्हें आशीर्वाद के साथ चॉकलेट दिया। मुख्यमंत्री सामूहिक विवाह समारोह को महापौर डॉ. मंगलेश श्रीवास्तव, चिल्लूपार के विधायक राजेश त्रिपाठी और पिपराइच के विधायक महेंद्रपाल सिंह ने भी संबोधित किया। कार्यक्रम में विधायक फतेह बहादुर सिंह, विपिन सिंह, डॉ. विमलेश पासवान, प्रदीप शुक्ल, सरवन निषाद, भाजपा के जिलाध्यक्ष युधिष्ठिर सिंह, महानगर अध्यक्ष राजेश गुप्ता आदि भी उपस्थित रहे।

उत्तराखंड की योग नीति से बदलेगी राज्य की तस्वीर

कैनविज टाइम्स संवाददाता

- राज्य के युवाओं को रोजगार व आर्थिकी को मिलेगी नई उड़ान
- उत्तराखंड को एक वैश्विक योग हब बनाने की पहल: डॉ विजय

देहरादून। देवभूमि उत्तराखंड अपनी धार्मिक और प्राकृतिक विरासत के लिए पूरी दुनिया में प्रसिद्ध है। अब राज्य योग और वैलनेस के क्षेत्र में वैश्विक केंद्र बनाने की ओर अग्रसर है। योग नीति के तहत सरकार योग प्रशिक्षकों को प्रशिक्षित करने के लिए विशेष योजनाएं लाएगी। छोटे योग संस्थानों को सब्सिडी देने और योग ग्रामों की स्थापना के लिए भूमि आवंटन करने की योजना है। सरकार की इस योजना से उत्तराखंड पूरी दुनिया को स्वास्थ्य जीवन की राह दिखाने के योग्य बन सकेगाअपर सचिव आयुष विभाग डॉ. विजय कुमार जोगदंडे ने बताया कि इस पहल का उद्देश्य स्थानीय युवाओं को प्रशिक्षित कर रोजगार देना और उत्तराखंड को एक वैश्विक योग हब बनाना है। उन्होंने कहा कि जल्द ही इसे लागू किया जाएगा। योग नीति के तहत योग प्रशिक्षकों को प्रशिक्षित करने के लिए विशेष योजनाएं लाई जाएंगी। छोटे योग संस्थानों को सब्सिडी दी जाएगी और योग ग्रामों की स्थापना के लिए भूमि आवंटन होगा।इस संबंध में योगाचार्य डॉ. विपिन जोशी के अनुसार उत्तराखंड के प्राकृतिक सौंदर्य को योग और वैलनेस से जोड़ना इस पहल की सबसे बड़ी खासियत होगी। राज्य की पहाड़ियां, नदियां और जंगल एक प्राकृतिक चिकित्सा केंद्र की तरह काम करते हैं। यहां योग का अभ्यास करना आत्मा और प्रकृति के बीच गहरा संबंध बनाता है। योग परंपरा से आधुनिकता तकयोग भारत की वह प्राचीन विद्या है, जो आज वैश्विक आंदोलन बन चुकी है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में इसे अंतरराष्ट्रीय पहचान मिली है। इसी

कड़ी में उत्तराखंड सरकार ने योग नीति तैयार करने का निर्णय लिया है। इस नीति का उद्देश्य न केवल योग को संरक्षित करना है, बल्कि इसे रोजगार और आर्थिक प्रगति का माध्यम भी बनाना है। योग सिर्प व्यायाम नहीं बल्कि मानसिक शुद्धि का माध्यम ऋषिकेश के परमार्थ निकेतन, गीता भवन और अन्य योग आश्रम हर साल हजारों विदेशी पर्यटकों को आकर्षित करते हैं। परमार्थ निकेतन में पिछले 14 वर्ष से योग शिक्षा देने वाली गंगा नंदिनी का कहना है कि योग केवल शारीरिक व्यायाम नहीं है, यह मानसिक और आत्मिक शुद्धि का माध्यम है। अगर सरकार इसे सही दिशा में बढ़ाती है तो उत्तराखंड दुनिया के योग मानचित्र पर एक महत्वपूर्ण स्थान बना सकता है। उत्तराखंड की योग ब्रांड एंबेसेडर दिलराज प्रीत कौर का कहना है कि सरकार की इस नीति से राज्य के युवाओं को नए अवसर मिलेंगे। यह नीति केवल योग का प्रचार नहीं करेगी, बल्कि युवाओं को आर्थिक रूप से सशक्त बनाएगी। उत्तराखंड को एक नई पहचान मिलेगी और यहां के लोग भी विकास का हिस्सा बनेंगे। यह पहल न केवल देश के लोगों को बल्कि विदेशी सैलानियों को भी आकर्षित करेगी। उल्लेखनीय है कि देवभूमि से योगभूमि बनाने की यह योजना राज्य के भविष्य की दिशा बदलने वाला कदम हो सकता है। योग, वैलनेस और आयुर्वेद के इस समन्वय से उत्तराखंड न केवल आर्थिक रूप से सशक्त होगा, बल्कि दुनियाभर में एक नई पहचान भी बनाएगा। देवभूमि अब योगभूमि बनने की ओर कदम बढ़ा चुकी है। यह भारत की प्राचीन विरासत और आधुनिक पहचान का संगम है।

फिल्म निर्माता व निर्देशक प्रकाश झा ने मुख्यमंत्री से की भेंट

कैनविज टाइम्स संवाददाता

देहरादून। फिल्म निर्माता व निर्देशक प्रकाश झा ने रविवार को मुख्यमंत्री आवास कार्यालय पर मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी से भेंट की। इस अवसर दोनों के बीच उत्तराखंड में फ़िल्म निर्माण की नई संभावनाओं के साथ राज्य फ़िल्म नीति के विभिन्न बिंदुओं पर विस्तृत चर्चा हुई।इस मौके पर मुख्यमंत्री धामी ने सरकार की ओर से लगातार किए जा रहे प्रयासों की जानकारी प्रकाश झा को दी। प्रकाश झा ने उत्तराखंड सरकार के प्रयासों की प्रशंसा करते हुए कहा कि नई फिल्म नीति स्वागतयोग्य है। उत्तराखंड की नई फिल्म नीति से स्थानीय फिल्म निर्माण और शूटिंग को और बढ़ावा मिलेगा।

बदरीनाथ धाम में कपाट बंद होने के बाद मास्टर प्लान के कार्यों ने पकड़ी रफ्तार

- जिलाधिकारी ने किया बदरीनाथ धाम में मास्टर प्लान कार्यों का स्थलीय निरीक्षण

कैनविज टाइम्स संवाददाता

गोपेश्वर। तीर्थयात्रियों की सुविधा के लिए बदरीनाथ महायोजना का काम शीतकाल में भी लगातार जारी है। बदरीनाथ धाम में कपाट बंद होने के बाद मास्टर प्लान के कार्यों ने रफ्तार पकड़ ली है। इस सीजन में बर्फबारी से पहले अधिकांश कार्यों को पूरा करने का लक्ष्य रखा गया है।

जिलाधिकारी चमोली संदीप तिवारी ने रविवार को बदरीनाथ पहुंच कर मास्टर प्लान के अंतर्गत संचालित पुनर्निर्माण कार्यों और आगामी यात्रा व्यवस्थाओं को लेकर स्थलीय निरीक्षण किया। उन्होंने कार्यदायी संस्थाओं को संचालित कार्यों को गुणवत्ता और समयबद्धता के साथ तेजी से पूर्ण करने के निर्देश दिए। बदरीनाथ धाम में सिविक एमिनिटी सेंटर, टीआईसी और अराइवल प्लाजा का कार्य लगभग 90 प्रतिशत तक पूर्ण हो गया है। मौके पर दरवाजे, खिड़की एवं फिनिशिंग का काम चल रहा है। टीआईसी और सिविक एमिनिटी सेंटर का कार्य इसी सीजन में पूर्ण करने का लक्ष्य रखा गया है। कार्यदायी संस्था के अधिकारियों ने बताया कि बदरीनाथ मास्टर प्लान के पहले चरण में शेष नेत्र और बद्रीश झील का सौंदर्यीकरण, लूप रोड, बीआरओ बाईपास सहित स्ट्रीट लाइट लगाने का काम पूरा हो गया है। तीर्थ पुरोहित आवास निर्माण कार्यों का निरीक्षण करते हुए जिलाधिकारी ने पर्याप्त संख्या में श्रमिक लगाते हुए इस दिसम्बर तक निर्माण कार्यों को पूरा करने के निर्देश दिए। रिवर फ्रंट कार्यों के निरीक्षण दौरान जिलाधिकारी ने पीआईयू और जल संस्थान को निर्देशित किया कि अगली यात्रा सीजन से पहले क्षतिग्रस्त सीवर लाइन को ठीक किया जाए। सीवर लाइन बनाने के लिए शीघ्र आगंणन तैयार करें, वहीं पर्यटन अधिकारी को प्रसाद योजना के तहत एनपीसीसी के माध्यम से बनाए जा रहे टीआईसी भवन में यात्रा व्यवस्थाओं से जुड़े विभागों के कार्यालय और आवास के लिए कक्ष आवंटन के लिए प्रस्ताव तैयार करने के निर्देश दिए। शीतकालीन प्रवास स्थलों पर यात्रा व्यवस्थाओं को लेकर जिलाधिकारी ने पांडुकेश्वर में योग ध्यान बद्री मंदिर, कुबेर मंदिर में यात्रा व्यवस्थाओं का निरीक्षण भी किया और शीतकालीन यात्रा के लिए श्रद्धालुओं एवं पर्यटकों के लिए समुचित व्यवस्थाएं सुनिश्चित करने पर जोर दिया। इस दौरान जिलाधिकारी ने स्थानीय लोगों से शीतकालीन प्रवास स्थलों पर आने वाले श्रद्धालुओं के बारे में जानकारी भी ली। बदरीनाथ धाम में निरीक्षण के दौरान पीआईयू के अधिशासी अभियंता योगेश मनराल, अधिशासी अभियंता जल संस्थान एसके श्रीवास्तव, जिला पर्यटन अधिकारी बृजेन्द्र पांडेय, बदरीनाथ नगर पंचायत के अधिशासी अधिकारी सुनील पुरोहित सहित कार्यदायी संस्थाओं के अन्य अधिकारी मौजूद थे।

सरस्वती शिशु विद्या मंदिर में आयोजित किया गया मातृ सम्मेलन

- परिवार एक ऐसी कड़ी है जो भविष्य का निर्माता है: कुसुम कंडवाल

कैनविज टाइम्स संवाददाता

ऋषिकेश। आदर्श नगर स्थित जातीराम अग्रवाल सरस्वती शिशु विद्या मंदिर में मातृ सम्मेलन कार्यक्रम आयोजित किया गया।

रविवार को आयोजित कार्यक्रम का शुभारंभ, महिला आयोग की अध्यक्ष कुसुम कंडवाल जी, व्यवस्थापक दीपक तायल, प्रधानाचार्य गुरु प्रसाद उनियाल तथा कोषाध्यक्ष नवल किशोर कपूर ने दीप प्रज्वलन कर किया। कार्यक्रम की मुख्य वक्ता कुसुम कंडवाल ने कहा कि बच्चा राष्ट्र की धरोहर है। बच्चों को संस्कारी सिर्फ मातृशक्ति ही बना सकती हैं। बच्चे समाज व देश के लिए महत्वपूर्ण होते हैं। शिशु मंदिर में अध्ययनरत भैया बहनों का संस्कार पक्ष

बहुत ही मजबूत होता है। परिवार एक ऐसी कड़ी है जो भविष्य का निर्माता है तथा उन्होंने कहा कि आज के समाज में सभी माताओं को जागरूक होने की आवश्यकता है। नवल किशोर कपूर ने कहा कि भैया बहनों को अच्छे संस्कार देना आवश्यक है। इस कार्यक्रम में अभिभावकों ने भी सुझाव दिए व उन्होंने कहा कि विद्यालय हर प्रकार से नई टेक्नोलॉजी को लेते हुए बच्चों को हर फील्ड में एक्टिविटी कराकर उन्हें भविष्य के लिए तैयार कर रहे हैं। मातृ सम्मेलन में अनेक बिंदुओं जैसे समय, स्वच्छता,अनुशासन, भोजन, गृह कार्य पुस्तकों का रखरखाव, न्यू टेक्नोलॉजी आदि बिंदुओं पर चर्चा की गई। विद्यालय के प्रधानाचार्य गुरु प्रसाद उनियाल ने शिक्षा के साथ संस्कार का होना आवश्यक है। अंत में कार्यक्रम अध्यक्ष डॉ. दीपक तायल ने सभी मातृशक्ति का धन्यवाद करते हुए कहा की भैया बहिनों के सर्वांगीण विकास के लिए माता की भूमिका सर्वोपरि है। इस कार्यक्रम में भैया बहिनों की माताएं तथा भाग सिंह, संतोष डबराल, मनमोहन शाह, निशा शर्मा, संजू शर्मा, प्रियंका, स्वाति शर्मा आदि उपस्थित रहे।

राष्ट्रीय सफाई कर्मचारी आयोग को शक्तिशाली बनाने की मांग

चंडीगढ़। अनुसूचित जाति जनजाति एवं पिछड़ा वर्ग कल्याण एसोसिएशन और दलित रक्षा संगठन ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को पत्र लिखकर मांग की कि है राष्ट्रीय सफाई कर्मचारी आयोग को राष्ट्रीय अनुसूचित जाति आयोग की तरह शक्तिशाली बनाया जाए तथा इसे संवैधानिक दर्जा दिया जाए। एसोसिएशन के अध्यक्ष भगत राज तिसावर और दल के अध्यक्ष नरेंद्र चौधरी ने रविवार को जारी संयुक्त बयान में कहा कि सफाई कर्मचारी आयोग चंडीगढ़ के सफाई कर्मचारियों की समस्याओं को लेकर पिछले लगभग डेढ़ साल में चार दौरे कर चुका है लेकिन समस्याएं बनी हुई हैं। सफाई कर्मचारी संगठन अनुकंपा के आधार पर दिहाड़ी पर लगे सैकड़ों कर्मचारियों को नियमित करने, सफाई कर्मचारियों की नियमित पदों पर भर्ती करने की मांग कर रहे हैं और सेवानिवृत्त कर्मचारियों को दो-दो साल पेंशन न देने, आउट्सोर्स कर्मचारियों को हर महीने की सात तारीख को वेतन न देने के खिलाफ शिकायत करते आ रहे हैं लेकिन चंडीगढ़ नगर निगम के कानों पर जूं तक नहीं रेंगती।

नेपाल-चीन सीमा से सटे पिथौरागढ़ में एक समर्पित आयोग अध्यक्ष का पांच दिवसीय दौरा 3 से

कैनविज टाइम्स संवाददाता

देहरादून। नेपाल-चीन सीमा से लेकर जनपद पिथौरागढ़ के ग्रामीण क्षेत्रों में अन्य पिछड़ा वर्ग के सर्वेक्षण और संबंधित विषयों पर विचार-विमर्श के उद्देश्य से एकल सदस्यीय समर्पित आयोग के अध्यक्ष व हाई कोर्ट के भूतपूर्व न्यायमूर्ति बीएस वर्मा 3 दिसंबर से 7 दिसंबर तक विभिन्न क्षेत्रों का भ्रमण करेंगे। इस दौरान वे ब्लाक स्तरीय अधिकारियों, निर्वाचित प्रतिनिधियों और स्थानीय जनसामान्य के साथ गहन विमर्श करने के साथ जनसुनवाई भी करेंगे। अपर जिलाधिकारी डॉ. शिवकुमार बरनवाल ने बताया कि 3 दिसंबर को सेनि न्यायमूर्ति बीएस वर्मा प्रातः 8:30 बजे चम्पावत से प्रस्थान करेंगे। मध्यान्ह 12:00 बजे विकास खंड गंगोलीहाट पहुंचेंगे और यहां एक बैठक में प्रतिभाग करेंगे। बैठक के बाद गंगोलीहाट से बेरीनाग के लिए प्रस्थान करेंगे। अपराह्न 2 बजे बेरीनाग में बैठक में शामिल होंगे और बैठक समाप्ति के बाद चौकोड़ी में रात्रि विश्राम करेंगे। एडीएम बरनवाल ने बताया कि आयोग अध्यक्ष 4 दिसंबर (बुधवार) को प्रातः 8:30 बजे चौकोड़ी से मुनस्यारी के लिए प्रस्थान करेंगे। अपराह्न 1:00 बजे मुनस्यारी में आयोजित बैठक में प्रतिभाग करेंगे। बैठक के बाद मुनस्यारी में रात्रि विश्राम करेंगे। 5 दिसंबर (गुरुवार) को प्रातः 9 बजे धारचूला के लिए प्रस्थान करेंगे। अपराह्न 1:00 बजे धारचूला की बैठक में भाग लेंगे। धारचूला में रात्रि विश्राम के बाद 6 दिसंबर (शुक्रवार) को प्रातः 11:30 बजे धारचूला से डीडीहाट के लिए प्रस्थान करेंगे। अपराह्न 2:00 बजे डीडीहाट में एक बैठक में प्रतिभाग करेंगे। बैठक समाप्ति के बाद पिथौरागढ़ मुख्यालय के लिए प्रस्थान करेंगे और वहां रात्रि विश्राम करेंगे। 7 दिसंबर (शनिवार) को जिला पंचायत सभागार पिथौरागढ़ में प्रातः 11:00 बजे से बैठक में भाग लेंगे। इसके उपरांत चम्पावत के लिए प्रस्थान करेंगे।बरनवाल ने बताया कि यह भ्रमण ग्रामीण स्थानीय निकायों में अन्य पिछड़ा वर्ग के सर्वेक्षण और संबंधित मुद्दों पर केंद्रित है। इस दौरान सेवि न्यायमूर्ति विभिन्न पक्षों से सीधे संवाद करेंगे और जमीनी स्तर की समस्याओं को समझने का प्रयास करेंगे। जनसुनवाई में स्थानीय नागरिकों की समस्याओं पर भी विचार किया जाएगा।सेनि न्यायमूर्ति वर्मा को प्रोटोकॉल के अनुरूप सुविधाएं और सुरक्षा के लिए संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिए गए हैं।

गांवों में पांडव नृत्य में बढ़ने लगी रौनक, गांवों में पहुंच रहे प्रवासी

कैनविज टाइम्स संवाददाता

गोपेश्वर। चमोली जिले के पोखरी विकासखंड के चन्द्रशिला पट्टी के ग्राम पंचायत पाटी में 20 साल बाद ढोल धमाऊ की थाप पर पांडव नृत्य का आयोजन किया जा रहा है। धार्मिक आयोजन से क्षेत्र भक्तिमय बना हुआ है। पांडव नृत्य को देखने बड़ी संख्या में धियाणियां (शादी हुई बेटियां) और प्रवासी गांव लौट रहें हैं, जिससे गांवों में रौनक बनी हुई है। पांडव समिति के संरक्षक प्रेम नेगी ने बताया कि पांडव नृत्य में नारायण सिंह, राजपाल सिंह, राजबर सिंह, लक्ष्मण सिंह, कुंवर सिंह, दलीपसिंह, शिशुपाल सिंह पांडवों के विभिन्न पात्रों की भूमिका अदा कर रहे हैं। उन्होंने बताया कि पांडव नृत्य के दौरान गैंडा कौथिक सहित अनेक परम्पराओं का

निर्वहन किया जाएगा, जिसमें तीन दिसम्बर को दुर्योधन वध के साथ चार दिसंबर को वेदक मन्त्रों के साथ पांडव नृत्य का समापन किया जाएगा। उन्होंने तमाम क्षेत्रवासियों से पांडव नृत्य में आने की अपील की। उन्होंने कहा कि यह हमारी प्राचीन परम्परा है इसको संजोए रखना हम सबका कर्तव्य है। इस अवसर पर पंडित मधुसूदन किमोठी, जगदीश लाल, जजमु लाल, रघुनाथ सिंह, बचन सिंह, विजय सिंह, रणजीत सिंह, गजेन्द्र सिंह, जयपाल सिंह आदि मौजूद थे।

अंतरराष्ट्रीय व्यापार मेला में वंचित कारीगरों के स्टॉल में लगभग 5.85 करोड़ रुपये की रिकॉर्ड बिक्री

नई दिल्ली। 43वें भारतीय अंतरराष्ट्रीय व्यापार मेला (आईआईटीएफ)-2024 में सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय के सहयोग से वंचित कारीगरों द्वारा लगाए गए स्टॉल पर पूरे समय में अप्रत्याशित संख्या में आगंतुक आए और लगभग 5.85 करोड़ रुपये की रिकॉर्ड बिक्री हुई। केंद्रीय सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री डॉ. वीरेंद्र कुमार ने 15 नवंबर को भारत मंडपम नई दिल्ली में आयोजित मंत्रालय के मंडप का उद्घाटन किया। प्रदर्शनी में शामिल उत्पादों में रेडिमेड गारमेंट, हस्तशिल्प, ब्लॉक प्रिंटिंग, जरी सिल्क, चंदेरी साड़ियाँ, कृत्रिम आभूषण, चमड़े की वस्तुएँ, कढ़ाई, फुटवियर, ऊनी वस्तुएँ, हस्तनिर्मित बैग, बेंत और बांस, अचार, नमकीन, अगरबत्ती और इत्र, राजस्थानी मोजरी और खिलौने आदि शामिल रहे।

संस्कार परिवार सनातन जनजागरण पदयात्रा संपन्न, जयघोष से गूंजा देहरादून

- टपकेश्वर महादेव से शुरू हुई पदयात्रा लक्ष्मण सिद्ध व कालू सिद्ध पौराणिक स्थल होकर निकली

कैनविज टाइम्स संवाददाता

देहरादून। सनातन जनजागरण पदयात्रा संस्कार परिवार देहरादून के तत्वावधान में नगर के पौराणिक स्थल श्रीटपकेश्वर महादेव मंदिर और माता वैष्णो देवी गुफा योग मंदिर से रविवार सुबह अध्यात्मिक यात्रा की शुरुआत हो गई। सनातन धर्म के मूल संस्कारों और परंपराओं को फिर से जीवंत करने का संकल्प लिया। रविवार को सूरज की पहली किरणों के साथ टपकेश्वर महादेव के पवित्र प्रांगण में श्रद्धालुओं की विशेष पूजा-अर्चना के दौरान मंत्रोच्चार और घंटियों की ध्वनि से पूरा वातावरण भक्तिमय हो उठा। आचार्य डॉ. बिपिन जोशी के

सानिध्य में सनातन धर्म के जयघोष ने भक्तों को नई ऊर्जा और प्रेरणा प्रदान की। उन्होंने जनसमूह को संबोधित करते हुए कहा कि हिंदू समाज को जाति और संप्रदाय की दीवारों को तोड़कर एकजुट होना होगा। हमें अपने बच्चों को आधुनिक सुख-सुविधाओं से अधिक संस्कारों की शिक्षा देनी होगी। सनातन धर्म सभा में आचार्य जोशी ने धर्म और परंपराओं के महत्व को रेखांकित किया। उन्होंने कहा कि हमारी परंपराएं ही हमारी पहचान हैं। यदि हम अपने रीति-रिवाजों को भूल गए तो आने वाली पीढ़ियां अपनी जड़ों से कट जाएंगी।यह सनातन जनजागरण पदयात्रा टपकेश्वर मंदिर से शुरू होकर श्रीधोलेश्वर महादेव मंदिर, माडू सिद्ध मंदिर, बालाजी मंदिर झांझरा और मानक सिद्ध मंदिर होते हुए प्रेमनगर स्थित सनातन धर्म मंदिर पहुंची। प्रेमनगर बाजार में पदयात्रा के दौरान लोगों ने श्रद्धा और उल्लास के साथ इसमें भाग लिया। इस पदयात्रा को सफल बनाने में धार्मिक और सामाजिक संगठनों ने भी बढ़-चढ़कर भाग लिया। श्रीमहाकाल सेवा समिति, महिला भजन कीर्तन मंडलियों और अन्य संस्थाओं ने आयोजन को भव्य स्वरूप दिया। उत्तराखंड सरकार की राज्यमंत्री मधु भट्ट, आचार्य डॉ. मथुरा दत्त जोशी, भगवती जोशी, गुलशन मालिक व अन्य गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति ने कार्यक्रम की गरिमा बढ़ाई। लक्ष्मण सिद्ध और कालू सिद्ध जैसे पौराणिक स्थलों से होते हुए बाद टपकेश्वर महादेव मंदिर में पदयात्रा का समापन हुआ। यहां श्रद्धालुओं ने सामूहिक आरती की। उल्लेखनीय है कि पदयात्रा केवल धार्मिक आयोजन नहीं थी, बल्कि एक सशक्त जनजागरण अभियान थी। इसने एक बार फिर यह सिद्ध किया कि सनातन धर्म केवल एक आस्था नहीं, बल्कि जीवन जीने की पद्धति है। इस यात्रा ने देहरादून में धार्मिक चेतना की नई लहर उत्पन्न की, जो आने वाले समय में समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाएगी।

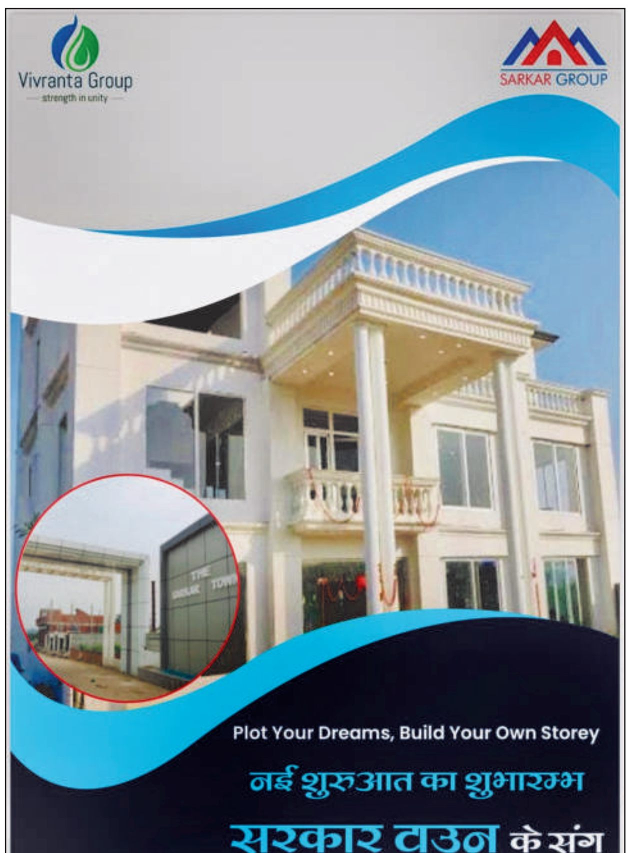

चेयरमैन एवं प्रधान सम्पादक - राकेश कुमार पाण्डेय कार्यकारी सम्पादक* - अरशद सईद खान स्टेट हेड - संदीप मिश्रा
स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक राकेश कुमार पाण्डेय द्वारा सरस्वती प्रिंटर्स वाटर वर्क्स रोड ऐशबाग, लखनऊ से मुद्रित एवं सी-46, कृष टॉवर, विभूति खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ, पिन-226010 से प्रकाशित। * इस अंक में प्रकाशित सभी समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पीआरबी एक्ट के तहत उत्तरदायी।
समस्त विवाद लखनऊ न्यायालय क्षेत्र के ही अधीन होंगे। फोन नं। 0522-4249333 फैक्स नं.- 4249333 e-mail : info@kanwhizztimes.com RNI NO - UPHIN/2012/42063